राम-श्याम की झाँकी

लेखक : गोलोकवासी श्रीसुदर्शन सिंह 'चक्र'

गोलोकवासी श्री चक्र जी महाराज

आध्यात्म जगत् की विभूति, भारतीय संस्कृति के प्रेणेता, नवीन परिवेश में सदाचार एवं नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापक साहित्य साधना से विज्ञ आज के आलोक वाही पथ प्रदर्शक साहित्यकार एवं बहु आयामी प्रतिभा के धनी महान तत्व चिन्तक के रूप में श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र' जी का नाम भारत में कौन नही जानता।

प्रेम लक्षणा पराभक्ति के अन्तर्गत सम्बन्धात्मक धारणा का आश्रय कर अनिकेत, अपरिग्रही व सरल स्वभावी सन्त “श्री सुदर्शन सिंह चक्र” श्री आंजनेय को अपना अग्रज व श्रीकृष्ण कन्हाई को प्रिय अनुज मानते थे। आप गीता प्रेस गोरखपुर की “कल्याण” के मनस्वी कहानीकार तथा मथुरा से प्रकाशित “श्रीकृष्ण सन्देश” पत्रिका के यशस्वी सम्पादक थे। शुकतीर्थ में हनुमद्धाम की संस्थापना भी आपकी ही कृपा का फल है। इन्होनें अपने जीवन में अनेकों पुस्तकें विलक्षण शैली में लिखी है। जो आध्यात्मिक ज्ञान में मणि के रूप में विख्यात है। इनकी ही 'मानस के अनुष्ठान' सद्य फल प्रदाता एवम् भक्तों की कामना पूर्ति करने वाली पुस्तिका हैं।

—प्रकाशक

राम-श्यामकी झाँकी

लेखक

गोलोकवासी श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र'

श्री सुदर्शन सिंह "चक्र"

(एक परिचय)

हनुमद्धाम के संस्थापक, उन्नायक और निर्देशक श्री सुदर्शन सिंह 'चक्र' का जन्म सकलडीहा रेलवे स्टेशन से 6 कि.मी. दूरी पर स्थित ग्राम भेहलटा तहसील चन्दौली जिला वाराणसी (उ.प्र.) में क्षत्रीय (रघुवंशीय) परिवार में दिनांक 14 नवम्बर सन् 1911 ई. (कार्तिक शुक्ल गोपाष्टमी) को हुआ था। आपको हिन्दी, संस्कृत, गुजराती और बंगला भाषा का उत्कृष्ट ज्ञान था। जन्मजात अक्खड़ स्वभाव और फक्कड़ व्यक्तित्व ने इन्हें अनिकेत अपरिग्रही, एकान्तप्रिय एवं जगत् से निरपेक्ष बना दिया था। इन्हीं दिनों देश में गाँधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम की लहर चरमोत्कर्ष पर थी, देश प्रेम की पुनीत भावना से प्रभावित नवयुवक चक्रजी का मानस उद्वेलित हो उठा और स्वाधीनता के असहयोग आन्दोलन में खुलकर भाग लेने लगे। इस क्रम में कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1933 में गाँधी-इर्विन समझौते के समय जूनागढ़ शिविर में मंत्री रूप में जब आप पं. शान्तनुबिहारी द्विवेदी (सन्यास के बाद अनन्त श्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती) से अनन्य मित्रता की डोर में बँधे कि राष्ट्र भक्ति भगवद् भक्ति में परिवर्तित हो गई। 1936 में आप वृन्दावन आकर भगवद्साधना करने लगे। 1937 से 1941 तक मेरठ की पत्रिका 'संकीर्तन' का सम्पादन किया। फिर 'मानसमणि' रामवन सतना (म.प्र.) के सम्पादक के साथ-साथ गीताप्रेस, गोरखपुर की प्रमुख पत्रिका 'कल्याण' के यशस्वी सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार ने कल्याण के कई विशेषांक के सम्पादन में श्री सुदर्शनसिंह का सहयोग लिया, जिनमें कुछ हैं–नारी अंक, हिन्दू-संस्कृति अंक, भक्त चरितांक, बालकांक, सन्तवाणी अंक, सत्कथा-अंक, तीर्थांक, मानवता-अंक, भवगन्नाम-महिमा और प्रार्थना-अंक, धर्मांक, श्री रामवचनामृतांक इत्यादि। कल्याण के मासिक अंकों में आपकी लिखी कहानी नियमित छपती थी जिनमें लेखक के नाम में केवल 'चक्र' लिखा होता था। आप जीवन पर्यन्त आध्यात्मिक ग्रन्थों के लेखन में व्यस्त रहे। पौराणिक उपन्यास लेखन में आप सिद्धहस्त थे। जितनी अधिक संख्या में आपने हिन्दी में पौराणिक उपन्यास लिखे हैं, इतनी संख्या में और किसी ने नहीं लिखा है। आप द्वारा लिखी गई पुस्तकों में प्रमुख हैं–जरठ जटायु, महात्मा बाली, श्रीरामचरितमानस में विवेकी विभीषण, श्रीरामचरितमानस में सुमंत्र, श्री भगवन्नाम संकीर्तन, दिव्य दशमी, मानस-मंदाकिनी (तीन खण्डों में), विधाता विश्वामित्र, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ, श्री हनुमान चरित्र, देवर्षि नारद, शत्रुघ्न कुमार की आत्मकथा, माता सुमित्रा, रामवन, नव-निर्झरिणी, अष्टदल,

नूतन-नवरत्न, जीवन निर्माण, प्रभु आवत, मानस के अनुष्ठान, राक्षस राज, साधन सोपान, मानस के मंगलाचरण, भगवान वासुदेव, श्री द्वारिकाधीश, पार्थसारथि, नन्दनन्दन, आंजनेय की आत्मकथा, हमारी संस्कृति, राम-श्याम की झाँकी (दो खण्डों में), सखाओं के कन्हैया, श्याम का स्वभाव, हमारे धर्मग्रन्थ, कर्म रहस्य, साध्य और साधन, कन्हाई, शिव चरित्र, मजेदार कहानियाँ, कल्कि-अवतार या कलयुग का अन्त, भगवान् वामन, गोलोक एक परिवार, श्री कृष्ण पंचशील सर्वरूप, उन्मादिनी यशोदा, शिव स्मरण, हमारे अवतार एवं देवी-देवता, हिन्दुओं के तीर्थ स्थान, ज्ञान गंगा भक्ति भागीरथी, नवधा भक्ति, दस महाव्रत, सांस्कृति कहानियाँ (12 खण्डों में), प्रेरक प्रसंग, मधु बिन्दु और ज्योति कण, पंचगीत, पुराण-विज्ञान और रहस्य, रामचरित मानस में पंचायती राज्य, वीणा के तार, पर्वोत्सव विवरण, अमृत पुत्र, पलक झपकते-वे मिलेंगे, श्री रामचरित (चार खण्डों में), रत्रजनों की दृष्टि में, बालकृष्ण और आपकी चर्या इत्यादि। आपने निम्न पुस्तकों का भी सम्पादन किया है–हरि लीला, भागवत् परिचय, श्रीमद्भागवत महापुराण (पदच्छेद, अन्वय एवं हिन्दी शब्दार्थ टीका सहित)।

निरन्तर साहित्य साधना में रत रहने वाले श्री चक्र जी ने सर्वदा शास्त्रीय सिद्धान्तों को ही सर्वोच्च माना। आप अध्यात्म-ज्ञान के मणी के रूप में लब्धप्रतिष्ठित होते हुए भी होमयोपैथ, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अच्छे जानकार थे। आप ज्योतिष के भी अप्रतिम मर्मज्ञ थे।

बहु आयामी व्यक्तित्व के ;धनी श्रीचक्र जी ने दिनांक 25 सितम्बर सन् 1989 एकादशी तिथि को गोलोक धाम की ओर प्रयाण किया।

पाँच भौतिक शरीर द्वारा हमसे परोक्ष होने पर उनकी कृपा प्रत्यक्ष रूप में हनुमद्धाम के विकास में सम्बल है। उनकी अन्तस्थ कल्पना से प्रकटित साहित्य सरिता निरन्तर इस महापुरुष (श्रीचक्र जी) का यशोगान करती हुई प्रवाहित होती रहेगी।

—x—

अपनी बात

मैं सन् १९५१ ई० में रामवनसे लगभग १० दिनोंके लिये वृन्दावन आया था। उस समय अनन्तश्री स्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजी महाराज वृन्दावनमें ही विराजमान थे। उनके समीप पहुँचा तो उन्होंने कहा–'श्रीहरिबाबाजी महाराज एक वर्ष तक श्रीमद्भागवत सुनने वाले हैं। तुम चाहो तो इसमें सम्मिलित हो सकते हो।'

कथा के प्रारम्भ होनेमें लगभग २०–२५ दिनोंकी देर थी। मैं वृन्दावनसे प्रयाग जाकर जाड़ेके लिए अपने वस्त्र उठा लाया और वृन्दावन ही रहने लगा। यह कथा सन् १९५१ के कार्तिक मासमें प्रारम्भ हुई और सन् १९५२ ई० में विजयादशमीको पूर्ण हुई। विजयादशमीको ही कथा पूर्ण करके श्रीहरिबाबाजी महाराज, श्रीस्वामीजी महाराज अपने कार्यक्रमोंके अनुसार दूसरे स्थानों पर चले गये और मुझे कल्याणके बालकाङ्कके लिए गोरखपुर जाना पड़ा।

बहुत पवित्र था यह श्रीमद्भागवतकी कथाका सम्पूर्ण वर्ष। क्योंकि श्रीहरिबाबाजी महाराजने विजयादशमीको ही बाहर जाने का निश्चय कर लिया था, पीछेकी लगभग डेढ़–दो महीनेकी कथा प्रात:काल और सायंकाल दोनों समय हुई थी, अन्यथा प्रारम्भ महीनों में कथाका समय सायंकाल ही था। अनेक लोग नियमपूर्वक इस कथाका श्रवण करते थे। अपने रहन–सहन, खान–पान सबके लिये उन्होंने विशेष संयम स्वीकार किये थे। अनेक साधकोंके जीवनमें यह समय स्मरणीय बन गया। इसमें उन्हें श्रीमद्भागवतका सम्यक् अध्ययन तो प्राप्त ही हुआ, अध्यात्मके क्षेत्रमें बहुत अधिक प्रकाश मिला।

मैं उन दिनों प्रात:काल यमुना–स्नान करता था और शीतके दिनों को छोड़कर सायंकाल यमुना–स्नान करके वहीं किनारे बैठ जाता था। अकस्मात् एक दिन ब्रजराजकुमारने कृपा की। उनकी एक झाँकी मनमें आयी। लौटकर मैंने उसे लिपिबद्ध कर लिया। मनमें आया, ऐसे झाँकियोंकी एक माला पूरी हो जाती तो कितना अच्छा रहता। पता नहीं क्यों, मुझमें किसी प्रकारका अधिकार न होनेपर भी मैया यशोदाका लाड़ला प्रारम्भसे ही मेरा पक्षपात करता रहा है। उसने झाँकियाँ देनी प्रारम्भ कीं। कभी–कभी दो या तीन झाँकियाँ एक साथ प्राप्त हो जाती थीं। मैंने उन झाँकियोंको लिपिबद्ध कर लिया।

ये झाँकियाँ माला पूरी होने पर स्वयं ही जैसे आयीं थीं उनका आना वैसे ही बन्द हो गया। इन्हें मैंने एक कापीमें लिपिबद्ध किया था। गोरखपुर गीतावाटिका

पहुँचनेपर भाईशिवनाथजी दुबेने इन्हें देखा और उन्होंने ही इनको परमपूज्य बाबाको (अनन्त श्रीस्वामी चक्रधरजी महाराजको) दिखलाया। बाबाको ये इतनी प्रिय लगीं कि उन्होंने इसको दुबेजीसे टाइप करवा लिया। टाइपकी चार प्रतियाँ हुईं जिनमें से एक मुझे देकर मूल पाण्डुलिपिको और टाइपकी हुई प्रतियोंको भी उन्होंने अपने प्रिय जनोंमें वितरित् कर दिया। जहाँ तक मुझे स्मरण है, दुबेजी को, श्रीभाईजीको, श्रीचिम्मनलालजी गोस्वामीजीको ये प्रतियाँ उन्होंने दीं। एक प्रति और किसे दी, यह मुझे स्मरण नहीं है।

पूज्य बाबाने आदेश दिया कि मैं इन झाँकियोंको प्रकाशित न करवाऊँ। जब ये कल्याणमें प्रकाशित होने लगीं, उन्होंने मुझे उलाहना दिया-'तुमने मेरा आदेश नहीं माना।'

मैंने हँसकर उनसे कहा था-'आप स्वयं ही अपने आदेशको भंग करें तो मैं क्या कर सकता था? आपने झाँकियोंकी प्रति श्रीभाईजीको दे दी। यह तनिक भी नहीं सोचा कि भाईजी और चाहे जो कुछ हों, 'कल्याण' के सम्पादक हैं और एक सम्पादक अपने पत्रके लिये कोई ऐसी रचना पा ले जो उसे रुचती हो तो उसे पत्रमें देनेसे अपनेको रोक नहीं सकता। भाईजीने मुझसे पूछा नहीं था। मुझसे पूछनेकी आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि वे स्वयं ही कहते थे-'आपकी रचनायें मैं अपनी ही मानता हूँ।' बाबाने यह सुनकर सन्तोष कर लिया था।

इस प्रकार ये झाँकियाँ कल्याणके साधारण अंकोंमें लिखी जानेके कई वर्ष बाद प्रकाशित हुई।

बीचमें एक बार भाई गजानन्दजी सरावगीने इनको पुस्तकाकार प्रकाशित करना चाहा था। मैंने श्रीभाईजी से पूछा था। भाईजीका उत्तर आया-'इन्हें गीताप्रेस ही प्रकाशित करेगा।' लेकिन ऐसा अवसर नहीं आ सका। अब श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवासंघने प्रकाशनकी योजना बना ली है। आशा है, झाँकियोंकी दूसरी पुस्तक "सखाओंका कन्हैया" (अप्रकाशित) और कल्याणमें निकली कहानियोंका संग्रह भी क्रमश: प्रकाशित होगा।

राजगंग पुर | सुदर्शन सिंह

११ सितम्बर, १९७५

अणुक्रमाणिका

संख्या	झाँकी	पृष्ठ
१.	पलनेमें	१
२.	सहायता	२
३.	सहारा	३
४.	उत्सुकता	४
५.	निरीक्षण	५
६.	स्नान	७
७.	अध्ययन	८
८.	संकोचमें	९
९.	गायन	११
१०.	नित्यबन्धु	१२
११.	खीझ	१३
१२.	कलेऊ	१४
१३.	खेल	१६
१४.	हँसी	१७
१५.	क्रोध	१८
१६.	दुग्धपान	२०
१७.	कछुआ भी, मछली भी	२१
१८.	भोजन	२२
१९.	रूठा दाऊ	२३
२०.	निर्माण	२४
२१.	उलझन	२६
२२.	दो देवता	२७
२३.	भेंट	२८
२४.	दौड़	३०
२५.	शयन	३१
२६.	विनोद	३२
२७.	आनन्दकन्द	३४
२८.	शिक्षण	३५
२९.	रूठा कन्हाई	३६
३०.	झाँ	३८

संख्या	झाँकी	पृष्ठ
३१.	सत्प्रयत्न	३९
३२.	परिचय	४०
३३.	गोपाल	४२
३४.	भ्रातृप्रेम	४३
३५.	गोष्ठशायी	४४
३६.	निद्रालु	४६
३७.	गो-दोहन	४७
३८.	साहसी	४८
३९.	नटखट	५०
४०.	उत्सुकता	५१
४१.	रेणुक्रीड़ा	५२
४२.	कीचड़में	५३
४३.	माखनचोरी	५५
४४.	दादाको बुलाऊँ ?	५६
४५.	प्रागल्भ्य	५८
४६.	पावस-नृत्य	५९
४७.	मैंने कृपा की	६०
४८.	वस्त्र धारण	६१
४९.	गाय ब्यायी	६३
५०.	जागरण	६४
५१.	वनकी ओर	६५
५२.	उपहार	६६
५३.	शृंगार	६८
५४.	प्रेम	६९
५५.	स्वत्व	७०
५६.	उलाहना	७२
५७.	स्नेहाश्रय	७३
५८.	बाल-विनोद	७४
५९.	चंचल	७५
६०.	ऊँघ	७७
६१.	मल्लयुद्ध	७८
६२.	भोला श्याम	७९
६३.	मानद	८०
६४.	छाक आयी	८२
६५.	आँख-मिचौनी	८३
६६.	आँधी आयी	८५

संख्या	झाँकी	पृष्ठ
६७.	अपनी धुनमें	८६
६८.	मनुहार	८७
६९.	लहालोट	८८
७०.	सेवा	८९
७१.	भूख	९१
७२.	अभियोग	९२
७३.	मिलन	९४
७४.	श्याम पहले जगा .	९५
७५.	संकल्प	९६
७६.	करुणा	९८
७७.	डाँट पड़ी	९९
७८.	विश्राम	१००
७९.	ऐश्वर्य	१०१
८०.	अन्वेषण	१०३
८१.	तारक-दर्शन	१०४
८२.	गो-सेवक	१०५
८३.	पूजन	१०६
८४.	कर्मयोगी	१०८
८५.	झगड़ा	१०९
८६.	वर्षामें	१११
८७.	निर्भय	११२
८८.	उत्सव	११३
८९.	मैं रोऊँगा	११५
९०.	विवशता	११७
९१.	दधिदान	११८
९२.	वृक्षपर	१२०
९३.	तितली	१२१
९४.	काली नहीं, सफेद	१२२
९५.	मान	१२४
९६.	रीझ	१२५
९७.	दीनबन्धु	१२७
९८.	जन्मतिथि	१२८
९९.	व्रजका राजा	१२९
१००.	प्यास	१३१
१०१.	फल-संचय	१३२
१०२.	अभ्यास	१३४

संख्या	झाँकी	पृष्ठ
१०३.	दादा कहाँ है ?	१३५
१०४.	फिसलन	१३६
१०५.	अब क्या हो ?	१३८
१०६.	दयामय	१३९
१०७.	अभिन्न	१४०
१०८.	वर्षगाँठ	१४२
१०९.	दाऊ और कनूँ	१४३
११०.	हप्प!	१४७
१११.	ऊँची नाक	१४८
११२.	दूध पिला दे	१५०
११३.	नटखट	१५१
११४.	प्रतिबिम्ब-शृंगार	१५३
११५.	कृकलास ?	१५५
११६.	अनुकरण	१५७
११७.	तेरा घर है तो धो!	१५८
११८.	वेणी-बन्धन	१६०
११९.	पूजा	१६२
१२०.	शपथ	१६४
१२१.	बोध	१६७
१२२.	तिलक	१६८
१२३.	तुझे लूँगा	१७०
१२४.	यह उपहार	१७२
१२५.	धृष्टता	१७३
१२६.	पद्वी-वितरण	१७४
१२७.	आकांक्षा-पूर्ति	१७६
१२८.	ऊँघ	१७७
१२९.	ज्ञान	१७८
१३०.	विवाद	१८०
१३१.	विशाल	१८२
१३२.	अर्जुन	१८४
१३३.	ऋषभ	१८५
१३४.	देवप्रस्थ	१८६
१३५.	तेजस्वी	१८८
१३६.	अंशु	१८९
१३७.	तोक रूठ गया है	१९०
१३८.	भद्र	१९२

राम-श्याम की झाँकी

(पहला भाग)

१-पलनेमें

'उठ! तल!' दिगम्बर स्वर्णगौर छोटा-सा दाऊ अपने छोटे भाईका पलना पकड़कर खड़ा है। वह समझ नहीं पाता कि क्यों उसका यह अनुज उसके साथ खेलने नहीं चल सकता। बार-बार अपने हाथसे छोटे भाई का हाथ छूता है और अपनी तोतली बोलीमें उससे उठकर चलने और खेलनेको कहता है।

कटिमें मणिजटित नन्हें-नन्हें घुँघरुओंकी मेखला, चरणोंमें नूपुर, हाथोंमें पतले कंकण, वक्षपर छोटे मुक्ताओंकी माला, नेत्रोंमें अञ्जन और भालपर घिरी घुँघराली अलकों के मध्य एक भ्रमर-शिशु-सा कज्जल का बिन्दु-दाऊ पलनेसे टिका खड़ा है। एक हाथसे उसने पलना पकड़ रखा है। उसकी दृष्टि पलनेमें लेटे अपने छोटे भाईपर ही है।

अत्यन्त सुकोमल, दूधके फेन जैसे उजले आस्तरणपर नीलसुन्दर चित पड़ा है। अपने छोटे-छोटे चरणोंसे शरीरपर पड़ा झीना पीताम्बर ऐंताने हटा दिया है इसने। बार-बार चरण उछाल रहा है और दोनों नन्हें हाथ उठा रहा है। अपना दन्तहीन छोटा-सा मुख बार-बार खोलकर किलक रहा है और देख रहा है स्थिर दृष्टिसे दाऊके भालपर लगे कज्जल बिन्दुको। दोनों हाथोंसे उस नन्हें बिन्दुको पकड़ लेना चाहता है।

'तल!' दाऊ झुक गया है पलनेपर। उसका मुख छोटे भाईके मुखके पास आ गया है। नन्हें कोमल श्यामके कर कभी उसके नेत्र, कभी भाल, कभी नासिका छूते हैं और कभी अलकोंमें वे पतली अँगुलियाँ उलझती हैं। किलक रहा है वह सुकुमार! यह मुख, यह कज्जलबिन्दु उसके इतने पास आ गया? उसके लिये वह बिन्दु भी हाथोंमें ले लेने योग्य कोई वस्तु ही है, किंतु अभी उसके हाथ कहाँ ठीक काम करते हैं। उसकी नन्हीं अँगुलियाँ कहाँ कोई वस्तु उठा पाती हैं।

'अरे, छोड़।' अभीसे यह चपल नटखट है। बड़े भाईकी अलकें मुट्ठीमें आ गयी हैं इसके, और अब यह उन्हें खींचता किलक रहा है। दाऊ सिर झुकाये जा रहा है।

'क्यों रे, तू दादा के केश खींचता है?' मैयाने हँसकर दाऊकी अलकें अपने लालकी मुट्ठी खोलकर छुड़ा दीं।

'उठ!' यह केश खींचे या नाक नोचे है अत्यन्तप्रिय। दाऊ इसके साथ खेलना चाहता है। इसे छोड़कर कहीं जाते नहीं बनता उससे और इससे ही अपने बड़े भाईके बिना कहाँ रहा जाता है। दाऊ पलने के पाससे हट जाय तो अभी रोने लगेगा।

'यह अभी नहीं जायगा। तू यहीं इसके साथ खेल!' मैया हँस रही है; परन्तु दाऊको यह बात ठीक लगती है। यह नहीं चलता तो दाऊ ही इसके पाठ बैठेगा। वह दोनों हाथों पलना पकड़कर उस पर चढ़ रहा है।

२-सहायता

'मैं उतारूँ? रो मत।' दाऊ अपने छोटे भाईकी सहायता करने आया है। अपने छोटे-छोटे हाथ बढ़ाकर उसे अपनी गोदमें लेना चाहता है।

कन्हाई अभी घुटनोंके बल सरकता है। आज पहली बार द्वारकी चौखट पार करनेका उसने प्रयत्न किया। किसी प्रकार देहलीपर चढ़ तो गया हाथ और पेटके बल, किंतु उतरा नहीं जाता। चौखटपर बैठा बड़े असमञ्जसमें पड़ा है। कभी हाथ झुकाता है, कभी पैर लटकाता है। बहुत ऊँची है यह चौखट उसके लिये।

जब कोई बस न चला, मोहन ऊँ-ऊँ करने लगा। वह घरमें और बाहर भी देखता जाता है-कोई क्यों उसकी सहायता करने नहीं आता? अब यह उसका बड़ा भाई आ गया है, परन्तु दाऊ घरकी ओर खड़े होकर ही मोहनको गोदमें लेना चाहता है। श्यामको आज द्वार से बाहर जाना है। वह बड़े भाईकी ओर देखता है। उसे बोलना कहाँ आता है कि कह सके-'मुझे बाहर उतार दो।'

'तू बाहर उतरेगा?' दाऊने बात समझ तो ली। वह स्वयं द्वारसे बाहर आया और अब हाथ बढ़ानेपर श्यामने दोनों भुजाएँ गोदमें जानेके लिए उठा दीं।

दाऊ बल है तो क्या हो गया, अभी है तो दिगम्बर शिशु ही। उसका शरीर इतना बड़ा कहाँ है कि अपने छोटे भाईको पूरा उठा सके। अब श्यामसुन्दरको भुजाओंमें कंधेके पाससे पकड़कर भर लिया है इसने और अपने उदरके सहारे उतार रहा है किसी प्रकार। कृष्णचन्द्र बड़े भाईको दोनों हाथोंसे पकड़े लटक रहा है।

चौखटसे उतर जानेपर मोहनने दो क्षण देखा उस चौखट को-'ओह, कितनी ऊँची है यह देहली भी।' बड़े भाईकी ओर देखकर हँसा और फिर यह सरक चला है। यथासम्भव शीघ्रतासे द्वारसे दूर, खूब दूर भाग जाना चाहता है वह। दाऊ चल रहा है अपने अनुजके पीछे-पीछे।

श्यामसुन्दर पीछे मुड़कर बार-बार देखता है-'आज द्वारसे कितनी दूर चला आया वह।' बहुत प्रसन्न हो रहा है मन-ही-मन।

३-सहारा

'आ! चल!' नन्हेंसे नंग-धड़ंग दाऊने अपने छोटे भाईके दोनों हाथ पकड़ लिये हैं और उसे चलना सिखा रहा है। श्याम-सुन्दर बड़ा प्रसन्न है। वह हँस रहा है। अटपटे चरण रखता हिलता हुआ चल रहा है अग्रजके हाथके सहारे।

'चल तू, चल!' दाऊ अभी कहाँ समझ पाता है कि कन्हाई उसकी गतिसे नहीं चल सकता। अनेक बार लगभग घसिटते हुए, आगेको झुके हुए, श्यामको चलना पड़ता है; क्योंकि दाऊ अधिक गतिसे पीछेकी ओर हटता है। परन्तु मोहन प्रसन्न है, वह आगेको झुककर भी हँसता जा रहा है।

श्यामसुन्दर स्वयं खड़े होनेमें समर्थ हो गया है। वह दीवाल पकड़कर या अन्य किसी सहारेसे खड़ा हो जाता है और तब एक-दो डग चलने का प्रयत्न करता है। वैसे चलने योग्य नहीं हैं अभी उसके सुकुमार चरण।

'तू अपने आप चलेगा? गिरना मत।' दाऊके हाथसे अपने हाथ छुड़ानेका प्रयत्न किया कृष्णने और दाऊने हाथ छोड़ दिया; परन्तु कहीं छोटा भाई गिर न

पड़े, यह आशंका इस नन्हेंसे गोरे कुमारको है। अपनी तोतली भाषामें यह उसे सावधान कर रहा है।

श्याम हाथ छुड़ाकर खड़ा रहा दो क्षण। अपने शरीरके भारको संतुलित किए बिना भला, कैसे चल सकता है वह। एक डग ठीक चल सका; किंतु इस चल पानेकी प्रसन्नतामें दूसरा डग शीघ्रतामें उठ गया। लद्से भूमिपर लुढ़क गया वह।

'मैं उठाऊँ?' दाऊ पास, और पास आ खड़ा हुआ। उसका यह कनूँ गिरकर भी हँस रहा है। दोनों हाथ इसने आगे भूमि पर टेक रखे हैं और मुख ऊपर करके बड़े भाईकी ओर देखता हँस रहा है। अलकोंसे घिरा इसका छोटा-सा यह प्रसन्न मुख।

'ला, हाथ दे?' दाऊ दोनों हाथ नीचे बढ़ाये खड़ा है। श्याम अभी भूमिसे हाथ उठा नहीं रहा है। वह बड़े भाईकी ओर देख-देखकर हँसता ही जा रहा है।

दोनों हाथ भूमिसे कृष्णने ऊपर उठा दिये। दाऊने उन्हें पकड़ लिया और सहायता दी छोटे भाईको उठ खड़े होनेमें। श्यामसुन्दर अब फिर चलनेका प्रयत्न करने लगा है।

'अच्छा, तू चलने लगा है।' यह कोई आ गयी है और अपने उल्लासको न रोककर बोल पड़ी है। कन्हाईने मुख घुमाकर देखा और झपटकर बड़े भाईके कण्ठमें दोनों हाथ डालकर हँसता हुआ लिपट गया वह संकोचसे। दाऊ इस प्रकार अकस्मात् श्यामके लिपटनेसे डगमग हो गया है। छोटे भाईको दोनों भुजाओंसे समेटकर वह स्थिर रहनेका प्रयत्न कर रहा है।

४-उत्सुकता

'श्याम, क्या कर रहा है तू?' मैया बहुत देरतक चुपचाप देखती रही अपने नीलसुन्दर की क्रीड़ा। अन्तमें भीतर दबायी हँसी रुक नहीं सकी, हँस पड़ी वह और तब श्यामसुन्दरने मुख घुमाकर उसकी ओर देखा।

कटिमें नन्हें घुँघरुओंवाली मञ्जुल मेखला, चरणोंमें नूपुर, करोंमें पतले कङ्कण, कण्ठमें मुक्ता की छोटी-सी माला, भालपर कज्जल-बिन्दु। दिगम्बर दो शिशु व्रजराजके आँगनमें एक-दूसरेके सामने भूमिपर बैठे हैं। एक इन्दीवर-सुन्दर और

दूसरा स्वर्ण गौर। दोनों अपनी क्रीड़ामें तल्लीन। मैया कबसे खड़ी-खड़ी उन्हें देख रही है, इसका उन्हें तनिक भी पता नहीं।

कन्हाई अभी घुटनोंके बल सरकता है। अपने बड़े भाईके सामने बायीं हथेली भूमिपर टेके, उसपर कुछ झुका बैठा है। बार-बार दाऊके दूधकी बूँदोंसे उज्ज्वल दाँत झाँककर देखता है और फिर दाहिने हाथके अँगूठे एवं तर्जनीसे कोई एक दाँत चुटकीसे पकड़ता है। चुटकी उठाकर फिर अपने मुखमें ले जाकर दाँतके स्थानपर लगाता है। दाऊके मुखमें इतने उज्ज्वल, इतने सुन्दर दाँत हैं। उसके मुखमें एक भी क्यों नहीं है? अपनी समझसे वह प्रयत्न कर रहा है बड़े भाईके दो-एक दाँत उठाकर अपने मुखमें लगा लेनेका।

दाऊ अपने छोटे भाईके सामने पालथी मारे बैठा है वह मुख खोल देता है, जब श्याम उसके मुखमें झाँक्कर देखना चाहता है या हाथ ले जाकर मुख खोलनेका संकेत करता है। उसके मुखमें इतने दाँत है; उसका छोटा भाई उनमें-से कुछ लेकर अपने मुखमें लगाले, इसमें उसे कोई आपत्ति नहीं दीखती।

मैयाकी हँसी रुकी नहीं। दोनोंके अञ्जनरञ्जित बड़े-बड़े नेत्र मैयाकी ओर गये। श्यामने घुँघराले बालोंसे घिरा सुन्दर मुख घुमाकर देखा मैयाकी ओर और फिर मुड़कर घुटनोंके बल यथाशीघ्र सरक गया उसके पास। वह मैयाकी अंगुली पकड़कर उसे खींच रहा है। बार-बार अपना मुख खोलकर अंगुलीसे दिखाता है-'इसमें दाँत क्यों नहीं हैं?' और दाऊकी ओर देखकर मैयाकी खींचता है, खीझता है। उसकी एक-एक भङ्गी कह रही है-'तू दाऊके दाँत मेरे मुखमें लगा दे।'

मैया हँसती है-हँसते-हँसते लोट-पोट-सी हो रही है।

'अरे, दाँत तो मैयाके मुखमें भी हैं।' श्यामसुन्दर अब हठ कर रहा है, मैयाके मुखमें बार-बार अपने हाथ ले जाता है, मैया की अँगुली ले जाता है-'तू अपने दाँत मेरे मुखमें लगा।'

५-निरीक्षण

'मैया?' श्यामसुन्दर रो रहा है। पता नहीं क्या हुआ है; पता नहीं क्या खो गया है या वह कुछ चाहता है-पक्षियोंकी छाया पकड़ना या दर्पणमें पड़ा अपना

प्रतिबिम्ब पकड़ना और वह हो नहीं पाता। मैया भी पता नहीं कहाँ चली गयी है कि अपने नन्हें कन्हाईकी पुकार सुन नहीं रही है।

'माँ! माँ!' माता रोहिणी भी पता नहीं कहाँ क्या करने लगी हैं। श्याम-नंगा श्याम आँगनमें भूमिपर बैठा खीझ रहा है। वह बार-बार अपने हाथ हिला रहा है, नन्हें चरण हिला रहा है, सिर झकझोर रहा है और रो रहा है। रोते-रोते इधर-उधर देखता जाता है-'कोई क्यों नहीं सुनता? कोई क्यों उसके पास नहीं आता? घरकी सब दासियाँ किधर भाग गयीं?' उसे एक ओर से सबपर झुंझलाहट हो रही है।

'कनूँ!' यह आया अपने छोटे-छोटे चरणोंसे लदबद दौड़ता उसका बड़ा भाई। दाऊ आकर मोहनके सामने उकड़ूँ बैठ गया और अपने छोटे भाईके अश्रु पोंछनेका प्रयत्न करने लगा। वह अपने कनूँको आश्वासन देना चाहता है।

कन्हाईने सहसा रोना खीझना बन्द कर दिया। उसकी दृष्टि दाऊके वक्षपर पड़ी मोतियोंकी मालापर चली गयी। दाऊकी स्वर्ण गौर देहकान्ति से उज्ज्वल मोती कुछ पीले लगते हैं। मोहन एक हाथ भूमिपे टेककर झुक गया। दाहिने हाथकी तर्जनी और अँगूठेसे मोती के एक दाने को पकड़नेका प्रयास करते हुए वह बड़े ध्यानसे उसे देख रहा है।

'तू लेगा इसे!' दाऊ अपने छोटे भाईको पूरी माला ही अपने गलेसे उतारकर पहना देना चाहता है।

श्यामसुन्दरको अवकाश नहीं है। वह मोतीके इस दाने का निरीक्षण कर रहा है। सम्भवत: उलट-पलटकर देख रहा है कि इसमें कैसे श्वेत एवं पीत छटा हिलती-डोलती है। दाऊ माला क्यों हिला रहा है? क्यों उठाना चाहता है उसे यहाँसे? बिना बड़े भाईके मुखकी ओर देखे, बिना कुछ बोले अपना बायाँ हाथ भूमिसे उठाकर दाऊके वक्षपर रख दिया मोहनने। अपनी उत्फुल्ल कमल-जैसी छोटी हथेलीसे मालाका एक अंश दबा दिया, जिससे दाऊ माला हिलाकर उसके निरीक्षणमें बाधा न दे सके।

बड़े-बड़े दीर्घ दृग जमे हैं दाऊके वक्षके उस नन्हें मोती पर? कपोलों पर दो बूँदें चमक रही हैं अबतक। माँ और मैया दोनों आ गयी है; किंतु उनका लाला निरीक्षणमें लगा है। वह इस समय अपने सामने बैठे दाऊके मुखकी ओर भी देख

नहीं रहा है। दाऊ, मैया और माँके नेत्र अपलक उसके श्रीमुखकी एकाग्र भङ्गीका इसी सुसमयमें निरीक्षण कर सकते हैं।

६-स्नान

सुनते हैं... भगवान् विष्णु सिन्धु-शायी हैं। रात-दिन समुद्रमें ही सोते रहते हैं; इधर यह घुटनों सरकनेवाला नन्हा चञ्चल नन्दनन्दन-इसे कहीं पानी मिल भर जाये। आँगनमें दो बूँद पानी भी मिले तो उसे अपनी लाल-लाल हथेलीसे फैलाता रहेगा, बीच-बीचमें मुड़कर इधर-उधर देखेगा, हँसेगा।

कहीं दो चुल्लू पानी मिल जाय किसी छोटे बर्तनमें-कन्हाई उसे भूमिपर फैला लेगा। दोनों हाथ, घुटने कीचड़में लथपथ कर लेगा। पेटके बल सो जायगा वहीं, और फिर इधर-उधर ढूँढ़ेगा बड़े भाईको। दाऊके पास सरक जायगा और उसे भी ले आयेगा उस कीचड़में खेलनेके लिए।

'श्याम, तू मछली है क्या?' माता रोहिणी पता नहीं कितनी देरसे अपने इस चपलकी क्रीड़ा देख रही हैं। अब उन्हें लगता है कि बच्चेको अधिक देर जलमें नहीं रहना चाहिए।

मैयाने दोनों भाइयोंको नहला दिया था। केश संवार दिये थे। शृंगार किया था। परन्तु इससे क्या हुआ? आंगनमें बड़े सारे कठौते में पानी भरा हुआ था। कृष्णचन्द्रको इतना अधिक जल मिल गया, अब वह स्नान कैसे न करे।

कन्हाईने जल देखा और आनन्दसे कठौतेके पास बैठकर ताली बजाने लगा। झाँककर देखा उसने जलमें अपना मुख और फिर हाथ डालकर उस प्रतिबिम्बको पकड़नेके प्रयत्नमें लग गया।

'ऊँ-ऊँ!' कृष्णचन्द्र मुड़कर हाथ की अँगुलियाँ हिलाकर अपने बड़े भाईको समीप बुला रहा है। जलमें जो बालक दीखता है, वह उसके हाथ नहीं आता-यह बार-बार संकेत करता है।

दाऊ आया और कठौतेमें घुसकर बैठ गया। अब प्रतिबिम्ब दीखता नहीं तो उसकी बात कौन सोचे। श्याम भी स्नान क्यों न करे। वह अपने बड़े भाईके पास उसके सामने जलमें लेट गया।

कठौतेका जल चारों ओर फैल रहा है। दाऊ पालथी मारे जलमें बैठा है। कभी छोटी-सी अञ्जुलिसे अपने कंधेंपर जल डालता है, कभी अपने छोटे भाईके मस्तक या पीठपर।

कठौतेमें बड़े भाईके सामने पेटके बल श्याम लेटा है। वह मुख घुमा-घुमाकर बड़े भाई या माँकी ओर देख लेता है बीच-बीचमें हँसता जाता है। हाथ-पैर उछालता है और मछली-के समान बार-बार चपलतापूर्वक कुलबुलाता है। माँ उसे झुककर उठाना चाहती है; किंतु वह निकलना कहाँ चाहता है पानीसे।

भगवान विष्णु क्या मत्स्यावतार ले पाते इस जलशायीको देखनेके पश्चात्?

७-अध्ययन

'ऊँ, गूँ', पता नहीं क्या, कन्हाई कुछ बोल रहा है-क्या बोल रहा है, यह कैसे कहा जा सकता है। अपनी समझसे वह पढ़ रहा है। झूम-झूमकर पढ़ रहा है वह।

द्वारके सामने मार्गकी धूलिमें कृष्णचन्द्र बैठा है। दाऊने ही सहायता देकर इसे चौखट पार कराया होगा। मैयाने उबटन लगाकर इसके सहज स्निग्ध अंगको और चिकना कर दिया है। घुँघराले केश तैलसिञ्चित हैं और संवारे हुए हैं। नेत्रोंमें अञ्जन लगा है और भालपर एक बिन्दु है काजलका? घुटनों चलनेके कारण पैर और दोनों हाथ धूलिमें सन गये हैं। नासिकापर, दहिने कपोलपर और उदरपर धूलिसनी अंगुलियोंकी छाप लग रही है। अब यह बायें पैरकी पालथी मारे, दहिना चरण कुछ मोड़कर फैलाये, बायीं हथेली भूमिपर टेक झुका बैठा है और दहिने हाथकी पतली तर्जनीसे धूलिमें रेखाएँ खींचता और झूम-झूमकर 'गूँ-गाँ करता जा रहा है। बड़े जोरसे अध्ययनमें लगा है यह।

अपने छोटे भाईके सामने दिगम्बर दाऊ बैठा है पूरी पालथी मारकर बायें हाथको टेककर उसके सहारे आगेको झुका। उसका भी मैयाने श्याम के समान ही शृंगार किया है; किंतु उसके मुख, कपोल, वक्ष तथा उदरपर उसके अनुजके धूलिभरे करोंकी छाप पर्याप्त अधिक है। श्याम बार-बार उसके मुख या वक्षपर पूरा हाथ रखकर संकेत करता है कि वह देखे, उसके छोटे भाईने कितना अधिक लिख लिया है।

'बाबा, ताऊ, मैया' दाऊ मुखमें जो आता है-व्यक्तियोंका, गायोंका, बछड़ोंका नाम वह बोलता जाता है। यह नियम थोड़े ही है कि कोई नाम दस-पाँच बार आवृत्ति न करे। वह कोई-न-कोई अंधाधुंध बोलता जाता है और धूलिमें सामने आड़ी, टेढ़ी, चक्करदार उलझी रेखाएँ तर्जनीसे खींचता जाता है।

श्यामसुन्दर चकितभावसे देखता है अपने अग्रजकी ओर। ओह, उसका यह दादा इतना भारी विद्वान है। इतने-सारे नाम लिख सकता है। नहीं, वह छोटा विद्वान नहीं रहेगा। मस्तक झुंकाकर बड़ी शीघ्रतासे दाऊकी खींची रेखाओंपर एक सिरेसे दूसरे सिरेतक बड़ी-बड़ी उलझी रेखाएँ वह खींच रहा है। खूब सिर हिला रहा है। अधिक शीघ्रतासे 'गूँ-गूँ' करने लगा है। बीच-बीचमें मुख उठाकर बड़े भाईकी ओर मुस्कराता हुआ देखता है, मानो कहता हो-'दादा, देख! मैंने भी कितना लिख दिया है।'

ये दोनों महापण्डित धुँआधार अध्ययनमें लगे हैं इस समय। अब इन्होंने अपने सामने भूमिपर जो बड़ा भारी शास्त्र लिख लिया है, वह किसीकी समझमें नहीं आता तो ये क्या करें।

८-संकोचमें

श्यामसुन्दर अभी बोलना सीख रहा है। वह 'माँ', 'दादा', 'बाबा' कह लेता है। 'दाऊ' तो बहुत पहले कहना आ गया था उसे। आज सवेरे-सवेरे वह मैयाके पास मथानी पकड़कर आ खड़ा हुआ है। अपनी छोटी-सी हथेली फैलाकर कह रहा है-'दादा।'

'अच्छा, माखन निकलने तो दे।' मैया बार-बार समझाती है; किंतु मोहनको स्वयं अपने 'दादा' को आज माखन खिलाना है। उसे जल्दी पड़ी है। कहीं दाऊ यहीं आ गया तो? नहीं श्याम आज ले जाकर इसे माखन खिलायेगा अपने हाथों। वह अपने हाथों ही खिलायेगा। हाथ नहीं लगाने देगा बड़े भाईको। उसे उतावली है। वह मैयाके मुखको, नाकको बार-बार हाथसे पकड़ता है। बार-बार खीझता है। उसे क्यों जल्दीसे माखन नहीं दे दिया जाता?

'लाला! नेक-सा माखन मुझे भी दे।' यह कौन आ टपकी इतनी देरमें, इतनी हठपर तो कहीं मैयाने माखन दिया है और यह बीचमें ही माँगनेवाली आ गयी। श्यामने अपना मस्तक जोरसे हिला दिया और उससे बचकर निकलनेके लिए दूसरी ओर मुड़ा।

'नेक-सा तो दे दे।' गोपिकाने आगे होकर हाथ फैलाकर मार्ग रोक दिया।

दाहिने हाथकी लाल हथेलीपर थोड़ा-सा उज्ज्वल माखन लिये, बायें हाथको भूमिपर टेके दिगम्बर नीलसुन्दर घुटनोंके बल सरक जाना चाहता है गोपिकासे बचकर। चरणोंमें नूपुर, कटिमें मेखला, कण्ठमें मुक्ताहार, भालपर बिखरी अलकोंके बीच कज्जली बिन्दु। वह कभी इधर और कभी उधर खिसकता है गोपी से बचनेके लिए।

'नेक दे दे।' गोपिका मार्ग रोके आग्रह कर रही है।

'दादा!' मोहन बैठ गया। उसने मुड़कर मैयाकी ओर देखा और फिर गोपीकी ओर संकेत किया बायें हाथसे उसने।

'यह तुझे जाने नहीं देती? दादाका माखन माँगती है? दे-दे इसे थोड़ा-सा।' मैयानेस्नेहसे पुचकारा।

कन्हाई अपना छोटा-सा सिर झुकाकर सोचने लगा है। वह क्या करे? अपने बड़े भाईका भाग इसे दे या न दे? बायें हाथ-की तर्जनी और अंगूठेको वह माखनमें लगाये है। दो सरसोंके बराबर माखन अँगुलीपर उठा पाया है बहुत सोच-विचारकर। अब इतना भी दे या न दे? हाथ बढ़ाते-बढ़ाते भी खींच लिया उसने। यह तो दाऊ दादाका भाग है न, नहीं देगा। अपने घुंघराले बालोंको मस्तक हिलाकर झकझोर दिया उसने।

मैया पुचकार रही है-'दे-दे, लाला।'

गोपी हाथ फैलाये माँग रही है-'नेक दे-दे।'

दोनोंके बीचमें माखनमें बायें हाथका अँगूठा और तर्जनी लगाये संकोचमें पड़ा यह त्रिभुवन सुन्दर...।

९-गायन

'दादा, दादा, दादा', आज श्यामसुन्दर गायन कर रहा है। वह अकेला गोष्ठमें आ बैठा है और झूम-झूमकर गा रहा है। अपने गान पर स्वयं मुग्ध हो रहा है।

'कौन आ गया? मोहन को तनिक आहट मिली और संकोचसे उसका गान सहसा बन्द हो गया। सिर घुमाकर उसने पीछे की ओर देखा। 'दादा!' यह तो उसका दाऊ दादा है। इससे संकोच करनेकी तो कोई बात है नहीं। कन्हाईका सुन्दर मुख हास्यसे खिल उठा। उसके अरुण पतले अधरोंपर नन्हें दाँतोंकी उज्ज्वल दूध-सी कान्ति चमक गयी। पता नहीं कब आ गया यह दाऊ दादा गुपचुप उसके पीछे।

'तू गा।' दाऊ अबतक छोटे भाईके पीछे खड़ा था, अब आकर दाहिनी ओर बैठ गया।

'दा...दा, दा...दा, दा...दा' श्यामसुन्दरके गानका आनन्द बढ़ गया है। जम गया है उसका गायन अब। वह झूम-झूमकर गाने लगा है।

'बा...बा..., बा...बा, बा...बा' दाऊ भी छोटे भाईके साथ गा रहा है। वह कभी ताली बजाता है, कभी चुटकी बजानेका यत्न करता है अपनी पतली नन्हीं अँगुलियोंसे।

पूरा गोष्ठ सूना पड़ा है। गोबर और गोमूत्रसे भरा-सा है। गायें चरने चली गयी हैं, पर गोष्ठ अभी स्वच्छ नहीं हुआ है। श्रीकृष्णने कछनी तो कहीं खोलकर फेंक दी है। चरण तथा कटिसे नीचेका पूरा भाग गोबरसे सना है। मैयाने अलकोंमें तेल डाल कर उन्हें सँवार दिया है। एक माला सजा दी है अलकोंपर और मयूरपिच्छ लगा दिया है। नेत्रोंमें अञ्जन और भालपर कज्जलका बिन्दु है। वक्षपर मुक्ताकी माला है। सिर हिला-हिलाकर ताली बजानेका यत्न करते हुए झूम-झूमकर गा रहा है वह।

दाऊ नीली कछनी बाँधे अपने भाईके समान ही सजा-बजा बैठा है उसके दाहिनी ओर। केवल चरण ही उसके गोबरमें पड़े हैं। वह भी झूम रहा है, गा रहा है।

श्याम 'दादा, दादा' करके गा रहा है, तब तो उसका दादा उसके समीप बैठा है। फिर दाऊ 'बाबा' करके गा रहा है तो बाबा नहीं आयेंगे? परन्तु बाबा गोष्ठके द्वार पर ही ठिठके भाव मुग्ध खड़े हैं। आगे आनेसे उनके इन अपूर्व गायकोंके गानेमें बाधा पड़ेगी। उनके दोनों गायक-तुम्बुरु कहीं सुन लें इनका यह गान, तो अपनी वीणा पत्थरपर दे मारें। कितनी कर्कश है उनकी वीणा इस स्वरलहरीके समक्ष।

१०-नित्यबन्धु

'कन्हाई तेरा दादा कहाँ है?' यह गोपी आज श्यामको खिझाना चाहती है। मोहनकी बड़ी-बड़ी अञ्जनरञ्जित रतनारी आँखोंमें खीझकी जो छटा है...।

श्यामने मुख घुमाकर आँगनमें बैठे अपने अग्रजकी ओर देख लिया और उसके अधरोंपर उज्ज्वल हास्य चमक उठा।

'ना, तेरा दादा वह नहीं है।' गोपीने मुख बनाया। वह जो बड़ी आँधी आयी थी, तेरे दादाको वनमें उठा ले गयी।

'तेरे दादाको आँधी वनमें उठा ले गयी?' भोला कृष्ण नहीं जानता कि आँधी कोई पशु है, पक्षी है या राक्षस है; किंतु उसे आँधीपर बड़ा क्रोध आया है। नन्हें हाथोंकी मुट्ठियाँ बंध गयी हैं और सिर हिलाकर वह जोरसे 'ना, ना' कर रहा है।

'ना क्या, आँधी तो ले गयी तेरे दादाको।' गोपी हँस रही है।

'कहाँ है आँधी?' जैसे वह मिल जाय तो यह उसकी नाक पर घूसे मारेगा।

'वह क्या अब बैठी है? वह तो भाग गयी, दूर भाग गयी और तेरे दादाको भी ले गयी।' गोपीका हास्य रुक नहीं पा रहा है।

कनूँ दोनों हाथोंको हिला रहा है। धपसे भूमिपर बैठ गया है। सिर झकझोर रहा है। उसके सुन्दर नेत्रोंमें अश्रु आ गये हैं।

'तू रोता क्यों है? यह तो झूठी है। वह क्या बैठा तो है तेरा दादा।' मैयाकी अपने लालके नेत्रोंमें अश्रु सह्य नहीं। कितना भोला है उसका सुकुमार पुत्र।

'दादा।' श्याम झटपट उठा और दौड़ गया बड़े भाईके पास। दाऊके सामने बैठकर उसके दोनों हाथ बड़े प्रेमसे पकड़ लिये उसने।

'यह तेरा दादा कहाँ है, यह तो भद्रका दादा है।' गोपीने फिर चिढ़ानेका प्रयत्न किया।

'मेरा दादा है।' श्यामने और कसकर अग्रजके हाथ पकड़े और उसके मुखकी ओर देखा। उसके नेत्र कह रहे हैं-'दादा, तू तो मेरा ही है न?'

दाऊ अपने आगे सटकर अपनी गोदमें झुके अपने इस छोटे भाईके कंधेपर एक हाथ धरे बड़े स्नेहसे इसे देख रहा है। श्याम एक हाथसे बड़े भाईका हाथ पकड़े है और मुख गोपीकी ओर किये दूसरे हाथकी मुट्ठी बाँधकर उसे घूसा दिखा रहा है।

यह उसका दादा है-सदासे सर्वदासे उसका। जो इसे उससे छीनना चाहेगा, उसे यह मारेगा नहीं? कौन छीन सकता है भला, दाऊको उससे।

११-खीझ

'दादा। दादा कहाँ है?' श्यामसुन्दर जगते ही अपने बड़े भाईको ढूँढ़ेगा, यह तो जानी हुई बात है। नेत्र खोलनेसे भी पहले उसने 'दादा, दादा' की रट लगायी और हाथसे टटोलना प्रारम्भ किया। यह क्या कि चारों ओर देखनेपर भी उसका दाऊ उसे दीखता नहीं।

'तू झटपट मुँह धुला ले। दाऊके पास जायगा न तू? दाऊ गाय दुहने चला गया है।' मैयाने हँसते-हँसते अपने लालको गोदमें उठाया।

'दादा गाय दुहने चला गया?' कृष्णचन्द्रका प्रसन्न मुख गम्भीर हुआ।

'अरे, अभी तो गया है। तू भी झटपट उसके पास पहुँच जायगा। मुँह धुला ले तो तुझे मैं ले चलती हूँ।' परन्तु अब यह कहाँ सुनता है ऐसे आश्वासन। अब मैयाकी गोदमें-से उतरने-के लिए छटपटाने लगा है। मैयाकी नाक, मुख, केश नोचने लगा है। क्यों नहीं मैयाने इसे पहले जगाया?

'अच्छा, रो मत। चल गोष्ठ लिये चलती हूँ।' सबेरे-सबेरे यह रूठ जायगा तो न दूध पियेगा न माखन खायगा; परन्तु यह तो मैयाके साथ गोष्ठमें जानेको भी प्रस्तुत नहीं। गोदसे उरतनेको मचल ही रहा है। हाथ पैर झुंझलाहटसे हिला रहा है।

'तू अपने ही जायगा? जा, दौड़ जा।' गोदसे उतार दिया मैयाने; परन्तु यह तो भूमिपर लोट-पोट होने लगा है। क्यों दाऊ इसे छोड़कर गोष्ठ भाग गया? नहीं जायगा यह उसके पास। मैया क्या करे? उसका यह नन्हा नीलसुन्दर भूमिपर लोट रहा है। छूने नहीं देता अपना शरीर। उठानेका प्रयत्न करने पर नोचने लगता है। मुँह धोनेका प्रयत्न करनेपर जलका पात्र पैर मारकर लुढ़का दिया इसने।

अञ्जन कपोलोंपर फैल रहा है। अलकें बिखरी हैं और दोनों हाथोंसे खीझ-खीझकर श्याम उन्हें नोच रहा है, खींच रहा है। बड़े-बड़े लोचनोंसे बड़ी-बड़ी बूँदें गिर रही हैं। भूमण्डल चंचल हो रहा है। मुख अरुण हो उठा है। जो छोटी-मोटी वस्तु हाथ आती है, उसीको फेंक देता है, पटक देता है, पैर मारकर लुढ़का देता है। मैया से बार-बार दूर जाकर भूमिपर लोटने लगता है।

'यह क्या?' दाऊ बड़े उल्लाससे छोटी-सी दोहिनी लिये आया। अपने हाथसे दुहा दूध छोटे भाईको पिलाने ला रहा था वह। आँगनमें दृष्टि गयी और दोहनी हाथसे छूट गिरी। फूट गयी वह भड़से। दूध फैल गया चारों ओर। दाऊको यह सब देखनेका अवकाश नहीं। वह उस फैले दूधमें डूबे चरणोंके चिह्न आँगनमें बनाता अपने अनुजके पास बैठा है।

'किसने मारा है तुझे?' कृष्णके नेत्रोंमें अश्रु हैं, वह अपनी कोमल अलकें खींच रहा है, तो दाऊके नेत्रोंके बिन्दु रुके कैसे रहेंगे। परन्तु कनूँ आज बड़े भाईसे खीझ गया है। वह दाऊके हाथको बार-बार हटा देता है। मुख दूसरी ओर करके लेट जाता है। बार-बार दाऊ उसके सामने बैठता है और वह करवट बदल लेता है; किंतु उसका केश नोचना बन्द हो गया है। बन्द हो गयी हैं हिचकियाँ। अब खीझ जा रही है, रूठना भी जायगा ही। कब तक वह अपने दादासे रूठा रहेगा?

और यह जो उसके दादाके रतनारे नेत्रोंसे आँसू गिर रहे हैं...

१२-कलेऊ

'मैं अपने हाथ खाऊँगा।' मैयाने कटोरेमें दूध-भात मिला दिया है। राम-श्यामको उसने अपने सामने बैठाया कलेऊ कराने को और एक ग्रास उठाया, किंतु कन्हाईने मुख हटा लिया और दोनों हाथोंसे कटोरा उठा लिया उसने खड़े होकर।

'दादा, आ तू।' कृष्ण अपने दादाके बिना तो भोजन कर नहीं सकता। कटोरा दोनों हाथोंमें लिये खड़ा है वह और देख रहा है कि बड़ा भाई उसके साथ चलनेको प्रस्तुत होता है या नहीं। अच्छा! अपने ही हाथोंसे तुम दोनों खालो। दाऊको अपने मुखकी ओर देखते देख मैयाने अनुमति दे दी।

कृष्णचन्द्र आँगनमें आगे कटोरा धरकर बैठ गया है दोनों चरण दो ओर फैलाकर। दाऊ अब उसके सामने जा बैठा है। ये दोनों दिगम्बर-कटिमें मेखला, करोंमें कङ्कण, चरणोंमें नूपुर और वक्षपर हार। अलकोंसे घिरे उनके मुख देखने ही योग्य हैं।

दोनों अपने मुखमें कम ग्रास डालते हैं, प्राय: दूसरेके मुखमें ही देनेका प्रयत्न करते हैं। दोनोंके मुख, कर, वक्ष, उदर, दूधसे सने हैं। यत्र-तत्र चावल पड़ा है अङ्गोंपर। भूमिपर और जानुपर भी दूध-भात बिखर रहा है।

'लाल , मुझे भी एक ग्रास खिला दे।' यह कोई गोपिका आ बैठी है दोनोंसे-तनिक दूर।

श्यामसुन्दरने दो-तीन चावल हाथमें उठाकर उसकी ओर हाथ किया; उसने जब लेनेके लिए हाथ बढ़ाया तब इस नटखटने अपना हाथ खींच लिया और उस ग्रासको अपने मुखमें डालता हुआ हँस रहा है।

'दाऊ! तेरा छोटा भाई तो देता नहीं, तू ही दे दे, लाल? तू तो राजा है, एक ग्रास दे दे मुझे।' अब इसने बड़े भाईसे माँग की।

दाऊने अपने नन्हें हाथके अनुसार पूरा ही ग्रास उठाया है। वह इस गोपिको देने जा रहा है यह ग्रास।

दाऊके हाथ बढ़ाते ही श्याम झटपट खिसक आया दाऊ और गोपीके बीचमें। अपना छोटा-सा मुख पूरा खोलकर दाऊके हाथको ग्राससमेत इसने मुख में ले लिया है।

बड़ा है कुछ दाऊ का ग्रास। कन्हाईका पूरा मुख भर गया है। वह उस ग्रासको कण्ठसे उतारनेका प्रयत्न तो पीछे करेगा, अभी तो भरे मुख गोपिकाकी ओर मुड़कर देख रहा है। हँस रहे है इसके नेत्र-'बड़ी आयी है यह दादाके हाथसे ग्रास लेनेवाली। आ, ले।'

अंगूठा नचा रहा है यह चपल।

१३-खेल

'राम, कहाँ है तू' माता रोहिणी अपने राम-श्यामको ढूँढने निकली हैं। ये दोनों बहुत चंचल हैं। तनिक किसी काममें लगो कि पता नहीं किधर निकल भागते हैं।

दोनों साथ ही होंगे। जैसे एक गायके छोटे-बड़े बछड़े प्राय: साथ ही चरते हैं, साथ ही खेलते हैं, साथ ही सटकर बैठते हैं-वे दोनों भी साथ ही रहते हैं। कन्हाई इधर-उधर घूमेगा, भागेगा, नाचेगा और घूम-फिरकर बड़े भाईके सामने उससे सटकर आ बैठेगा। दाऊ अपने छोटे भाईके साथ ही लगा रहता है। दोनों साथ रहते हैं, यही थोड़ा-सा सन्तोष है, किंतु कहाँ हैं दोनों? माताको जब अपने पुत्र नहीं दीखते, वह व्याकुल हो जाती है।

'कृष्ण, चल कलेऊ तो कर ले।' यहाँ मण्डली जमी है दोनोंकी द्वारके बाहर धूलिमें। माता पास गयी बालकोंको घरमें ले आनेके लिए।

'माँ, तू पकड़ इसे।' श्यामने एक बिल्लीका बच्चा पकड़ रखा है। सफेद-सफेद नरम-नरम बच्चा-बार-बार मुख खोलकर म्याऊँ-म्याऊँ करता है। दो बच्चे और हैं बिल्लीके-एक सुनहला और एक काला। ये दोनों भी कन्हाईके इधर-उधर, आगे-पीछे म्याऊँ-म्याऊँ करते घूम रहे हैं। बार-बार उसके शरीरसे अपना शरीर रगड़ते हैं। दाऊने कुत्तेका एक मोटा-सा पिल्ला पकड़ रखा है और उसे लिये आ रहा है छोटे भाईके पास। अब श्यामसुन्दर चाहता है कि माँ उसके बिल्लीके बच्चेको ले ले तो वह पिल्ला पकड़े। दाऊके पास कितना अच्छा पिल्ला है। तीन-चार पिल्ले और भी कूँ-कूँ करते उसके साथ आ रहे हैं।

'छोड़ दे, छोड़ दे इसे।' माताने दोनोंको एक साथ समझाना चाहा। 'इनकी माँ इन्हें दूध पिलायेगी।'

'हम दोनों इनको दूध पिलायेंगे।' तुतलाते हुए श्यामसुन्दरने माताकी ओर देखकर कहा।

'तू किसको-किसको दूध पिलायेगा?' माताको हँसी आ गयी।

बात ठीक है। मार्गमें धूलि-धूसर यह कन्हाई अकेला तो है नहीं। इसके चारों ओर म्याऊँ-म्याऊँ करती यह घूमती बिल्ली और उसके बच्चे, वह दाऊके साथ

कूँ-कूँ करती कुतिया अपने पिल्ले लिये आ रही है। ये मयूर इधर-उधर नाच रहे हैं और बंदरोंकी मण्डली मकानोंपर उछल-कूद इसीलिए तो कर रही है कि उसे नीचे आनेका अवसर मिले।

'मैं सबको दूध पिलाऊँगा।' कन्हाईने देखा इधर-उधर। उसके लाल-लाल अधरोंपर दूध-सा उज्ज्वल हास्य खिल उठा। बिल्लीका बच्चा लिये हुए उठ खड़ा हुआ वह घरमें चलनेके लिए-उसके बाबाके घरमें दूधका क्या टोटा है।

१४-हँसी

'कनूँ! वह बाँट तो ले आ, लाल।' मैया चाहती है कि उसके पुत्रके हाथ-पैरोंमें कुछ शक्ति आये। वह चंचल प्रायः घरसे भाग जाता है। यहाँ कुछ काममें लगा रहे, यहीं खेलता रहे तो अच्छा।

'अरे, सब-के-सब मत उठा। एक ले आ।' हड़बड़ाकर मैयाने मना किया। छोटे-बड़े कई बाट एकके ऊपर एक रखे हैं। श्याम एक साथ सबको उठाना चाहता है। मैयाकी आज्ञाका पालन करनेके लिए बड़ी प्रसन्नतासे दौड़ गया है, किंतु इतने बाट एक साथ उससे कैसे उठेंगे? उसके प्रयत्नमें कहीं कोई खिसककर गिरे और चोट लगे तो?

नन्हा-सा कन्हाई—कटिमें कछनी तक नहीं है। अलकें बहुत कम बिखरी हैं। अंगोंमें कुछ थोड़े चिह्न हैं धूलि लगनेके, किंतु थोड़े ही हैं वे। मैयाने कुछ ही देर पहले अपने पुत्रको उबटन लगाकर नहलाया है। उसकी अलकोंमें अब भी मैयाकी सजायी मालतीके पुष्पोंका छोटा-सा गुच्छा लगा है। नेत्रोंका कज्जल अभी भी फैला नहीं है और भालपर गोरोचन की खौरके बीचका काला बिन्दु भी ज्यों-का-त्यों है।

कृष्णने मैयाकी ओर मुड़कर देखा और किंचित् हँसकर बैठ गया बाटोंके समीप। उसे कौन-सा बाट ले जाना है? सबसे बड़ा बाट ले जायगा वह। ले ही जाना है तो छोटा बाट क्यों ले जाय। लेकिन बड़ा बाट सबसे नीचे है। उसके ऊपरके दो-एक बाट उठाकर बैठे-बैठे उसने धीरेसे भूमिपर रख दिये। अब शेष बाट बैठे-बैठे नहीं उठाये जा सकते। उठकर खड़ा हो गया वह और झुककर एक-एकको उठाकर नीचे रखने लगा किसी प्रकार।

ओह! कितना भारी है यह बाट? श्यामसुन्दर दूसरे बाटोंके उठाने-धरनेमें ही थक गया है और उसपर यह तो पूरे ढाई सेरका है। कन्हाई दोनों हाथों उठानेका प्रयत्न कर रहा है उसे। मुख लाल-लाल हो गया है। भालपर स्वेद-बिन्दु छा गये हैं।

कृष्णचन्द्र इधर-उधर देखने लगता है। 'कोई सहायता नहीं करेगा?' मैया मना कर रही है। वह छोटा बाट लानेको कह रही है और हँस रही है। क्यों हँस रही है वह? श्याम छोटा बाट नहीं ले जायगा। वह तो इसी को ले जायगा। दोनों हाथोंसे पूरी शक्ति लगा रहा है वह।

यह दाऊ क्यों हँस रहा है? क्या मिल गया है इसे? यह तो ताली बजा-बजाकर नाच-नाचकर हँस रहा है। कन्हाईसे बाट नहीं उठता और यह हँसता है। मोहन अब रो पड़ेगा। कोई उठाकर उसके सिर पर बाट रख देता…। वह देख रहा है बड़ी कातरतासे इधर-उधर।

'नहीं उठता यह तुझसे? ला मैं उठा दूँ।' बहुत भली हैं माता रोहिणी। ये श्यामकी सदा सहायता करती हैं। बाट उठाकर कृष्णचन्द्रके मस्तकपर धर दिया है इन्होंने, किंतु हाथसे उसका पूरा भार उठाये हैं। श्यामने दोनों हाथों बाटको पकड़ रखा है मस्तकपर और बड़ी प्रसन्नतासे मैयाके पास आ रहा है। माता रोहिणी पीछे-पीछे बाट सम्हाले आ रही हैं।

'मेरा लाल ले आया बाट।' मैयाने अङ्कमें लेना चाहा। स्वयं बाट सिरपरसे ही सम्हालकर ले लिया, पर यह दाऊ क्यों हँस रहा है? यह तो हँसता ही जा रहा है। श्यामसुन्दर बड़े भाईकी ओर मुड़कर अपनी सफलताके लिए हँस पड़ा है और हँसता हुआ यह दाऊ तो दोनों हाथ फैलाकर लिपट ही गया है उससे।

१५-क्रोध

'दाऊ कुछ अच्छा लड़का नहीं।' यह गोपी आज श्यामसुन्दर को खिझा रही है।

'अच्छा है, बहुत अच्छा है।' कृष्णचन्द्रने चोंककर देखा उसकी ओर और पूरे बलसे कहकर खड़ा हो गया। उसका दादा कहीं बुरा हो सकता है?

'उहुँ, तनिक भी अच्छा नहीं।' गोपी मुख बना रही है।

'तू अच्छी नहीं। बुरी है तू।' कन्हाई झगड़नेके लिए उद्यत हो गया है। वह इस गोपीकी नाक नोच लेगा। इसके केश खींचेगा। यह क्यों उसके बड़े भाईकी निन्दा करती है? वह धमका रहा है-'दादाको आने दे।'

'क्या कर लेगा तेरा दादा? बुरा लड़का है वह।' श्यामको अपने हाथोंसे रोक रखा है इसने। वह छटपटा रहा है। बार-बार हाथ बढ़ा रहा है मुख या केश नोंच लेनेके लिए।

'कनूँ! अरे यह क्या?' मैयाने देखा कि उसका नन्हा लाल गोपीसे हाथ छुड़ाकर घरमें दौड़ गया है। बड़े प्रयत्नसे दोनों हाथोंमें एक बड़ी-सी लाठी लिये आरहा है। इतनी बड़ी लाठीको उठाकर ले आना ही उसके लिए श्रमसाध्य हो रहा है।

'मारूँगा इसे।' पतले-पतले लाल-लाल होंठ फड़क रहे हैं। उज्ज्वल दन्तावली अधरको दबाये है। भ्रूमण्डल कठोर हो रहा है। कमल-दल-लोचन अरुण हो उठे हैं और उनमें जल आ गया है। दोनों हाथोंमें लाठी सम्हाले ढाई वर्षके नीलसुन्दरका श्रीमुख अरुण हो रहा है क्रोधसे।

'अरे ठहर!' मैया दौड़कर पास आ गयी है। इस चपलके लिए किसीके ऊपर लाठी पटक देना कोई बड़ी बात नहीं।

'यह दादाको बुरा कहती है। मैं इसे मारूँगा।' कृष्णचन्द्र मैयाको लाठी नहीं देना चाहता। वह तिरछे होकर खड़ा है। क्रोधसे काँप रहे हैं उसके पैर।

'कौन कहता है कि तेरा दादा बुरा है? तेरा दादा तो राजा है।' मैया अपने पुत्रको पुचकार रही है।

'दादा!' यह आया दाऊ। यह बाबाके पाससे दौड़ा-दौड़ा आ रहा है। श्यामने लाठी फेंक दी भूमिपर और दौड़कर बड़े भाईके पास पहुँचा-'तू इसे मार! यह तुझे बुरा बताती है।'

बड़े भाईका हाथ एक हाथमें लिये, दूसरे हाथसे गोपिकाकी ओर संकेत करता रोषमें भरा यह कन्हाई। गोपी अब साहस नहीं कर सकती। बड़े भाईके मुखकी ओर मुड़कर देख रहा है यह, और दाऊ तो इसके मुख को देखनेमें ही मग्न है। इसकी बात समझने और गोपीकी ओर देखनेका उसे अवकाश ही नहीं।

१६-दुग्धपान

'मैया! मैया! कनूँ तो बछड़ा है।' दाऊ ताली बजा-बजाकर कूद रहा है, हँस रहा है। अपने छोटे भाईको गायके थनमें मुँह लगाकर दूध पीते देख बड़ी प्रसन्नता हुई है उसे।

दो क्षण ये दोनों न दीखें तो मैया व्याकुल हो जाती है। घरका काम-धंधा छोड़कर ढूँढ़ने चल देती है। आज तो दोनों ही सवेरे-सवेरे बिना कलेऊ किये चुपचाप खिसक आये हैं गोष्ठमें। मैया, पता नहीं, कहाँ-कहाँ ढूँढ़ती यहाँ पहुँची है।

'श्यामसुन्दर, तू बछड़ा हो गया है क्या रे?' मैया तनिक दूर ही खड़ी रह गयी है। उसका कृष्णचन्द्र भूखा है। गायका ही दूध वह कुछ पी ले, तो भी ठीक। घरमें तो बार-बार हठ करने पर भी दूध पीना नहीं चाहता। पास जानेसे कहीं गाय इधर-उधर हटी...। थोड़ी दूर खड़ी मैया मन्द-मन्द हँस रही है।

कन्हाई गायका थन मुखमें लिये आँख उठाकर देख लेता है बछड़ेकी ओर। इतना सुन्दर, इतना चंचल बछड़ा क्या बुरा है जो दाऊ और मैया उसे बछड़ा बताती हैं? बछड़ा बनना अच्छा ही लगता है उसे और बछड़ा तो कूद रहा है, फुदक रहा है, बराबर उसको सूँघकर अद्भुत शब्द करता है-'ब्यॉं।'

मैया देखती है अपने पुत्रको और अपनी इस कपिलाको। कितनी सीधी, कितनी स्नेहमयी है यह कपिला भी। गर्दन घुमाकर बार-बार सूँघती है कृष्णचन्द्रको। बारंबार हुंकार कर रही है। बार-बार जिह्वा निकालती है चाट लेनेको और फिर हटा लेती है। इतना समझती है यह कि उसकी रूखी जीभ इस सुकुमार शरीरको छूने योग्य नहीं है।

'कनूँ बछड़ा है।' दाऊ उछल रहा है प्रसन्नतासे।

मोहन थनसे मुख हटाकर मैयाकी ओर देख रहा है। दूधसे भरा है उसका मुख और मुस्करा रहा है वह। पतले लाल अधरसे दूधकी बूँदें गिर रही हैं।

'आ! आजा, लाल!' मैयाने दोनों हाथ बढ़ा दिये उल्लाससे। किंतु कपिलाके चारों थनोंसे जो उज्ज्वल धारा झर रही है, अभी उससे वह तृप्त कहाँ हुआ है। यह तो फिर मुख घुमाकर लग गया है दूध पीनेमें।

दोनों हाथ भूमिपर टेके, घुटनोंके बल गर्दन कुछ ऊपर उठाये मुखमें गायका थन लिये यह श्यामसुन्दर! अब तो दाऊ भी अपने छोटे भाईके सामने गायकी दूसरी ओर आ बैठा है। अपना मुख खोलकर दोनों छोटे हाथोंसे गायका थन पकड़कर वह मुखमें दूधकी धारा लेने लगा है।

१७-कछुआ भी, मछली भी

'दाऊ मुझे कछुआ कहता है।' मोहन बड़े भाईके विरुद्ध मैयाके पास अभियोग ले आया है। मैयाका एक हाथ पकड़कर दूसरे हाथसे वह दाऊको दिखा रहा है। यह दाऊ उसे पानीका कछुआ बताये, यह भी कोई बात है।

'मैया, यह मना करनेपर भी पानीमें जानेसे नहीं रुकता। पानीमें तो कछुआ ही देरतक रहता है न?' दाऊने भी मैयाका दूसरा हाथ पकड़ लिया आकर।

'तू पानीमें क्यों जाता है?' मैयाने दाऊका पक्ष लिया। वह स्वयं नहीं चाहती कि श्याम यमुना-तटपर खेलते समय जलमें उतरा करे।

'तू मछली है।' कन्हाईने मस्तक झुकाकर सोचा। जब मैया उसका पक्ष नहीं लेती, तब दाऊको चिढ़ानेका कोई उपाय उसे स्वयं निकालना ही चाहिए।

'मैं क्या पानीमें रहता हूँ कि मछली हूँ?' दाऊने मुँह बनाया। उसे मछली बनना बिल्कुल पसन्द नहीं।

'मछली है तू, मछली।' श्यामने मैयाका हाथ छोड़ दिया और ताली बजा-बजाकर नाचते हुए, बड़े भाईको चिढ़ाने लगा। मैया अब इन दोनोंके बीचमें पड़ना नहीं चाहती। वह तो नाचते, मुख मटकाते श्यामकी शोभा देख रही है।

'तू ही कछुआ भी है और मछली भी।' दाऊने भी चिढ़ाया बदलेमें। 'हैं!' श्यामने नृत्य करना बन्द कर दिया। वह अकेला ही कछुआ भी और मछली भी। बड़ी विचित्र भङ्गीसे वह देख रहा है बड़े भाईकी ओर।

'तू काला-काला कछुआ है और गिलगिली-सी मछली है।' दाऊने विशेषण जोड़े और ताली बजाकर हँसने लगा।

लो, श्याम धपसे भूमिपर बैठ गया। वह दोनों हाथ खीझकर हिला रहा है। मस्तक झकझोर रहा है। ऊँ-ऊँ कर रहा है वह भले कछुआ या मछली होता, पर काला-कलूटा कछुआ और गिलगिली मछली एक साथ बनना उसे बहुत खराब लगता है।

दाऊ ताली बजाकर कूदता हुआ चिढ़ा रहा है। श्याम भूमि पर बैठा खीझ रहा है। अब वह लोट जायगा-भूमिपर लोट जायगा। क्यों चिढ़ाता है यह दाऊ उसे।

मैया झुककर पुचकार रही है। उठा रही है और दाऊको कृत्रिम रोषसे नेत्र बनाये हुए धमका रही है। भला, मैयाका यह कनूँ कछुआ-मछली कैसे हो सकता है।

१८-भोजन

'ले, मुख खोल।' बाबाने दही-भातका नन्हा-सा मीठा ग्रास उठाया, किंतु मोहनने हँसकर मुख घुमा लिया।

श्री व्रजराज भोजन करने बैठे हैं। उनकी थालीके पास दाहिनी ओर राम और बाँयीं ओर श्यामका आसन लगा है। बाबा दोनों बालकोंके मुखमें ग्रास देते जा रहे हैं।

बालक कहीं पण्डितोंकी भाँति चुपचाप गुमसुम भोजन करते हैं? श्याम बीच-बीचमें उठ खड़ा होता है। कभी वह नाचता है कभी मटकता है, कभी दाऊके पास आ बैठता है, कभी बाबाके पीछे जा खड़ा होता है। दाऊ अपने छोटे भाईके उठते ही उसीकी ओर देखने लगता है। बाबा बार-बार पुचकारकर कन्हाईको बुलाते हैं। वह अनेक बार मुख बन्द कर लेता है ग्रास लेनेके समय। बाबा उसे फुसलाकर खिलाते हैं। मैया पंखा झलती पास आ बैठती है, अपने लालकी लीला देख-देखकर मगन हो रही है। वह भी बार-बार श्यामको पुचकारकर भोजनके लिए प्रोत्साहित कर रही है।

दाऊ कभी स्वयं ग्रास उठाकर अपने छोटे भाईको खिलाता है, कभी बाबाको खिलाता है, कभी स्वयं खाता है। श्याम कभी थालीमें पूरा हाथ नचाता है, कभी हथेली धर देता है और कभी अंगूठे और तर्जनीसे एक चावल उठाकर अपने मुखमें रखता है बहुत धीरेसे।

मोहन कभी एक चावलका नन्हा ग्रास बड़े भाईके मुखमें झुककर देता है और कभी बाबाके मुखमें देनेको हाथ उठाता है। बाबा मुख झुकाकर उसके करका चावल ले लेते है मुखमें।

कभी बीचमें श्याम वही एक चावल का ग्रास लिये बाँयीं हथेली भूमिपर टेककर उठता है और मैयाके पास पहुँच जाता है। सब भोजन करते हैं तो मैया क्यों बैठी रहे। वह मैयाके मुखमें ग्रास देनेको हाथ बढ़ाता है। व्रजराजके अधरों-पर मुसकान आ जाती है। मैया हँसते-हँसते मुख हटा लेती है और किसी प्रकार हाथमें वह ग्रास ले लेती है। कन्हाई बीच-बीचमें मैयाका हाथ या साड़ी पकड़कर खींचता है-'चल, तू भी खा।' मैया हँसती है और किसी प्रकार मनाती है।

श्रीव्रजराजकी दाढ़ी और पेटपर उनके पुत्रोंने उजली बूँदें गिरा दी हैं। राम-श्यामके मुख, कर, वक्ष, उदर दधि-चावलसे भूषित हो रहे हैं।

'तेरा पेट भर गया?' मुख हटाते श्यामसे बाबाने पूछा। पेट भरना चाहिए, यह तो कन्हाईने सोचा ही नहीं था। भोजन तो मुखमें लेनेकी वस्तु है, उससे पेट भी भरा जाता है? बाबाका पेट तब अभी कहाँ भरा है। उसमें अभी एक छोटा गड्डा दीखता है। कन्हाई एक चावलका ग्रास उठाकर बाबाकी नाभिमें भर रहा है। बाबाका पेट भर रहा है वह, फिर यह मैया इतनी हँसती क्यों है?

१९-रूठा दाऊ

'कनूँ, तेरा दादा रूठा बैठा है। उसे मना ला, लाल।' मैया जानती है कि रूठनेपर दाऊको केवल उसका छोटा भाई ही मना सकता है।

श्याम रूठता है तो पृथ्वीपर लोटपोट हो जाता है। पैर तथा हाथ जोर-जोर से हिलाता है, मैयाके केश-वस्त्र नोचता है और जो वस्तु हाथमें आ जाय, उसे पटक देता है। दहेड़ियाँ और मटके फोड़ देता है। माखन फेंकने लगता है। दही-दूध पृथ्वीपर ढुलका देता है। जो भी उपद्रव करते बनता है, सब करता है।

दाऊ प्रसन्न हो तो भले मैयाकी चोटी खींच ले और दही-माखन फैलाकर खेले; किंतु रूठनेपर वह गुमसुम बन जाता है। घरके किसी कोनेमें जा बैठता है और कोई मनाये, कोई पुचकारे, आँख उठाकर देखेगा भी नहीं उसकी ओर।

कृष्ण अनेक बार रूठता है और उसके रूठनेमें भी एक छटा, एक आनन्द, एक मोहकता है। वह रूठे तो मैया मना लेगी; दाऊका रूठना-यह जन्मसे पूरे एक वर्षतक-श्यामसुन्दरके जन्मतक न तो बोला और न हँसा या मुस्कराया; गूँगा बना रहा वर्षभर। इसके रूठनेसे मैया डरती है। कोई नहीं चाहता कि वह रूठे। इसे डाँटनेकी बात भी कोई नहीं सोचता।

आज दाऊ रूठ गया है। मैया मोहनको डाँट रही थी, यह छोटे भाईको बचाने आया तो इसकी बात नहीं सुनी गयी। अब रूठकर कोनेमें जा बैठा है। कोई कन्हाईको कुछ कहे, यह बिल्कुल सह नहीं सकता।

'लाल!' मैया देखा इसे मुख लटकाकर हटते और चोंक गयी। झट पुचकारने लपकी, गोदमें उठाया, मुख पोंछा; किंतु दाऊ तो रूठ चुका। वह क्या इतनी सरलतासे मानता है? मैयाकी गोदसे उतर गया और कोनेमें जा बैठा है।

श्यामसुन्दर बड़े भाईके पास आ गया, कंधेपर हाथ रखकर दो क्षण पीछे खड़ा रहा, सामने आया और फिर बैठ गया। दाऊ तो देखता ही नहीं उसकी ओर। उसने तो मुख झुका रखा है और नेत्र नीचे कर लिये है। मोहनने बैठे-बैठे ही झुककर अपना मस्तक भूमिपर रख दिया है। ऊपर मुख करके वह झाँककर देख रहा है बड़े भाईके नेत्रोंकी ओर।

'दादा!' बड़ी मधुरतासे एक क्षण भूमि में सिर रखकर स्थिर रहनेके पश्चात् बुलाया श्यामसुन्दरने। अब क्या दाऊ रूठा ही रहेगा? अपने अनुजके इस भोले सुन्दर मुखको नहीं देखेगा वह? उसके नेत्र खुल गये हैं। देख रहा है वह कन्हाईकी ओर।

'दादा!' श्यामने मस्तक उठा लिया है और अपने बड़े भाईके दोनों कपोलोंपर अपने नन्हें कर रखकर मना रहा उसे। किंतु अब दाऊ रूठा कहाँ है? वह कहीं श्यामसे रूठ सकता है?

२०-निर्माण

'दादा, मेरा घड़ा देख।' श्यामसुन्दरने गीली मिटटीके एक छोटे गोले में थोड़ा गड्डा बना लिया है। वह प्रसन्न हो रहा है कि उसने इतनी शीघ्र घड़ा बना लिया।

'घड़ा कहीं ऐसा होता है! यह तो हँड़िया भी नहीं है।' यह मण्डलीभद्र चिढ़ाने लगा है मोहनको।

'तेरा कुछ नहीं बना है? तुझे कुछ बनाना नहीं आता।' अब झुंझलाकर कृष्णने अपना खिलौना पटक दिया और मण्डलीभद्रके सारे खिलौने मसल दिये। कोई इसे चिढ़ा दे तो फिर उसके खिलौने बचे कैसे रह सकते है। वह तो इस ओरसे सभी बालकोंके खिलौने हाथोंसे, पैरोंसे कुचलने, मसलने, बिगाड़ने लगा है। जो अपने खिलौने छिपाना-बचाना चाहते हैं उनसे झगड़ रहा है। उनके खिलौने बिगाड़नेकी छीना-झपटी कर रहा है। इसका खिलौना नहीं बना तो दूसरोंका कैसे बना रहेगा।

वर्षा होकर निकल गयी है। भूमि गीली है अब भी, किंतु आकाश स्वच्छ है। प्रात:कालीन धूपने वृक्षोंकी चोटियोंको सुनहला कर दिया है। झुँड-के-झुँड छोटे-छोटे बालक गोकुलमें नन्दभवनके सामने मार्गके दोनों ओर एकत्र हो गये हैं। अभी-अभी घरोंसे आये हैं वे। सबके केश सँवारे गये हैं। सबके नेत्र अंजन-रंजित हैं। सबके शरीर नाना अलंकारोंसे अलंकृत हैं। कुछ कछनी लगाये है, कुछ दिगम्बर है।

बालक गीली मिट्टीसे खिलौने बना रहे है। अपने हाथ-पैर उन्होंने मिट्टीसे सान लिये है। कोई खड़ा है, कोई बैठा है। वे अपनी समझसे घड़े, हंडियाँ, दीपक, गाय, बछड़े, मनुष्य आदि बना रहे हैं। मिट्टीसे, और फिर बड़े उल्लाससे दिखलाते हैं दूसरोंको।

कन्हाई झगड़ रहा है, उलझ रहा है, सबके खिलौने बिगाड़ रहा है। इसके कर-चरण तो मिट्टीमें सने ही हैं, स्निग्ध शरीर पर स्थान-स्थानपर मिट्टीकी रेखाएँ इस झगड़ेमें लग गयी हैं। अलकें बिखर गयी हैं। कछनी ढीली-ढीली हो गयी है। बच्चे अपने खिलौने बचानेके ही प्रयत्नमें हैं, पर यह बलात् झगड़ रहा है, झपट्टे मार रहा है और इतनेपर भी स्वयं रो रहा है। बड़ी-बड़ी बूँदे नेत्रोंसे कपोलोंपर आ गयी है इसके।

तू रो मत। मैं तेरे लिए घड़े बना देता हूँ। दाऊ अपने छोटे भाईको मना रहा है। अपने मिट्टीके सने हाथसे ही उसके अश्रु पोंछ रहा है।

'मैं बनाऊँगा, तू यहाँ बैठकर देख। तू मत बना।' कन्हाई चाहता है कि दाऊ अलग कुछ न बनाये। दाऊ भी बैठ गया है छोटे भाईके सामने। झुककर बड़े ध्यानसे वह कन्हाईके प्रयत्नको देख रहा है और सम्मति भी देता जाता है।

लोग कहते हैं कि यह इतना बड़ा ब्रह्माण्ड इसीने बनाया है। हाथमें मिट्‌टीका नन्हा गोला लिये जितने प्रयत्न, जितनी एकाग्रतासे वह एक खिलौना बनानेमें जुटा है, उतने प्रयत्न से क्या ब्रह्माण्ड बनाया होगा इसने ?

२१-उलझन

'कनूँ!' दाऊ क्या करे? उसका यह छोटा भाई बहुत अधिक चंचल है और प्राय: दाऊके शरीर पर ही लोटपोट हुआ करता है। कभी गलेमें दोनों हाथ डालकर पीठपर चिपकेगा, कभी पेटपर सिर रखकर सोना चाहेगा और कभी बगलमें सटकर बैठ जायगा। न इसे बड़े भाईके बिना चैन पड़ती और न दाऊसे इसके बिना दो क्षण रहा जाता है। आज इस चपलने अपना सिर बड़े भाईके सिरपर रखकर खूब हिलाया, रगड़ा और अब दोनों भाइयोंकी घुँघराली अलकें परस्पर उलझ रही हैं। दाऊ बहुत चाहता है कि सुलझा ले इस उलझनको, पर यह क्या उसके बसकी बात है? उसके छोटे-छोटे हाथ केशोंकी उलझन कैसे सुलझायें?

यह कनूँ पूरा नटखट है। केश उलझाकर अब हँस रहा है। ताली बजाकर मगन हो रहा है। इसे इसमें अब कोई झंझट ही नहीं दीखती कि अपना सिर बड़े भाईके सिरसे दूर हटाया नहीं जा सकता। यह तो सिर हिला-हिलाकर दाऊके प्रयत्नको और भी विफल किये दे रहा है। बार-बार अग्रजकी ओर देखता है और हँसता है। इसके खिले लोचन कहते हैं-'दादा। तेरी अलकें उलझ गयीं।' जैसे इसकी अलकें उनमें नहीं उलझी हैं।

केश खिंचेंगे तो कृष्ण को कष्ट होगा। दुखेगा इसका सिर। दाऊ अच्छी उलझनमें पड़ गया है। कन्हाई हँसता है, सिर हिलाता है और दाऊ को अपना मस्तक उसके मस्तकसे सटाये रखना पड़ता है।

'चल, मैयाके पास चलें।' हाथ पकड़कर बड़े भाईने छोटे भाईको उठाया।

नन्हा-सा दिगम्बर कृष्णचन्द्र-कटिमें मेखला और चरणोंमें रुनझुन करते नूपुर। बड़ा प्रसन्न है। अटपट पदोंसे नाचता-सा, झूमता-सा, बीच-बीचमें ताली बजाता जा रहा है। अपने अनुजका कन्धा पकड़े उससे कुछ अंगुल बड़ा और स्वर्ण-गौर अग्रज, कटिमें जरा-सी नीली कछनी बाँधे अपना सिर कुछ झुकाये बड़े प्रयत्नसे

इस चेष्टामें लगा है कि कहीं उसका मस्तक छोटे भाईके मस्तकसे कुछ अंगुल हट न जाये। उसका प्रयत्न बहुत कठिन है; क्योंकि यह कनूँ तो तनिक भी ध्यान ही नहीं देता कि अलकें उलझी हैं।

'मैया!' दाऊने मैयाको पुकारा। मैया ही पास आ जाय तो इस प्रयत्नपूर्वक चलनेके श्रमसे बचा जा सके। 'कनूँने मेरे केश उलझा दिये है।' कन्हाईको इस अभियोगमें कोई आपत्ति नहीं। वह ताली बजाकर हँस रहा है।

'यह क्या किया तुम दोनोंने?' मैया हँस उठी देखते ही। वह अपने दोनों पुत्रोंको सामने बैठाकर उनकी उलझी अलकें सुलझाने लगी है।

२२-दो देवता

'बाबा, मुझे एक देवता ला दो—बड़ा-सा देवता।' श्रीब्रजराजके अङ्कमें दाहिनी जानुपर मृदुल स्वर्ण-प्रतिमाके समान दाऊ और बायें जानुपर विकच-इन्दीवर-श्याम मोहन आ बैठे हैं। कन्हाईने कल बाबाको पूजा करते देखा है। उसे भी एक देवता लेना है। किंतु बाबाके छोटेसे शालग्राम उसे पसंद नहीं। वह बड़ा देवता लेगा। उसने बाबाकी घनी यत्र-तत्र कुछ पकी दाढ़ीमें अपने नन्हें गुलाब-से हाथ उलझा दिये।

'तू देवताका क्या करेगा?' बाबाने पुचकारते हुए पूछा।

'पूजा करूँगा।' अपनी तोतली बोलियोंमें मोहन कह गया।

'तेरा देवता तो यह दाऊ है?' चपल कन्हाईके हाथमें कोई देवप्रतिमा पड़ जाय तो उसका क्या होगा, कौन कह सकता है। फिर छोटे भाईका देवता बड़ा भाई नहीं है, यह कोई कह कैसे सकता है।

'और यह कनूँ?' दाऊने दोनों हाथोंसे बाबाके दोनों कपोल पकड़े। यह कोई बात है कि वे देवता हैं, उनका छोटा भाई देवता नहीं है।

'हाँ, हाँ, यह भी देवता हैं।' बाबाको हँसी आ गयी। देवताका भाई भी तो देवता ही होगा।

'दाऊ दादा देवता है!' श्यामको अपनी धुन है। यह बाबाकी गोदसे उतरकर ताली बजाता नाच रहा है। चरणोंके नूपुर और कटिकी मेखला रुन-झुन कर रही है। भालपर कुंचित केश लहरा रहे हैं।

'दादा, तू आ!' अन्तमें बड़े भाईका हाथ पकड़कर वह घरमें ले जानेको खींचने लगा।

× × × ×

'तुम दोनों क्या कर रहे हो?' मैया देखती ही रह गयी अपने पुत्रोंकी वह शोभा।

'पूजा कर रहा हूँ।' श्यामने देखा मैयाकी ओर, तनिक हँसकर वह फिर अपनी पूजामें लग गया।

दाऊ दादा तो घरका देवता है। वह कहीं भाग तो जायगा नहीं। मोहनने बाबाको पूजा करते कल देखा है। बाबा अपने छोटे-से काले-काले देवतापर दूध, दही, घी, चीनी, चन्दन, फूल आदि बारी-बारीसे डाल रहे थे। देवतापर एक ही दिन सब चीजें डाल दी जायें, ऐसी क्या जल्दी है। जब जिस दिन जो चीज मिलेगी, वह डाल दी जायेगी। देवता साथ ही तो है। आज दही मिल गया है, कन्हाई अपने देवताकी पूजा कर रहा है उससे और बाबाने दाऊसे भी तो बताया है कि श्याम भी देवता है; फिर दाऊ ही क्यों पूजा न करे?

दहीके मुख तक भरे छोटे-से मटकेके पास राम-श्याम एक दूसरेकी ओर मुख करके पास बैठे हैं। दोनों दिगम्बर देवता नन्हें हाथोंमें दही भरकर एक दूसरेके सिर, कंधे, पेट और पैरपर कहीं भी डाल देते हैं, डालते जा रहे हैं। भूमिपर चारों ओर दही फैला है और उसमें बैठे अपनी गोदके इन दोनों देवताओंको अब मैया सिरसे पैरतक शुद्धोदक स्नान कराना चाहती है।

२३-भेंट

'दादा!' बड़ी कठिनाई तो यह है कि इस समय सिर उठा कर इधर-उधर देखा नहीं जा सकता और यह दाऊ तो पूरा मौनी बाबा है। पुकारनेपर भी चुपचाप देखता और मुस्कराता रहता है। उत्तर तो कदाचित् ही देता है।

किसीने श्यामसुन्दरके नन्हें-नन्हें दोनों हाथ सुन्दर पके फलोंसे भर दिये हैं। नन्हा कन्हाई, उसकी नन्हीं-सी अंजलि-कितने फल आ सकते हैं उसमें? परन्तु लाल, पीले, रंग-बिरंगे बड़े सुन्दर फल हैं। कृष्णचन्द्र अपने पेटके सहारे अंजलि लगाये बहुत सावधानीसे सम्हल-सम्हलकर चलता, सम्हालकर लिये आ रहा है उन फलोंको। कोई फल नीचे न् गिर जाय।

दिगम्बर श्याम—चरणोंके नुपुर और कटिकी किङ्किणी इस मन्द गतिमें क्वचित ही तनिक-सा शब्द कर पाती हैं। मस्तक झुकाकर फलोंको देखने और गिरनेसे बचानेके प्रयत्नमें व्यस्त है मोहन। घनी अलकें झुककर मुखमण्डलपर चारों ओरसे लटक आयी हैं। पदोंकी गति शिथिल और अरबरातीसी अस्तव्यस्त है।

'दादा!' खड़े होकर कन्हाईने सिर उठाया और कुछ झुके हुए, फलोंको सम्हाले हुए ही देखा उसने। वह क्या, सामने बैठा है उसका दादा। पालथी मारे आँगनमें बैठा है और छोटे भाईकी ओर देखकर मन्द-मन्द हँस रहा है। मोहनके अधरोंपर भी स्मित आया। उसने फिर मस्तक झुका लिया। चरणोंमें उल्लसित गति आ गयी। फद्-फद् जल्दी-जल्दी चलनेके प्रयत्नमें लग गया है वह, किंतु इतने फलोंको लेकर चलना क्या सरल काम है?

'दादा!' श्यामसुन्दर दाऊके पास आकर धीरेसे भूमिपर बैठ गया। सारे फल बड़े भाईके सामने फैला दिये-धर दिये उसने अपने फैले हुए दोनों पैरोंके बीचमें और दोनों हाथ भूमिपर टेककर, मस्तक झुकाकर बड़ी प्रसन्नतासे दो क्षण देखता रहा फलोंको। देहलीसे यहाँ तक बीस डगकी भारी दूरी इतने फल अंजलि और पेटपर लादकर यह सुकुमार चलकर आया है-थक नहीं गया होगा? किंतु इसे थकानका ध्यान नहीं। यह तो प्रसन्न हो रहा है-'कितने फल लाया हूँ मैं। कितने सारे-कितने सुन्दर।'

पालथी मारे नीली कछनी मात्र बाँधे गोरे दाऊके सामने दोनों चरण दोनों ओर फैलाकर उनके बीचमें रंग-बिरंगे फल बिखेरे, दोनों हाथ भूमिपर टेके, उसका यह नव-नील नीरद दिगम्बर अनुज! अब यह वैसे ही बैठा मुस्कराता अग्रजके मुखकी ओर मुख ऊपर उठाकर मुग्ध भावसे देख रहा है-'दादा क्यों उसीको देख रहा है? कितने अच्छे फल हैं-खा न इन्हें!' किंतु दाऊ तो एक फल उठाकर उसीके मुखसे लगाने जा रहा है।

२४-दौड़

'दादा!' श्यामसुन्दर दौड़ता-दौड़ता खड़ा हो गया है। बड़े भाईको पुकार रहा है।

'आ, आ जा तू।' दाऊने मुड़कर पीछे देखा और हाथ फैलाकर छोटे भाईको बुलाया।

'नहीं, तू यहाँ आ!' कन्हाईने वहीं खड़े-खड़े कहा और अपनी कछनी खोलनेमें लग गया। यह कछनी भी एक उपद्रव है। यह दौड़ने नहीं देती। मैया जब पीताम्बरकी कछनी बाँध देती है-बहुत थोड़ी देर रह पाती है वह श्यामकी कटिमें। यदा-कदा ही मोहन उससे प्रसन्न होता है। प्राय: वह उसे खोलकर चाहे जहाँ फेंक आता है।

तू थक गया? दाऊ अपने छोटे भाईके पास लौट आया। उसका यह छोटा भाई कितना सुकुमार है। यह थक तो गया ही होगा।

तू आगे मत दौड़! श्यामको अभी दौड़नेकी उमंग है। दौड़ना है। क्यों दौड़ना है? किसलिये दौड़ना है? कितना दौड़ना है? कहाँतक दौड़ना है? यह सब कुछ नहीं। दोनों भाइयोंको दौड़ना है।

अब कछनी फेंककर श्याम दौड़ पड़ा है। वह लदबद दौड़ता जा रहा है। हिल रही हैं घुघराली अलकें, हिल रहा है वक्षपर नन्हें मुक्ताफलोंका हार, हिल रहे हैं दोनों कर-कमल। लाल-लाल चरण फद्-फद् करते उठ-गिर रहे हैं। नूपुर एवं किङ्किणी शब्द कर रही हैं। आगे-आगे दिगम्बर नीलसुन्दर दौड़ रहा है और उसके पीछे कमरमें नीली कछनी बाँधे स्वर्ण-गौर उसका बड़ा भाई दौड़ रहा है, जान-बूझकर कुछ मन्द गतिसे।

'दादा!' कन्हाई खड़ा हो गया। बड़ा प्रसन्न है वह। अपने दाऊ दादासे आगे दौड़ आया है, इस उमंगमें पीछे मुड़कर खड़ा हो गया है। दोनों नन्हें हाथोंसे ताली बजा रहा है।

श्यामसे दो पद दूर आकर दाऊ खड़ा हो गया है। वह क्या कम उमंगमें है? उसका छोटा भाई इतना प्रसन्न है। उसके कनूँके इन्दीवर-सुन्दर मुखपर स्वेदके

...ण झलमल कर रहे हैं और ताली बजा रहा है वह। दाऊ एकटक देख रहा है अपने अनुजको। उसकी उमंग ही दूसरी है।

'आ, दौड़।' कन्हाई फिर दौड़नेको मुड़ पड़ा है।

'मैं तो थक गया।' दाऊने साथ नहीं दिया।

'तू थक गया दादा?' श्याम लौट आया है बड़े भाईके पास और उसका हाथ पकड़कर झूम रहा है। हँस रहा है।

कौन थका है? इन दोनोंमें कोई थका हो या न थका हो, देखनेवालेके पलक अवश्य थकित हो रहेंगे।

२५-शयन

'दादा।' कन्हाई नींदमें ही अपने हाथसे अपने बड़े भाईको टटोल लेता है। दाऊके हाथ उसके शरीरसे हटे और वह चौंका। वह करवट लेगा और आँखें बंद किये ही पुकारेगा तथा टटोलेगा। दाऊ अपने छोटे भाईको निद्रामें भी अपने हाथसे मानो सम्हाले रहता है। यदि करवट लेनेमें वह हाथ हट जाय, मैयाके थपकी देनेपर भी श्याम दादाको ढूँढेगा।

श्यामके नीलकमलके समान सुन्दर शरीरपर दाऊका प्रफुल्ल पद्मकर या फिर दाऊके देह पर मोहनका नन्हा-सा अरुण सरोज-पाणि—दोनों भाई एक दूसरेको छूते हुए ही सो सकते हैं। एकके बिना दूसरेको निद्रा ही नहीं आती।

'दादा!' श्यामने हाथसे टटोला। शय्यापर हाथ पड़ रहा शिथिल होकर और वह फिर कुनमुनाया। फिर पुकारा उसने और टटोला। उसका दादा कहाँ गया? वह नेत्र बंद किये ही उठ बैठा सुकुमार चरणोंसे ओढ़ा हुआ पीताम्बर हटाकर शय्या पर। दोनों हाथोंसे नेत्र मले उसने।

'दादा!' श्यामने नेत्र मलते हुए, जम्हाई लेते हुए पुकारा। अब नेत्र खोलकर देखा उसने इधर-उधर। यह दाऊ दादा इतना सबेरे क्यों उठ गया? क्यों शय्यासे उतरकर दूर भूमिपर बैठा है? श्याम अभी नींदमें है। वह कुछ सोचता नहीं, कुछ विशेष देखता नहीं। उसने अपने भाईको देख लिया है-बस। अब वह

शय्या को दोनों हाथोंसे पकड़कर पेटके बल होकर दोनों पैर नीचे लटकाकर उतर रहा है।

दाऊ आज पहले उठ गया। वह धीरेसे नीचे उतर आया। अब मैयाके पास भूमिपर बैठ गया। मैया दही मथ रही है। मक्खन निकले तो वह झटसे लेकर अपने छोटे भाईके पास चला जाय। कनूँ सोता ही रहे, तब भी उसके मुखमें थोड़ा-सा मक्खन रख देगा वह। बार-बार मन्थन-पात्रमें झाँकता है—कितनी देर है मक्खन निकलनेमें? अभी नहीं निकला? अब तक नहीं निकला? वह मैयासे बार-बार शीघ्र माखन देनेको कह रहा है।

'दादा!' डगमग पैरों मोहन आया। दाऊ अबतक छोटे भाईका पुकारना सुन नहीं सका था। अब उसे आया देखकर हँस पड़ा। किंतु श्यामकी नींद पूरी नहीं हुई है। वह तो आया और बड़े भाईकी गोदमें सिर रखकर वहीं सो गया भूमिपर।

नन्हेंसे दाऊकी गोदमें सिर धरे उसका नन्हा भाई सो रहा है। बड़ी-बड़ी पलकें बंद करके, दोनों हाथ शिथिल डालकर कन्हाई भूमिपर ही सो रहा है, घुँघराली अलकोंसे घिरा उसका मुख—श्वाससे हिलता वक्ष एवं उदर।

दाऊ अपने भाईको देख रहा है और बिना बोले मैयाको हाथसे मना कर रहा है-'दही मत हिला। कनूँ सो रहा है यह। इसे जगा मत।'

२६-विनोद

'आ, दूध पीयेगा?' श्रीव्रजराज दोनों घुटनोंमें दोहनी दबाये गो-दोहन कर रहे हैं। पीछे कौन आकर खड़ा हुआ, यह जाननेकी उन्हें आवश्यता नहीं। दाऊ, श्याम, भद्र, सुबल, तोक-कोई भी हो, बाबाके लिए सब अपने ही हैं। नूपुरोंकी रुनझुन ध्वनिसे केवल इतना समझा उन्होंने कि कोई शिशु है और वह उनके पीछे उनके कंधेको सहारा बनाकर खड़ा हुआ है।

'ले, मुख खोल तो!' बाबाने देखा कि उनका कृष्ण अब उनके पीछेसे सामने आ खड़ा हुआ है। वह अभी-अभी नींदसे उठकर, मैयाकी आँख बचाकर गोष्ठमें चला आया है। अलकें बिखरी हैं, भाल का काजल-बिन्दु भालपर और नेत्रोंका

अंजन कपोलोंपर फैला है। अब भी नेत्रोंमें आलस्य है। खड़ा-खड़ा वह दूधकी उजली धार बड़े ध्यानसे देख रहा है। उसका यह दिगम्बर रूप...।

'दूध पीयेगा?' बाबाने बड़े स्नेहसे फिर पूछा।

'हूँ।' सिर हिलाकर स्वीकार करते हुए अपना छोटा-सा मुख खोल दिया उसने।

दूधकी धारा सीधे मुखमें पड़ी; पता नहीं कैसी गुदगुदी-सी लगी और मोहनने मुख बंद कर लिया। पतले लाल-लाल अधरोंपर पड़कर बिखर उठी वह उज्ज्वल धारा। नील कमल-से मुखपर दूधकी बूँदें चमकने लगीं। अलकोंमें कुछ उज्ज्वल सीकर उलझ गये।

'मुख खोल!' बाबाने फिर प्यारसे कहा, किंतु श्यामने हँसते हुए मुख घुमा लिया दूसरी ओर। उसे दूधकी धारा जीभपर लेनेमें गुदगुदी होती है।

'अब यह क्या करता है?' बाबाने डाँटा नहीं, उनके स्वरमें प्रसन्नतापूर्ण वात्सल्य ही था। मोहनने अपनी दाहिनी हथेली फैला दी है और उसे पात्रके ऊपर करके दूधकी धारा रोक रहा है। हाथपर दूधकी धारा लेना उसे बहुत रुचा है। हँस रहा है वह।

'दादा!' श्याम हटा नहीं, हाथ भी नहीं हटाया उसने। बड़े भाईको देखकर उसने पुकारा और अपनी हथेलीकी ओर देख लिया। उसकी भङ्गिमा कह रही थी-'दादा देख तो! यह कितना अच्छा खेल है।'

दाऊ अपने छोटे भाईको ढूँढ़ता अकेला गोष्ठमें आ पहुँचा है। श्री नन्दबाबा घुटनोंमें दोहनी दबाये दोनों हाथोंसे खूब बड़ी, चाँदी-सी उज्ज्वल कामदाको दुह रहे हैं। उनके एक ओर श्याम और एक ओर राम खड़े हैं। दोनोंने एक-एक हाथसे बाबाका कंधा पकड़ रखा है और दूसरी हथेलीपर दूधकी धार ले रहे हैं। लाल-लाल हथेलीपर उजली धारा। दूधके बिन्दु दोनोंके दिगम्बर अङ्गों पर और बाबाके मुख, दाढ़ी, पेटपर बढ़ते जा रहे हैं। दोनों बार-बार खिलखिलाकर-खिलखिलाकर हँसते हैं और देखते हैं हाथपर पड़ी दूधकी धाराको। बाबा आनन्द-विह्वल हो रहे हैं अपने पुत्रोंका विनोद देखकर।

दूध-का सा उज्ज्वल कामदा का बछड़ा फुदक रहा है, बार-बार सूँघता है राम-श्याम या बाबाको। उसकी माँके दूधका इतना सुन्दर उपयोग हो सकता है? वह प्रसन्नतासे कूद रहा है।

२७-आनन्दकन्द

'क्या है रे? क्यों भागता है तू?' माता रोहिणी बैठी हैं बहुत-से वस्त्र सामने रखकर। उन्हें कोई-न-कोई व्यवस्था करनी ही रहती है। अब यह हँसता, खिलखिलाता कृष्णचन्द्र आया और उनके सामने रखे वस्त्रोंके ढेरमें छिपने लगा है। अपने ऊपर बहुत-से वस्त्र डालकर घुटनोंके बल भूमिमें चिपक गया है वह। माता उसका छिपना देखकर हँस रही हैं। उनके नन्हें कन्हाईने कितना सुन्दर स्थान चुना है छिपनेके लिए।

'कनूँ!' यह आया ताली बजाता उछलता-सा हँसता दाऊ। अपने छोटे भाईको यह छूने आया है। दौड़ा-दौड़ा।

'कनूँ!' श्याम कहीं चुपचाप पड़ा रह सकता है? फिर इस समय तो उसे हँसी आ रही है। वह अपने ऊपर लदे रंग-बिरंगे वस्त्र हिला रहा है। दाऊ उन वस्त्रोंके ढेरको दोनों हाथोंसे पकड़ कर लेट-सा गया धीरे-से उनपर सिर रखकर छातीके बल।

'दादा!' श्यामने एक ओर से अपना छोटा-सा सिर निकाला और दाऊके पेटके नीचेसे सरक कर निकल गया। अब वह माता रोहिणीकी पीठसे चिपककर ताली बजा रहा है।

'राम! अपने छोटे भाईको दौड़कर गिराना नहीं।' किंतु यह माता रोहिणीका राम या कन्हाई क्या इस समय उनकी बात सुन सकते हैं? दोनों अपने आनन्दमें, अपनी क्रीड़ामें मग्न हैं। दोनों हँसते हैं, ताली बजाते हैं और माँके इधर-उधर दौड़ते हैं एक दूसरेको छूने तथा बचानेके लिए। श्याम कभी माताकी पीठसे चिपकता है, कभी बगलमें खड़ा होता है और कभी सामने। माता जिसे भी पकड़नेको हाथ बढ़ाती है, वही दूर हट जाता है हाथसे। माता रोहिणी के सामने पड़ा नवीन कौशेय वस्त्रोंका ढेर--परन्तु ये दोनों कहाँ उसे देखते हैं। अपनी दौड़ा-दौड़ीमें उस ढेरको अपने छोटे-छोटे चरणोंसे ये रौंदते ही जा रहे हैं।

'दाऊ! आ, लाला; कलेऊ कर ले।' यह मैया आ गयी अपने दोनों शिशुओंकी क्रीड़ा देखने। वह क्या देखती नहीं है कि इन दोनोंको अभी उसकी बात सुनायी पड़ ही नहीं सकती?

'दादा।' श्यामसुन्दर माता रोहिणीकी ओटसे मैयाके पीछे जा छिपा है। वह मैयाके दोनों पैरोंके बीचमें खड़ा है और दोनों हाथोंसे मैयाके वस्त्रको लेकर अपनेको प्राय: पूरा ढक लिया है उसने। उसका अलकोंसे घिरा, हास्यसे खिला मुख ही बाहर झाँक रहा है।

मैया और माता रोहिणी अपने आनन्दकन्दकी इस आनन्दक्रीड़ामें मग्न हो रही हैं, डूब-सी गयी हैं आनन्दसिन्धुमें और यह दाऊ हँसता हुआ फिर दौड़ा है इस आनन्दघन अपने अनुजको पकड़ने।

२८-शिक्षण

'मैं शङ्ख बजाऊँगा।' श्यामसुन्दर दाऊको लिये बिना तो कोई काम करनेसे रहा। अब यह बड़े भाईका हाथ खींच रहा है कि वह इसे बाबा का शङ्ख बजाना सिखा दे।

'चल।' दाऊको ही कहाँ कम कुतूहल है। उसीको कहाँ शङ्ख बजाना आता है। दोनों भाई एक दूसरेका हाथ पकड़कर चल पड़े हैं।

एक बार इधर-उधर देखकर कि कोई देखता तो नहीं कृष्णचन्द्रने दोनों हाथोंसे उठा लिया बाबा का शङ्ख और लाकर दे दिया बड़े भाईको।

'फूँ,' नन्हें लाल हाथोंमें बड़ा-सा शङ्ख लेकर दाऊ मुखसे लगाये है। उसके छोटेसे मुख की वायु शङ्ख में 'फू' करके निकल जाती है। कन्हाई ध्यानसे बैठा हुआ बड़े भाईकी ओर देख रहा है।

'दादा, मुझे दे तो।' उठकर खड़ा हो गया कृष्णचन्द्र और दोनों हाथोंमें शङ्ख ले लिया उसने। जिसके नन्हें हाथ अभी प्रयत्नपूर्वक शङ्खको सम्हाल पाते हैं, वह शङ्ख बजा लेना चाहता है।

'पुर्र' शङ्ख फूँकसे नहीं बोलता तो मोहनने उसके छिद्रमें अधर लगाकर अपने मुखसे ही शब्द कर दिया है और अब शङ्खको अधरोंसे हटाकर दाऊकी ओर मुसकराता हुआ मानो कह रहा है-'देख दादा! मैंने इतना तो बजा ही दिया इसको।'

'ये दोनों कबसे प्रयत्न कर रहे हैं, तुम इन्हें सिखा दो न।' मैया पता नहीं कबसे द्वारकी ओटमें खड़ी हैं और अपने दोनों कुमारोंका उद्योग देख रही हैं। अब बाबाको आते देखकर अनुरोध किया उसने।

'तुम शङ्ख बजाओगे? शच्छा! आओ, मैं सिखाऊँ।' बाबाको देखकर दोनों भाई चौंके थे, किंतु बाबा तो हँस रहे हैं। प्रसन्न हैं वे। श्यामसुन्दर शङ्ख लिये उनके आगे आ खड़ा हुआ है।

'पहिले अपने दादाको बजाने दे।' बाबाके बैठते ही कृष्णचन्द्र उनकी गोदमें जा बैठा हे। दाऊको अपने आगे बैठा लिया है उन्होंने अब वे बताने लगे हैं कि किस प्रकार मुख सिकोड़कर कैसे शङ्ख मुखसे लगाना चाहिए और कैसे फूँकना चाहिए। स्वयं बजाकर बता रहे हैं वे।

'धूँ! धूँ!' पता नहीं इस नन्हें दाऊकी फूँकमें कितनी शक्ति है। यह तो पहिली ही बार बजाने लगा है शङ्खको जोरसे और बजाता ही जा रहा है। उत्साहके मारे बजाते-बजाते खड़ा हो गया है यह।

'दादा, मैं बजाऊँगा।' श्याम अब दाऊके पास पहुँच गया है। दोनों हाथोंसे शङ्ख पकड़ लिया है इसने। शङ्ख लेकर यह सीखनेके लिये बाबाके पास आ गया है।

'फू, पुर्र!' बहुत नन्हा है कन्हाई। शङ्खके लिए पर्याप्त फूँक कहाँ दे पाता है यह सुकुमार। बाबा कहते हैं-'अब तुझे कल सिखाऊँगा।'

'मैं दादासे सीखूँगा।' यह कोई बात है कि दाऊ शङ्ख बजा ले और श्याम न बजा पाये। अब दादाको बजाना आ गया है, उसे शिक्षक तो मिल ही गया।

अब बजाकर रहेगा वह।

२९-रूठा कन्हाई

'कनूँ! लाल! उठ तो। देख तो तेरे शरीरमें कितनी धूल लग गयी है। तेरे केश धूलसे सन गये हैं। देख, तुझे कौन बुला रहा है।' मैया पुचकार रही है, दुलार रही है, बार-बार गोदमें लेनेका प्रयत्न कर रही है।

कन्हाई आँगनसे भूमिपर चित्त पड़ा है। उसके नीलसुन्दर अङ्गोंमें तथा घुँघराली अलकोंमें रज लिपट गई है। अंजन-रंजित बड़े-बड़े नेत्रोंमें आँसूकी बूँदें झिलमिला रही हैं। वह अपने लाल-लाल चरण और कर उछाल रहा है। मैया उसे उठाती है तो वह और भी छटपटाता है। मैयाके नाक, मुख, हाथ नोंचता है। बार-बार छूकर पृथ्वीपर लोटता है। वह एक ही धुन लगाये है-'दाऊ?'

'दाऊने तेरी रोटी छीन ली? बहुत बुरा है दाऊ। मेरा लाल तो राजा है। उठ! मैं तुझे दूसरी उससे अच्छी रोटी देती हूँ।' मैया दूसरी रोटी ले आयी बहुत-सा माखन चुपड़कर।

'दाऊ!' श्यामने उठकर दूसरी रोटी हाथमें ले ली और बैठ गया।

मैं दाऊको अब नहीं छीनने दूँगी, मारूँगी उसे। मैयाको क्या पता कि बात क्या है?

'दाऊ!' कन्हाईने बड़े जोरसे मस्तक इधर-उधर हिलाया और फिर रोनेका स्वर किया। अब वह मैया पर खीझ रहा है। अभी उसे बोलना तो आता नहीं। वह केवल दो अक्षरोंके एक दो नाम ही तुतलाते हुए बोल पाता है। मैया क्यों नहीं समझती कि उसका लाल चाहता है कि वह दाऊको लाकर उसके आगे बैठा दे।

'ले, दाऊ आ गया। क्यों रे?' हाथमें एक रोटी लिये दाऊ अपने छोटे भाईके पास आ रहा है। श्याम रो रहा है, यह देखकर वह और वेगसे आ रहा है। मैयाके डाँटनेपर उसका ध्यान ही नहीं।

'दाऊ?' श्यामने भी कहाँ मैयाकी बात सुनी। वह भी रोटी लिये बड़े भाईके पास घुटनोंके बल सरक चला है। मैया समझ ही नहीं पाती कि वह क्या करे। दोनों भाइयोंमें कोई झगड़ा भी है, ऐसा तो दीखता नहीं।

बड़ा भाई छोटे भाईके आगे बैठ गया नील कमलके पास स्वर्ण-सरोजकी भाँति। छोटे भाईने दूसरा हाथ रोटी लेनेके लिए बढ़ाया और बड़े भाईके हाथकी रोटी भी उसके हाथ में आगयी।

दाऊ चाहता है, कि तनिक-सी रोटी तोड़कर वह श्यामके मुखमें डाल दे। श्याम सिर हिलाता है और रोटियाँ दूर हटा लेता है। यही तो झगड़ा है। बड़े सवेरे कन्हाईने मैयासे एक छोटी रोटी ली और घुटनोंके बल घिसकता वह बड़े भाईके पास पहुँचा। श्याम चाहता था कि दाऊ रोटी छुए नहीं, पर मुखसे काटकर पूरी खा

ले। दाऊने जरा-सा तोड़ लिया छोटे भाईके मुखमें देनेको और रूठ गया कन्हाई। रोटी भूमिपर डालकर वह मैयाके पास आकर रोने-मचलने लगा।

अब श्यामके दोनों हाथोंमें रोटियाँ हैं। वह दाऊके आगे जमकर बैठा है। उसके अधरोंपर हँसी है और पलकोंमें आँसू उलझे हैं। दोनों रोटियोंको एक साथ वह दाऊके मुखसे बार-बार लगा रहा है। जब दाऊ हाथ बढ़ाता है, वह दोनों हाथ दूर हटाकर सिर हिला देता है इधर-उधर जोरसे।

मैया भी वहाँ है—अब दोनोंमें-से किसी का ध्यान इधर नहीं।

३०-झाँ

'आ, आ, लाल! राम, आ बेटा!' श्रीउपनन्दजीकी पत्नी आज मैयाके पास आयी हैं। वे बड़ी हैं, व्रजरानीने आदरपूर्वक बैठाया है उन्हें और माता रोहिणी भी उनके समीप आ बैठी है। वे आयी हैं राम-श्यामको दो क्षण अङ्कमें लेनेका परमानन्द प्राप्त करने और ये दोनों चपल खंभेके पीछे जा छिपे हैं संकोचसे। दोनों हाथ आगे करके बड़े उल्लाससे वे कभी कन्हाई और कभी दाऊको पुचकारकर बुलाती हैं; किंतु जब वे हाथ फैलाकर बुलाती हैं, तब दोनों खंभेकी ओटसे झाँकते मुख हँसते हुए दूसरी ओर छिप जाते हैं।

'आ जा लाल! अपनी ताईकी गोदमें आ जा!' मैया पुचकारती है, किंतु दोनोंको तो आज 'झाँ' करनेमें रस आ रहा है। वैसे तो ताईके घर जाकर ऊधम मचा आते हैं; किंतु आज पता नहीं कहाँकी लज्जाने घेर रखा है इन्हें।

'आ, बेटा! तू मेरे पास तो आ!' माता रोहिणी जैसे ही इन दोनोंकी ओर झुकती हैं, दोनों हँसते हुए भाग खड़े होते हैं और दूसरे खंभेकी आड़में जा छिपते हैं।

खंभेसे चिपका खड़ा है दाऊ और बड़े भाईकी पीठसे सटा है श्यामसुन्दर। दोनोंकी नीली-पीली कछनी सटी हैं। दोनोंके नूपुरसहित चरण एवं कङ्कणयुक्त कर पास-पास हैं। कभी खंभेके एक ओर और कभी दूसरी ओर अलकोंसे घिरे दोनोंके चन्द्रमुख साथ-साथ झाँकते हैं और कभी दोनों मुख खंभेके दोनों ओर दिखायी देते हैं। दोनों हँस रहे हैं। दोनोंके अधरोंपर उज्ज्वल दन्तकान्ति दूधकी धारा-जैसी झलक रही है। बड़े मनोहर हैं दोनोंके अंजन-रंजित बड़े-बड़े लोचन।

'हम तीनों नेत्र बंद करती हैं। देखें हमारे लाल किसकी गोदमें बैठते हैं।' उपनन्द-पत्नीने दोनों हाथ नेत्रोंपर रख लिये। मैयाने, माता रोहिणीने भी ऐसा ही किया।

बड़े भाईने छोटे भाईके मुखकी ओर देखा। दोनों खंभेकी ओटसे निकलकर बहुत धीरे-धीरे आ रहे हैं। किसकी गोदमें बैठेंगे, अभी इन्होंने स्वयं निश्चय किया नहीं जान पड़ता। उपनन्दपत्नीने अँगुलियोंकी संधिसे देखा, अँगुलियाँ तनिक हिलीं और भागे दोनों। हँसते हुए दोनों खंभेकी ओर अपने नन्हें चरणोंके नूपुर रुनझुन करते दौड़ गये।

छिप गये हैं फिर ये खंभेकी आड़में। माताएँ पुचकार रही हैं और झाँक रहे हैं खंभेके इधर-उधरसे बार-बार दोनों चन्द्रमुख।

३१-सत्प्रयत्न

'कृष्ण कहाँ है? कहाँ चला गया वह?' बाबा जिस शीघ्रता एवं आतुरतासे पूछते आये हैं, उसने मैयाको, माता रोहिणीको, दासियोंको, घर आयी गोपियोंको-सबको डरा दिया है।

'क्या हुआ? क्या हुआ मेरे लालको?' मैया व्याकुल हो गयी है। पता नहीं, फिर कौन-सा उत्पात आया। नित्य कोई-न-कोई उपद्रव मैयाके इस सुकुमार हृदयघनके पीछे लगा ही रहता है।

'उसे कुछ हुआ नहीं है।' बाबा ने आतुरतापूर्वक बताया। 'वह शालग्रामजीको उठाकर भाग गया है। कहाँ है वह? दाऊ भी तो दीखता नहीं है।'

'हे भगवान्!' मैयाके प्राण लौट आये मानो। वह उठ खड़ी हुई। गोपियाँ और दासियाँ मुसकरा उठी हैं, किंतु मैया ढूँढ़ने चल पड़ी है। 'बड़े ऊधमी हैं दोनों। अभी तो यहीं खेल रहे थे, चले कहाँ गये? अरे दाऊ! ओ कृष्ण! कहाँ हो तुम दोनों?' मैया पुकार रही है।

'मैया!' यह मीठी तोतली बोली। अच्छा तो ये दोनों गोरस रखनेके घरमें बैठे कुछ कर रहे हैं। छिपे होते तो क्या मैयाकी पुकार का उत्तर देते।

'तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो?' मैया शीघ्रतासे समीप आ गयी है।

एक दूध-भरे मटकेके पास सटकर कृष्णचन्द्र बैठा है। इस दिगम्बरने एक हाथ भूमिपर टेक रखा है और एक डुबा रखा है दूधके पात्रमें। इसके पास ही दोनों हाथ भूमिपर टेके दाऊ उसी पात्रपर झुका है और बड़े ध्यानसे पात्रमें कुछ देख रहा है।

'काला देवता अच्छा नहीं, सफेद करता हूँ मैं! दादा देख यह सफेद होता है न?' कालीसी बटिया अपने दूध में डूबे लाल-लाल हाथमें लिये श्यामसुन्दर ध्यानसे देख रहा है। शालग्रामजीपर जो दूधकी उज्ज्वलता आयी है, उससे दोनों भाई बड़े प्रसन्न हैं। सफल हो रहा है उनका सत्प्रयत्न। उनके बाबाका यह काला देवता सफेद बन रहा है।

'ठाकुरजीको यह दूधमें नहला रहा है।' पास आते व्रजराजकी ओर मैया ने देखा और किंचित् हँसी। उसके लालने भगवान् नारायणका कोई अपराध नहीं किया, इससे उसका चित्त प्रसन्न हो गया है।

'बाबा' मैं तुम्हारे ठाकुरजीको उजला कर रहा हूँ। मोहनने हाथ पात्रसे निकालकर भोलेपनसे दिखा दिया बाबाको।

'इनको लो! तुझे उजले देवता दे दूँगा।' बाबाने पुचकारा। भगवान नर्मदेश्वरकी उजली बटिया कृष्णचन्द्रको बहुत प्रिय है। कौन जाने कन्हाईके लिए भगवान् नारायणने भी अपना एक शुक्लाम्बरधर शशिवर्ण रूप रख छोड़ा हो।

३२-परिचय

'श्यामसुन्दर! आओ, लाल? देखो, मैं तुम्हारे लिए कितने सुन्दर खिलौने लाया हूँ?' आज कन्हाईके नानाजी पधारे हैं गोकुल। ढेरों उपहार लाये हैं वे अपने साथ। बाबाने बड़े सत्कारसे बैठाया है उन्हें। मैयासे मिलने घरमें तो तब जायेंगे वे, पहले उनकी इच्छा इस नीलसुन्दरको अपने हाथों खिलौने देनेकी है। इसे गोदमें लेकर घरमें जाना चाहते हैं।

मैयाने राम-श्यामको अभी-अभी सजाया है। अभी कलेऊ करके दोनों भाई घरसे निकले हैं। धूलिकी एक रेखातक अभी अङ्गोंपर नहीं लगी है।

बड़ा संकोची है कृष्णचन्द्र। अपने नानाजीको देखकर यह बड़े भाईके पीछे जा छिपा है। झाँककर देख रहा है उनकी ओर। खिलौने और मिठाइयोंका प्रलोभन भी इसको नहीं खींच पाता है।

'राम आओ! तुम तो आओ, लाल!' और दाऊके लिए तो जैसे कहीं संसारमें कोई अपरिचित है ही नहीं। यह अपने छोटे भाईको छोड़कर कहीं किसीसे घुलता-मिलता नहीं, कहीं झिझकता भी नहीं। यह आया राजकुमारके समान धीर स्थिर गतिसे और नानाजीको नन्हें हाथ जोड़कर उनसे सटकर चुपचाप बैठ गया। कन्हाई अब बाबाके पीछे जा छिपा है।

'तुम घोड़ा लोगे?' बड़े सुन्दर खिलौने हैं; पर दाऊको न घोड़ा चाहिए न हाथी। उसके अनुजने कुछ लिया ही नहीं तो वह कुछ कैसे ले सकता है।

'नानाजीके पास जा, बेटा!' बाबा श्यामको पुचकार रहे हैं, प्रोत्साहित कर रहे हैं। हाथ पकड़कर उसे इन्होंने उनकी गोदमें बढ़ा दिया है। सब कहीं धूम करनेवाला यह आज पूरा संकोची बन गया है।

कितने क्षण टिकता है इस चपलका संकोच? इसे किसीसे परिचय करते कितनी देर लगती है। दो क्षणमें यह घुल-घुलकर बातें करने लगा है नानाजीसे। उनकी गोदमें लेट गया है और दोनों पैर नचा रहा है, दोनों अरुणकर-कमल उनकी उजली दाढ़ीमें उलझा रहा है और कह रहा है-'सब खिलौने मैं लूँगा!'

'सब तेरे ही तो हैं।' भर गया कण्ठ उन वृद्धका।

'सब मेरे हैं। यह घोड़ा मेरा है।' बड़े उत्साहसे कन्हाई नानाजीकी गोदमें ही उठकर बैठ गया है।

'दादा बैठ तू मेरे घोड़ेपर! बैठ!' बाबा हँस रहे हैं और मुसकरा रहे हैं नानाजी। अपने छोटे-से घोड़ेको दाऊके आगे खड़ा करके बड़े भाईका हाथ पकड़कर यह आग्रह कर रहा है और सो भी अकेले नहीं बैठाना चाहता दाऊको। कहता है-'तू बैठ तो मैं तेरे पीछे बैठूँगा।'

३३-गोपाल

'लाल तू इस प्रकार भूमिपर क्यों सो रहा है? देख, मैंने तेरी शय्या बिछा दी है।' मैया अपने चपल पुत्रसे सदा सावधान रहती है। अब यह बछड़ेके पैरोंके बीचमें आ सोया है। कहीं बछड़ा चौंककर उठ खड़ा हो तो ...! बहुत धीरे-से ही मोहनको उठाना है यहाँसे।

'तू गौरवको भी ले चल!' कामदाका दूध-सा उज्ज्वल बछड़ा। श्यामको यह बहुत प्रिय है। यह कैसे बने कि कन्हाई शय्यापर सोये और यह गौरव भूमिपर सोता रहे।

'तुम दोनों उठो! अपने इस सखाको भी ले चलो!' मैया हँसकर रह गयी। उसका कृष्ण कितना भोला है।

आँगनमें भूमिपर बछड़ा मजेसे आँखें अधमुंदी करके लेटा है। यह श्यामसे खेलने प्रायः घरमें चला आता है। नवजात, कोमल उज्ज्वल बछड़ा और उसके मुखके पास बैठा दाऊ अपने नन्हें हाथोंसे उसका मुख तथा गला सुहला रहा है। बछड़ेने दाऊकी गोदमें मुख रख दिया है। बछड़ेके पिछले पैरोंपर अपनी घुँघराली अलकोंसे मण्डित सिर रखकर दिगम्बर श्याम उसक पेटपर लेटा है। अपने बड़े भाईकी ओर और मैयाकी ओर देखकर मन्द-मन्द मुसकराता जाता है। कितना सुन्दर है उसका शयन-स्थल!

'गौरव उठ!' दाऊने बछड़ेका मुख दोनों हाथोंमें लेकर पुचकारा।

'आ' हम शय्यापर सोयेंगे। श्याम भी उठा और मुखके पास आ खड़ा हुआ।

'चल!' बछड़ा जैसे इन दोनोंकी बातें समझता है। उसने एक बार पैर कड़े करके फैलाये और अँगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। अब एक ओरसे दाऊ और एक ओरसे कन्हाई उसको पकड़कर ले चलना चाहते हैं।

'तू आ! यहाँ सो जा!' बछड़ा फुदक रहा है-कूद रहा है। वह कभी दाऊको, कभी श्यामको, कभी मैयाको और कभी पलंगको सूँघता है और उछलता है। श्याम उसे पुचकारता है, बुलाता है, शय्यापर चढ़नेको कहता है। बछड़ा ऐसे नहीं समझता तो मोहन पलंगपर चढ़ गया है और लेटकर अपने बगलका स्थान बछड़ेको

हिलाकर हाथसे बुला रहा है। दाऊ नीचे खड़ा बार-बार प्रयत्न कर रहा है। जैसे बिल्ली और उसके बच्चे शय्यापर सो जाते हैं-कन्हाईके पास वैसे ही यह गौरव क्यों नहीं सो सकता? दोनों भाई यह समझ नहीं पाते।

'तू ले आ उसे! श्याम अब मैयासे आग्रह कर रहा है।'

'उसे अभी नहीं नींद आती। वह खेलेगा अभी।' मैया हँसती जा रही हैं। परंतु वह खेलेगा तो कन्हाई ही क्यों सो जाय? वह भी खेलेगा उसके साथ। वह शय्यासे उतर रहा है।

३४-भ्रातृप्रेम

'मैया! दादा मुझे चिढ़ाता है। वह मुझे कोयल-जैसा काला कहता है। उसने सब सखाओंको सिखा दिया है। सब मुझे ही चिढ़ाते हैं।' श्याम बहुत अप्रसन्न है। क्यों सब चिढ़ाते हैं उसे? सब तो सब, उसका दादा भी उसे चिढ़ाता है।

मुखपर अलकें घिर आयी हैं। लाल-लाल हो रहा इसका मुख। नेत्र भरे-भरे-से हैं। जल्दी-जल्दी आया है और मैयाके आगे खड़े होकर हाथोंसे नेत्र मलते हुए अभियोग उपस्थित किया है इसने।

'दाऊ बड़ा वैसा है, मेरे लालको चिढ़ाता है। आने तो दे उसे यहाँ।' मैयाने अपने लालको गोदमें खींच लिया। अंचलसे मुख पोंछा और अलकें सुधारने लगी। 'तू अब इन सबके पास मत जा। यहीं मेरे पास खेल।'

कन्हाई प्रसन्न हो गया है। मैयाके मुखकी ओर वह मुसकराता हुआ देखने लगा है। मैयाने अभी-अभी ही माखन निकाला है। मिश्री मिलाकर अपने हाथसे कृष्णचन्द्रको उसने माखन खिलाना चाहा, पर कन्हाईने मुख हटा लिया। हाथ बढ़ाकर माखनका स्वर्णपात्र अपने हाथमें ले लिया उसने।

'तू अब जाता कहाँ है? कहीं जा मत! यहीं बैठ!' श्याम नवनीत लेकर उठ खड़ा हुआ मैयाकी गोदसे। वह कहाँ जायगा, सो मैया जानती है। 'सब तुझे खिझाते हैं और तू उन्हींके पास जा रहा है? यहाँ बैठ मेरे सामने!'

किया क्या जाय? मोहनने मुख उठाकर देखा तो मैयाका मुख उसे गम्भीर लगा। अब इसकी बात न मानी जाय तो यह मारेगी। चुपचाप बैठ गया मैयाके आगे सिर झुकाकर; किंतु अकेले उससे माखन खाया जा सकेगा? बायें हाथमें छोटा-सा स्वर्णपात्र है माखनसे भरा और दाहिने हाथकी अँगुलीसे माखन उठाना चाहता है यह। खानेकी बात तो दूर, माखनमें अँगुलीतक डुबायी नहीं जाती इससे।

'खा ले! बहुत मीठा माखन है, बेटा!' मैयाने स्नेहसे पुचकारा। श्यामसुन्दरने केवल मुख उठाकर देखा मैयाकी ओर। यह क्या? इसके नेत्र तो भर आये हैं। इसका मुख तो उदास हो रहा है।

'क्या हुआ तुझे? क्यों रोता है तू?' मैयाने उठा लिया अङ्कमें। 'दादा!' बड़े-बड़े बिन्दु टप-टप गिरने लगे कपोलोंपर। मैयाके आँचलमें मुख छिपा लिया इसने।

'तो रोता क्यों है तू? वह आ रहा है तेरा दादा!' मैयाको हँसी आ गयी। बड़ा भोला है उसका यह लाल। दाऊ चिढ़ाये, तंग करे या और कुछ करे; पर बड़े भाईके बिना इससे रहा नहीं जा सकता।

'दादा!' शीघ्रतासे मैयाकी गोदसे सिर उठाकर देखा श्यामसुन्दरने। अरे! यह तो सचमुच उसका दादाही आ रहा है। नवनीतका पात्र लिये हँसता हुआ मोहन दौड़ चला है अपने अग्रजकी ओर उल्लासमें भरा।

३५-गोष्ठशायी

'तू गोबरमें चलेगा तो मैं मैयासे कह दूँगा।' दाऊ अपने छोटे भाईके खेलमें बहुत कम बाधा देता है। कन्हाई जो कुछ करना चाहे, उसमें उसका साथ देना ही बड़े भाईको आता है; किंतु कभी-कभी यह चपल कुछ ऐसा ऊधम करने लगता है, जिससे डर लगता है कि मैया इसे डाँटेगी या मारेगी। आज मैयाने घरसे निकलते-निकलते कहा है-'अपने छोटे भाईको सम्हालना। गोबर या कीचड़में मत खेलना।' और यह कनूँ तो गोबरमें ही बैठने जा रहा है। दाऊने श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ा।

'दादा, मैं तो सोता हूँ।' कन्हैया वहीं बैठ गया। आज इसे भी हठ सूझी है। इतना हरा-भरा ठंडा गोबर है, इसमें बैठनेसे कोई क्यों रोकता है उसे?

× × × ×

'श्याम कहाँ है?' मैया अकेले दाऊको देखते ही डर गयी। कटिमें नीली-नीली कछनी लगाये तीन बरसका नन्हा-सा दाऊ; किंतु सब उसे 'बल' कहते हैं। वह बड़े वृषभके भी सींग पकड़ लेता है तो फिर वृषभको झुके ही रहना पड़ता है। वह जब अपने छोटे भाईके साथ रहता है, मैया तनिक निश्चिंत रहती है। कन्हाई भी बड़े भाईके संकोचसे बहुत चंचलता नहीं करता। अब दाऊ यहाँ आ गया, पता नहीं अकेला कृष्ण क्या चपलता करे।

'वह गोबरमें सो रहा है।' दाऊने उलाहना दिया-'मेरी बात नहीं मानता।'

मैयाने सबेरे-सबेरे दोनों पुत्रोंको उबटन-तेल लगाकर स्नान कराया था। नेत्रोंमें काजल लगाया था। ललाटोंपर काजलके बिन्दु लगा दिये थे। दोनोंके केश सँवारकर पुष्प गूँथ दिये थे उनमें। आभूषण पहिनाये थे और कछनी बाँध दी थी दोनोंकी कमरमें। कलेऊ कराकर तब खेलने को छोड़ा था। मोहन गोबरमें लथपथ लोटेगा, यह तो मानी-जानी बात थी। उसे गोबर, धूलि, कीचड़में खेलना बहुत रुचता है; परंतु कहीं वह और कोई चंचलता न करे। मैयाने दाऊको गोदमें उठाया और शीघ्रतासे गोष्ठमें पहुँची।

गायें चरने चली गयी हैं। चारों ओर गोबर पड़ा है। गोमूत्र कीचड़ हो रही है स्थान-स्थानपर। अभी गोष्ठ स्वच्छ नहीं हुआ। वह रहा श्यामसुन्दर। लाल-लाल नन्हें चरण फैलाये, एक कुछ कड़े गोबरके ऊपर मस्तक रखे मजेसे लेटा है। चरणोंमें, करोंमें, शरीरपर यत्र-तत्र हरा-पीला गोबर लगा है। अलकोंका एक भाग लथपथ होकर चिपक गया है। वह मन्द-मन्द मुस्कराता, एक हाथकी अँगुलियाँ नचाता लेटा-लेटा देख रहा है। कटिकी पीली कछनी, गलेका मुक्ताहार-सब गोबरमें सने हैं उसके। वह उठा--मैयाको देखते ही उठा। दाऊ मैयाकी गोदमें है तो वही क्यों भूमिपर रहे? दोनों भुजाएँ फैला दी उसने गोदमें आनेको। अब मैया क्या अपनी साड़ीके गोबरसे सननेकी बात सोच सकती है? वह तो बायीं भुजा बढ़ाकर, कुछ झुककर गोदमें उठा रही है अपने मोहनको।

३६-निद्रालु

'राम! सो मत।' बाबा कभी दाऊको और कभी कन्हाईको सावधान कर रहे हैं। कहनेको तो दोनों कहते हैं कि नहीं सो रहे हैं; किंतु नेत्र दोनोंके झपक रहे हैं। दोनों बार-बार जम्हाई लेते हैं। श्यामने तो बाबाके कंधेपर सिर टिका भी दिया है।

'कृष्णचन्द्र! तू सो रहा है।' उठकर बैठ जा, बेटा! बाबा कहते तो हैं, पर उठा नहीं पा रहे हैं। उनका वात्सल्य बड़े असमंजसमें उन्हें डाले है। इन दोनोंकी निद्रामें बाधा देनेको जी नहीं चाहता और दोनोंने अभी दूध नहीं पिया है। सो जायँगे तो दूध पिलाना बहुत कठिन होगा।

'मैं सो नहीं रहा हूँ। तुम कहानी कहो, बाबा!' कृष्णचन्द्र बीच-बीचमें बोलता है तो उसका स्वर ही कह देता है कि वह सो ही जानेवाला है। दूध पीनेकी चिन्ता भला, इन दोनोंको है कहाँ?

जाड़ेके दिन, गोष्ठमें अग्नि जलाकर उसके चारों ओर गोप बैठे हैं। श्रीब्रजराज तथा उनके सभी भाई एकत्र हैं। आजकल यही अवसर होता है गोपोंके लिये ब्रजराजके पास बैठनेका और उनके लिए एक और भी बड़ा प्रलोभन है यहाँ। सायंकालका भोजन करके राम-श्याम प्राय: बाबाके पास घरमें-से आ जाते हैं। दोनों थोड़ी देर खेलते हैं, हँसते हैं, अनेक प्रकारकी भोली-भाली बातें करते हैं। किसका हृदय इस सुखका स्वाद पानेके लिए आतुर नहीं होगा?

आज भी दोनों बालक घरमेंसे हँसते दौड़ते आये। वे एक दूसरेको छूनेकी चेष्टा कर रहे थे। कभी एक गोपके पीछे उनकी पीठसे सटकर खड़े होते, कभी दूसरेकी। दाऊ भाग रहा था और श्याम छूना चाहता था। अग्निकी लाल-लाल ज्योतिमें उनके चमकते खिले मुख।

सुकुमार बालक थक जायँगे थोड़ी देरमें। ब्रजराजने उन्हें कहानी सुनानेका लोभ देकर दौड़नेसे रोका। दाऊ बाबाकी दाहिनी और उनसे सटकर बैठ गया और कन्हाई उनकी गोदमें जा बैठा। अब कहानी प्रारंभ हुई। थोड़ी देर दोनोंने 'हूँ-हाँ' की और निद्रा तो आनी ही ठहरी इस समय।

'तू सो गया लाल!' बाबाने तनिक हिलाया। उनके कंधेपर सिर रखकर श्यामसुन्दर सो गया है। बंद हो गयी हैं उसकी सुन्दर पलकें। अलकें मुखको घेरकर झुक आयी हैं।

'राम! आओ, घर चलें!' किंतु बाबासे उठँगकर राम भी सो गया है। बाबाके हिलानेपर वह नेत्र मलने लगा है और फिर सो जाना चाहता है।

'राम! उठो, बेटा!' बाबा हाथ पकड़कर उठा रहे हैं। नेत्र बंद किये ही वह उठकर खड़ा तो हो गया, पर झुकता जा रहा है। बहुत सावधान करने पर कभी-कभी नेत्र खोलता है और फिर बंद कर लेता है। कंधेपर सोये श्यामसुन्दरको लिये दाहिने हाथसे दाऊका हाथ पकड़े बाबा घरमें जा रहे हैं। यह दाऊ अटपटे पदोंसे किसी प्रकार चल रहा है नींदमें। बाबा उसे सम्हाले हैं, बार-बार सावधान कर रहे हैं।

कोई कहता है-'नित्य जागरूक हैं ये दोनों बन्धु।'

भला, बाबाके कंधेसे लगे निद्रित कन्हाई और बाबाके हाथके सहारे झुके-से पड़ते दाऊकी यह छटा उसने काहेको देखी होगी कभी।

३७-गो-दोहन

'बाबा! मैं गाय दुहूँगा।' कन्हाई बड़े सबेरे एक छोटी-सी दोहनी लेकर गोष्ठमें पहुँच गया है। कई दिनोंसे बराबर वह बाबासे मचल रहा है कि उसे गाय दुहना सिखा दिया जाय। जब महर्षि शाण्डिल्यने गो-पूजन कराके गो-दोहन-संस्कार करा दिया उससे, तब उसे गाय क्यों नहीं दुहने दिया जाता?

लगभग तीन वर्षका कृष्णचन्द्र—अभी मैयाने मुख भी नहीं धोया है इसका! अलकें बिखरी हैं मुखपर। अंजन कपोलोंतक फैला है और कटिकी कछनी गिरनेको हो रही है। चरणोंके नूपुर और कटिकी मेखला—रुनझुन करता भाग आया है यह और बाबाके दोनों पैरोंसे लिपट गया है। मैया घरमें पुकारती ही रह गयी, किंतु इसे शीघ्रता थी। नित्यकी भाँति देर होनेपर गोप सब गाएँ दुह लेंगे और फिर सायंकाल तो बाबा मना ही कर देते हैं।

'तू कौन-सी गाय दुहेगा ?' जब यह चपल रातमें सोते समय अपनी दोहनी शैयाके नीचे रखकर सोया, तब आज इसकी हठ मान ही लेना उत्तम है। बाबाने मना नहीं किया।

'मैं कामदाको दुहूँगा।' श्यामसुन्दर प्रसन्न हो गया। उसने बाबाके पैर छोड़ दिये हैं और कामदाका बछड़ा खोलने दौड़ गया है; किंतु यह बछड़ा अपनी मैयाका दूध पीने क्यों नहीं जाता? यह तो कन्हाईको सूँघ-सूँघकर उसके चारों और फुदकने लगा है। अब बाबा इसे पकड़कर कामदाके थनोंसे लगायेंगे।

'दादा! आ, तू भी कामदाको दुह।' मोहन हर्षसे नाच उठा है। यह उसका अग्रज भी एक छोटी दोहनी लिये आ गया है। मैयाने इसका मुख धो दिया है। कछनी संभाल दी है। अलकें सँवारी हुई हैं। वैसे अपने छोटे भाईके पास आनेकी शीघ्रतामें मैयाको इसने एक मालातक अलकोंमें लगानेका अवकाश नहीं दिया है।

'तू ऐसे बैठ!' बाबाके आगे बैठा कृष्णचन्द्र। एक प्रकारसे उसे गोदमें लेकर बाबा दुहना सिखा रहे हैं। दाऊको गाय दुहना आ गया है। वह कामदाकी दूसरी ओर बैठा है। दोनों भाई आमने-सामने बैठकर एक ही गाय दुहेंगे। बाबा बता रहे हैं अपने हाथोंमें श्यामका हाथ लेकर-'ऐसे गायका थन पकड़।'

'दादा।' कन्हाई दोनों हाथोंसे ताली बजा रहा है। उसने दूधकी उजली धार अपने हाथसे निकाल ली है। क्या हुआ जो धार पात्रमें न पड़कर भूमिपर चली गयी।

'दादा! दादा!' लेकिन दादा क्या करे। इस चंचल कनूँने दूधकी धार उसके मुखपर मार दी है। नेत्रमें दूध चला गया है। आँख मलते दाऊकी अलकों और कपोलपर दूधकी उजली बूँदें—दाऊ हँस रहा है—कितना प्रसन्न है उसका भाई। कन्हाई ताली बजाता हुआ बाबाकी गोदमें हँसीसे झुका जा रहा है।

३८-साहसी

'माँ! माँ! देख मेरा झूला!' श्यामसुन्दर बड़े ऊँचे स्वरसे माता रोहिणीको पुकार रहा है दोनों हाथ उठाकर। माता उसे ढूँढ़ने ही भवन-द्वारपर आयी हैं।

'अरे, तू कहाँ जा बैठा है। उतर आ! उतर आ, बेटा!' माताका हृदय धक्से हो गया देखते ही। यह दो वर्षका उनका नन्हा कन्हाई टूटकर गिरे हुए अर्जुन वृक्षकी इतनी ऊँची शाखापर चढ़ गया है! हे नारायण...।

दोनों अर्जुन वृक्ष भूमिपर जड़समेत उखड़े पड़े हैं। उनके पत्ते मुरझाये हुए लटके हैं। भूमिसे ऊपर उन वृक्षोंकी जो शाखाएँ हैं, उनपर ऊपर-नीचे, इधर-उधर छोटे-छोटे बालक लदे हैं। वे सब शाखाओंपर चढ़-उतर रहे हैं। शाखाओंको हिला रहे हैं। सब प्रसन्न हैं। हास्य और कोलाहल फूटा पड़ रहा है यहाँ चारों ओर। डेढ़से तीन-चार वर्षतकके ये बालक-ये दोनों वृक्ष गिरे क्या, इन सबोंके लिए खेलका बहुत बड़ा साधन मिल गया।

'हिला दादा! और, और हिला!' श्रीकृष्ण वृक्षकी सबसे ऊँची शाखाकी फुगनीपर चढ़ गया है। उसके छोटे-छोटे चरण शाखाके दोनों ओर झूल रहे हैं। दोनों नन्हीं भुजाओंसे कभी शाखा पकड़ लेता है, कभी मगन होकर भुजाएँ ऊपर उठा देता है। कटिमें बहुत जरा-सी पीली कछनी है। वक्षपर मुक्तामाल है। भालपर अंजनबिंदुको गोदमें लिये अलकें खेल रही हैं। श्यामसुन्दरका सुन्दर मुख आनन्दसे खिला है। इसके अंजनरंजित लोचन उत्फुल्ल हो रहे हैं। हिलती डालपर झूलनेका आनन्द ले रहा है यह।

कटिमें नीली कछनी बाँधे अपने छोटे भाईसे कुछ पीछे स्वर्ण-गौर दाऊ उसी शाखापर दोनों ओर चरण किये बैठा है। दोनों हाथोंसे उसने शाखा पकड़ रखी है। दोनों चरण नीचेकी मोटी शाखापर टिक जाते हैं, जब वह खड़ा होता है। बार-बार खड़े होकर वह शाखाको हिला रहा है। उसका अनुज झूलनेका आनन्द लेना चाहता है, बार-बार मुख पीछे करके उसकी ओर देखता है, इससे शाखा हिलानेका उसका उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। बहुत प्रसन्न हो रहा है वह अपने उद्योगसे।

'राम! अपने छोटे भाईको लेकर शीघ्र उतर आ!' माता रोहिणी वृक्षके नीचे आ गयी हैं; परन्तु ये नटखट बालक उनकी बात सुनते कहाँ हैं। ये दुगुने उत्साहसे शाखा हिलाने लगे हैं। माता शीघ्रतासे भवनमें जा रही हैं। ब्रजरानीको भेजे बिना ये ऊधमी माननेवाले थोड़े ही हैं। बड़े साहसी हैं ये चपल!

३९-नटखट

'दादा! क्या करता है तू?' यह कन्हाई पूरा नटखट है। स्वयं कुछ करके उसका दोष दूसरेको लगा देना इसके लिए बहुत साधारण बात है। अब बाबाके पेटपर मुँह लगाकर भड़से कर दिया इसने फूँक मारकर और दादाका नाम लेकर, बाबाकी ओर देखकर हँस रहा है।

आज दोपहरीमें भोजन करके बाबा विश्राम कर रहे हैं। बहुत थोड़ी देर लेटते हैं वे इस समय। गर्मीकी दोपहरीमें बालक कहीं धूपमें न भाग जायँ, इसलिए राम-श्यामको भी वे अपने साथ ले आये हैं गोष्ठमें।

बाबा पलंगपर चित्त पड़े हैं। उनके दाहिनी ओर नीली कछनी बाँधे दाऊ उनके अध-पके रोमोंवाली तोंदपर सिर रखे आड़ा लेटा है। उसका पूरा ध्यान इस समय बाबाकी गहरी नाभिपर है और चुपचाप उसमें अपनी पतली तर्जनी घुमाता हुआ देख रहा है उसी तर्जनीको।

श्याम लेटनेको तो बाबाके बायें लेट गया है, पर वह क्या चुपचाप पड़ा रह सकता है? कभी वह उठकर बैठता है, कभी बाबाके वक्षपर सिर रखता है, कभी उनकी दाढ़ीमें दोनों हाथ उलझाता है। यह दाऊ इस प्रकार चुपचाप क्यों पड़ा है? श्यामको यह अच्छा नहीं लग रहा है। वह बड़े भाईको छेड़ना चाहता है। कभी-कभी दाऊकी अलकोंमें हाथ भी डालता है, पर दाऊ तो उसकी ओर देखकर तनिक हँस भर देता है और फिर लग जाता है बाबाकी नाभिमें अँगुली घुमानेमें। पता नहीं, कौन-सा गंभीर निरीक्षण कर रहा है यह।

श्यामसुन्दर उठकर बैठ गया और झुककर उसने दाऊके मुखके सामने मुख ले जाकर बाबाके पेटपर भड़से कर दिया। किंतु दादा तो इसपर भी हँसकर ही रह गया। वह तो सिर ही नहीं उठाता। श्यामको अच्छा खेल मिल गया है। वह बार-बार मुँह लगाता है बाबाके उदरसे और बार-बार शब्द करता है।

'तू तो मेरा पेट जूठा कर रहा है!' बाबाने बायें भुजामें धीरेसे लपेटकर कन्हाईको ऊपर वक्षपर खींच लिया है। आनन्द, स्नेह, उल्लासके मारे रोम-रोम खड़ा हो रहा है उनका।

'मैं कहाँ जूठा करता हूँ।' हास्यके समय कृष्णचन्द्रके अधरोंपर यह दन्तावलिकी उज्ज्वल छटा! नेत्र तिरछे करके बड़े भाईकी ओर भी देखता जाता है यह।

'तू नहीं जूठा करता, जूठा तो करता है तेरा यह मुख।' दोनों हाथोंसे अपने लालका नन्हा-सा मुँह पकड़े, भावभरे दृगोंसे उसे देखते ये व्रजराज!

'बाबा! कहानी कहो।' यह दाऊ सहसा अपना नाभि-निरीक्षण छोड़कर बाबाके मुखके पास मुख करके लेट रहा है। इस प्रस्तावमें अब उसके छोटे भाईका आग्रह निश्चय समर्थक बनेगा।

४०-उत्सुकता

'मैया, माखन दे न?' किंतु अभी मैया माखन कहाँसे दे दे। माखन तो अभी निकला ही नहीं है।

आज दोनों भाई बड़े सबेरे उठ गये हैं। मैयाके लिए यह कम उलझनकी बात नहीं है। अब ये दोनों उसे कोई काम नहीं करने देंगे। इनके मुख भी अब वह माखन देनेके पीछे ही धुला सकेगी।

मैया अपनी ओरसे बहुत ही शीघ्र उठी थी। उसने देख लिया था कि उसके दोनों कुमार आनन्दसे सो रहे हैं। इन दोनोंके लिए जिस दिन वह अपने हाथसे दही मथकर माखन निकाल पाती है, बड़ा सुख मिलता है उसे। उसके पुत्र जितने स्वादसे उसका निकाला माखन खाते हैं, दूसरे किसीके भी दही मथनेसे वैसा स्वाद उन्हें माखनमें नहीं आता। श्याम तो अनेक बार रूठता है कि मैयाने, पता नहीं, किसका निकाला खट्टा माखन दे दिया उसे।

मैया धीरेसे उठकर दही मथने लगी थी। पुत्रोंके उठनेसे पहले माखन निकाल लेना था; किंतु पता नहीं, कब ये दोनों उठ बैठे। दोनोंमें-से कोई एक उठे तो दूसरेकी नींद अपने-आप टूट जाती है। दोनों शय्यासे उतरे और आकर मैयाके दोनों ओर उसके पैरोंसे लिपटकर खड़े हो गये। बड़े स्नेहसे मैयाने अपने पुत्रोंका मुख देखा और उसके हाथ मंथन-रज्जुको अधिक शीघ्रतासे खींचने लगे।

'माखन दे।' दोनों मचल रहे हैं। दोनोंकी अलकें मुखके चारों ओर बिखरी हैं। दोनोंके नेत्रोंके नेत्रोंका अंजन कपोलों-तक फैल रहा है। दोनोंके भालका कज्जल-बिंदु लंबा-चौड़ा, टेढ़ा-तिरछा हो गया है। दोनोंके नेत्रोंमें अभी आलस्य है। श्यामकी कछनी कहीं खुलकर गिर गयी है और दाऊकी कछनी भी ढीली-ढाली हो रही है।

'तनिक रुक जाओ! अभी माखन निकलता है। तू कितना माखन लेगा?' मैया फुसलाये रखना चाहती है।

'इतना माखन लूँगा मैं।' कृष्णचन्द्रने दोनों हाथोंसे बताया। बड़ी देर हो रही है माखन निकलनेमें। दोनों भाई मैयाका पैर छोड़कर उस बड़े भारी मटकेको दोनों ओर पकड़कर उसमें झाँककर देख रहे हैं। दोनोंकी अलकोंपर, भालपर, नासिकापर, कपोलोंपर नन्हें उज्ज्वल बिन्दु बढ़ते जा रहे हैं।

'दादा! माखन आ गया?' कन्हाई उस खंभेका जिसके सहारे मटका रखा है, चक्कर काटकर अपने बड़े भाईके दाहिनी ओर आ सटकर खड़ा हो गया है। मटकेमें झाँकते समय उसके नेत्रमें कोई नन्हीं बूँद पड़ गयी है। शीघ्रतासे पलकें मारता मुस्कराकर बड़े भाईकी ओर देख हँस रहा है। बड़ी उत्सुकता है दोनोंमें। मैया बार-बार टोकती है, मना करती है श्यामको कि वह मटकेमें हाथ न डाले। दोनों झुके हैं, मटकेमें नाचते दहीको बराबर देख रहे हैं।

४१-रेणुक्रीड़ा

'दादा! तू अपना पेट मत हिला।' श्यामसुन्दर अपने छोटे हाथोंकी नन्हीं अंजलिमें कोमल बालुका भरकर दाऊके पेटपर डालता जा रहा है। दाऊ बीच-बीचमें पेट फुला देता है और सब बालू खिसक जाती है।

प्रात: नन्दव्रजके छोटे-छोटे शिशु श्रीयमुनाजीके पुलिनपर खेलने आ गये हैं। प्रभातका समय, तनिक-तनिक धूप, ठंडी नरम रेत—बालकोंको खेलने के लिए मनमाना क्षेत्र मिल गया है।

बहुत थोड़े हैं, जिनकी कटिमें ठिकानेसे कछनी बँधी है। प्राय: दिगम्बर हैं। बहुतोंने कछनी खोल फेंकी है। कछनीके वस्त्रका इससे सुन्दर क्या उपयोग होगा कि उसमें रेत भरी जाय?

रेतसे भरी अलकें, धूसर देह, सुन्दर नन्हे शिशुओंका समुदाय। कोई लोट-पोट होता है, कोई पैरोंसे रगड़ता है, कोई 'कुआँ' खोदता है, कोई टीला बनाता है और कोई दूसरेके ऊपर रेत उछालता है। एक-दूसरे का चरण पकड़कर रेतमें घसीटते हैं। ताली बजाते हैं। कूदते हैं। नाचते हैं। दौड़ते हैं और लदबद गिरकर लोट-पोट होते हैं।

'मोहन, तुझे भूख लगी होगी। बहुत देर हो गयी। आ बेटा!' माता रोहिणी तनिक दूर खड़ी पुकार रही है। दूसरी ओर जल भरनेको जाती तथा जल भरकर लौटती गोपियाँ खाली या भरे घड़े लिये ठगी-सी खड़ी हैं।

'दादा! हम तुझे देवता बनायेंगे।' श्यामको अवकाश नहीं माँकी पुकार सुननेका। गोपियोंकी ओर देखनेकी बात उसे स्मरण ही नहीं आ सकती इस समय।

दाऊ लेटा है रेतमें। शिशुओंकी एक भीड़ उसके चारों ओर बैठी है। सब उसे रेत से ढक देनेके प्रयत्नमें हैं। वह बीच-बीचमें कुलबुला पड़ता है। सब रेत खिसक जाती है। वह हँसता है और सब खिलखिलाकर हँसते हैं।

'तू अब हिल मत!' श्याम ठीक तो कहता है। कहीं देवता भी हिला करता है। बड़े भाईके चरण सखाओंके साथ पकड़कर हँसते हुए दूरतक घसीट ले गया वह और अब फिर अंजलिमें रेत भरकर पेटपर डालने लगा है।

दाऊके पास अंजलिमें रेत लिये धूलिधूसर कन्हाई। रेतसे भरी इसकी अलकें। दूर पीछे पड़ी पीली कछनी। साथमें बैठे हँसते शिशु। घाटके मार्गमें ठगी खड़ी गोपियाँ और माँ पुकार रही हैं-'मोहन, आजा बेटा! राम, बेटा! छोटे भाईको ले आ!'

४२-कीचड़में

'दादा, दौड़ तू!' वर्षा हुई है, भूमिपरसे जल बह रहा है, अभी नन्हीं-नन्हीं फुहियाँ बरस ही रही हैं और श्यामसुन्दरको इस पानीमें छप-छप करते दौड़नेकी धुन चढ़ी है।

मैयाने दोनों भाइयोंको वर्षाके समय अपने सामने बैठा रखा था। अब आकाश स्वच्छ हो रहा है। बादल हल्के पड़ रहे हैं। मैया किसी काममें लगी और दोनों भाई

एक दूसरेको संकेत करके द्वारसे बाहर भाग आये। कितना सुन्दर समय है खेलनेका। धुले, स्नान किये वृक्षोंके पत्तोंसे बूँदें टपक रही हैं। पक्षी अपने पंख फड़फड़ाकर जल झाड़ रहे हैं। पृथ्वीपर इधर-उधर पानी भागा जा रहा है। अब ऐसा समय क्या घरके भीतर बैठ रहनेका है?

श्याम दिगम्बर है और दाऊने तनिक-सी कछनी बाँध रखी है। दोनोंकी अलकोंमें जलके ये बरसते सीकर हीरक-कणों-से उलझते जा रहे हैं। दोनों पानीमें छप-छप करते एक दूसरेका हाथ पकड़े नाचते-से चल रहे हैं। घुटनोंतक दोनोंके चरण भीग गये हैं और उनपर मिट्टीके छींटे पड़ गये हैं जहाँ-तहाँ।

'इस पानीमें दौड़ा जाय तो!' श्यामसुन्दरके मनमें बात आयी और बड़े भाईका हाथ छोड़कर उसने दाऊको अपना सुझाव बता दिया। कितना सुन्दर सुझाव है?

अलकें लहरा रही हैं, चरण छपाछप छींटे उछाल रहे हैं, दोनों भाई आगे-पीछे दौड़े जा रहे हैं। दोनों हाथ हिलाते, इधर-उधर देखते दौड़ रहे हैं। बड़ा आनन्द आ रहा है दोनोंको दौड़नेमें।

'अरे!' दाऊ सहसा खड़ा हो गया और पीछे मुड़ पड़ा; किंतु कोई चिंता करने-जैसी बात नहीं है। उनका छोटा भाई फिसलकर गिर पड़ा है; किंतु उसे चोट लगी नहीं जान पड़ती। भूमिपर पड़ा-पड़ा वह अग्रजकी ओर देखता हँस रहा है।

'गिर पड़ा तू?' नन्हा-सा दाऊ कितना स्नेह करता है अपने इस कन्हाईसे। वह इसके समीप आ गया है। श्याम धब्-से गिर पड़ा था पेटके बल और जैसेका तैसा ही हाथ-पैर फैलाये लेटा है पानी और कीचड़से भरी भूमिपर। केवल अलकोंसे घिरा मुख उठाकर हँसते हुए अपने बड़े भाईकी ओर देख रहा है।

'उठ!' झुककर दाऊने छोटे भाईका हाथ पकड़ लिया; किंतु यह उठना कहाँ चाहता है। इसे तो लेटे रहनेमें आनन्द आ रहा है।

'तू यहाँ बैठ!' कृष्णने बड़े भाईका हाथ खींचा बैठनेके लिए। कण्ठसे चरणतक पेटकी ओरका पूरा शरीर लथपथ हो गया है कीचड़से। मुखपर भी कुछ छींटे पड़े हैं। अब यह लेटे-लेटे कीचड़में चरण नचा रहा है। इधर-उधर हिला रहा है पैरोंको। अब यह नहीं उठता, तब दाऊ इसके पास बैठेगा ही। वह वहीं कीचड़में छोटे भाईके मुखके पास बैठ गया है।

४३-माखनचोरी

'दादा, तोकके घरका माखन बहुत मीठा है।' अब कन्हाई जैसे बड़े भाईका हाथ पकड़कर, तनिक फुदककर, तनिक मचलकर मुख बना रहा है, वह तो देखनेकी ही वस्तु है। ऐसे ढंगसे अधर सिकोड़ रहा है, जैसे माखन इसके मुखमें ही आ गया।

'तोक, तू आगे चल धीरे-धीरे। बोलना मत! भला कहाँ रखा है माखन?' श्याम जिस घरमें जाता है, उस घरके बालकको प्राय: आगे कर लेता है। आज तो चाचाके घरपर ही कृपा करनी है इसे। अब दाऊ अपने अनुजके इस आनन्दमें बाधा कैसे दे?

'तू यहाँ बैठ!' कृष्णचन्द्र अभी पूरे तीन वर्षका भी नहीं है; अभीसे बड़े भाईका इसने इतना सम्मान करना सीख लिया है। उलटे-ऊखलपर चढ़कर तो माखन उतारा जायेगा। दाऊके लिए झटपट ढूँढ़कर एक पीढ़ा बिछा दिया है इसने।

दो-से चार वर्षतकके नन्हें बालकोंका एक पूरा समुदाय। कोई नंगे हैं, किसीने कछनी बाँध रखी है। मोटे तगड़े सुन्दर बालक। माताओंने इनको उबटकर नहलाया है। इनके केश सँवारे हैं। इनके नेत्रोंमें अंजन लगाया है और स्वयं इन्होंने खेलमें धूलि लगा ली है अपने अंगोंमें। नाना प्रकारके आभूषण पहिने हैं सब। अब इस समय सब-के-सब मौनी हो रहे हैं। इधर-उधर झाँकते जाते हैं। नेत्र और हाथ नचाकर संकेत करते हैं परस्पर।

'ये इतने बंदर कहाँसे आ गये?' गृहस्वामिनी ने कपियोंको ऊपर छतसे कूदते-उछलते आँगनमें उतरते देखा और समझ गयी कि ये किसके साथ क्यों आये हैं। उसके घर आज नन्दनन्दन आया है, अब यह भी क्या बताना रहा। और यह जो गोरस—गृहमें तड़-तड़, भड़-भड़, धब-धब, धम-धम तथा खिलखिलाहट मची है-दबे पैरों वह आयी और द्वारकी ओटसे छिपकर देखने लगी।

दाऊ जैसे गृहका अधिष्ठातृ-देवता है। आसन लगाये पीढ़ेपर जमा है वह और श्याम जैसे गृहस्वामी बन गया है और देवताका सत्कार करनेमें लगा है।

छीकेपर धरे बर्तनोंमें छेद हो गये हैं। दूध और दहीकी धरा गिर रही है। भूमि उज्ज्वल हो गयी है और उसमें फूटे बर्तनोंके टुकड़े बिखरे हैं। बालकोंके मुख,

कर, चरण, उजले-उजले हो रहे हैं। उनकी देहपर स्थान-स्थानपर उज्ज्वल बिन्दु पड़े हैं। सब माखन, दूध, दही सार्थक करनेमें लगे हैं।

'दादा, मुख खोल।' बार-बार श्याम अपने हाथों माखनके लोंदे बड़े भाईके मुखमें दे रहा है। उसे तो दूसरे ही खिला रहे हैं।

तनिक आगे झुकी थी वह और स्पष्ट देखनेके लोभमें। ताली बजाकर उछलते, कूदते, हँसते बालक उसके समीपसे निकले। नटखट श्याम भागते-भागते उसके मुखपर भी मक्खन फेंकता गया है।

'क्यों रे, क्या कर रहा तू?' दाऊको कोई शीघ्रता नहीं। वह धीरे-धीरे सबके पीछे चला जा रहा है।

'माखन खा रहा था।' भला, इसमें बहाना बनानेकी क्या बात है।

'तो खा ले, लाल।' बड़े स्नेहसे पुचकारा तोककी माताने। दाऊसे भला झगड़े कौन।

'अब नहीं खाऊँगा, पेट भर गया।' जब छोटा भाई चला गया, तब बड़ा कैसे टिक सकता है।

४४-दादाको बुलाऊँ?

'तू छोड़ दे मुझे।' आज यह नवनीत-चोर पकड़ा गया है। अकेला आया था इस घरमें। किंतु माखन अभी निकला नहीं था। दही मथते-मथते बीचमें किसी कामसे पात्रमें ही मथानी छोड़कर गोपिका घरमें चली गयी और यह आ पहुँचा। गोपीने लौटते ही इसे पात्रमें हाथ डालते देख लिया और धीरेसे पीछेसे आकर पकड़ लिया है इसका यह मथे दहीमें डूबा दाहिना हाथ।

'तू मेरे घरमें क्यों आया? मेरे मटकेमें हाथ क्यों डाला तूने?' गोपी भला ऐसे कैसे रोबमें आ जाय? यह ढाई वर्षका कृष्ण उसके घरमें चोरी करने आया और पकड़े जानेपर उलटे आँख भी दिखाता है!

'क्या हुआ मैं आया तो? माखन देख रहा था तेरे मटके में।' आज यह न तो डरता है न अनुनय करता है, न बहाने बनाता है। यह तो अकड़ा खड़ा है और धमकाता ही जाता है। गोपिकाको हँसी आ रही है इसकी धृष्टतापर।

'आज मैं तुझे छोड़नेवाली नहीं। रोज-रोज तू मेरा माखन चुरा ले जाता है।' नेत्र कड़े किये गोपीने।

'दादाको बुलाऊँ? तू छोड़ती है या नहीं?' 'अच्छा तो यह बात है?' इसे विश्वास है कि दाऊ इसे ढूँढ़ता शीघ्र ही यहाँ आ पहुँचेगा। इसी भरोसे आज अकड़ रहा है यह।

'बुला ले, तुझे जिसे बुलाना हो।' कोई अपराध भी करे और आँख भी दिखा तो कैसे सहा जाय।

'देख, छोड़ दे, नहीं दादाको बुलाता हूँ।' किंतु गोपी तो धमकीमें आती नहीं। सचमुच श्याम पुकारने लगा है-'दादा! दादा।'

'कनू!' हैं!, यह दाऊका ही तो स्वर है। सचमुच वह आ गया? कन्हाईका हाथ छूट गया गोपीके हाथसे अपने-आप।

'दादा!' बिखरी अलकें, अटपटी कछनी, सोतेसे उठकर मोहन सीधे भाग आया था। अब बड़े भाईको देखकर इसके नेत्र खिल उठे हैं। बार-बार गोपीकी ओर देखता है। इसके नेत्र मानो पूछ रहे हैं-'कहूँ दादासे?'

'कनू! क्या है रे?' श्यामसे एक वर्ष बड़ा है उसका यह गौर-सुन्दर अग्रज। अपने छोटे भाईको पास न देखकर यह भी घरसे निकल पड़ा था। इसकी अलकें भी बिखरी हैं। यह भी नींदसे उठकर ही दौड़ आया है।

'दादा, तू इसका मटका फोड़ दे। यह मुझे माखन नहीं देती।' कन्हाईने बड़े भाईका हाथ पकड़ लिया उसी दहीमें सने हाथसे।

'यह मानता नहीं है। तुम देखो न, अभी माखन निकला कहाँ है। तुम दोनों तनिक बैठ जाओ। अभी निकला जाता है माखन।' गोपिकाके नेत्र भर गये हैं। कन्हाईने अपने अग्रजसे कुछ कहा नहीं। इस नन्हें दाऊका सम्मान करता है पूरा व्रज। इससे झगड़ा नहीं जा सकता। दो पीढ़े डाल दिये हैं दोनों भाइयोंके बैठनेके लिए उसने। दाऊ छोटे भाईकी ओर देख रहा है कि यहाँ बैठना है या नहीं।

४५-प्रागल्भ्य

'क्यों रे, तूने खोले हैं बछड़े?' किसे पता था कि आज यह गोप अभी घरपर ही है। राम-श्याम बालसखाओंके साथ गोकुलकी गलियोंसे उछलते-कूदते नित्यकी भाँति धूम-करते घूम रहे हैं। गोप चले गये हैं गायें चराने और गोपियाँ इन बालकोंकी ललित क्रीड़ा देखनेमें लगी हैं। इस गोपके गोष्ठसे बालकोंने सब बँधे बछड़े खोल दिये। किंतु जब यह घरसे निकला, सब-के-सब ताली बजाते भाग खड़े हुए हैं। दौड़कर सबसे पीछे भागते एक डेढ़ वर्षके नन्हें दिगम्बर बालकका हाथ पकड़ लिया है इसने और डाँट रहा है उसे। बड़ा क्रोधी है यह गोप।

'मैंने नहीं खोले हैं।' बेचारे बालकके नेत्र भर आये हैं। भयसे उसकी तोतली वाणी और अस्पष्ट हो गयी है। कातर हो रहा है वह।

'मैंने खोले हैं बछड़े।' किसी सखाको कोई कुछ कहे, यह श्याम सह नहीं सकता। यह लौट आया कन्हाई। दो वर्षका यह नीलसुन्दर इतने बड़े हट्टे-कट्टे गोपके सामने तनकर खड़ा हो गया है-'इसे छोड़ दो।' वाणीमें जो रोब है, खड़े होनेमें जो अकड़ है, देखने ही योग्य है वह।

'तूने खोले हैं?' 'क्यों खोले?' गोपने बालकका हाथ छोड़ दिया और श्याम का हाथ पकड़ा।

'हाँ, खोले तो मैंने ही हैं।' सखा छूट गया और कृष्णकी वह प्रगल्भता चली गयी। झुक गया है उसका सुन्दर मुख। पीछे मुड़कर देख रहा है वह, कोई उसकी सहायता करेगा या नहीं?

'क्या हुआ जो बछड़े खोल दिये? हाथ छोड़ दो?' यह आया दौड़ता हुआ दाऊ। झटक दिया हाथ आते ही इसने गोपका। इसकी तेजस्विता तो फिर इसकीके योग्य है। 'तुमने क्यों पकड़ा कन्हाईका हाथ?' नन्हा-सा यह गौरसुन्दर इस प्रकार इतने बड़े गोपसे पूछ रहा है, जैसे कोई सम्राट किसी सामान्य व्यक्तिको फटकार रहा हो।

'इसने बछड़े खोल दिये। वे वनमें भाग जायँगे और गायोंका दूध पी डालेंगे। तुम अपने छोटे भाईको मना क्यों नहीं करते?' गोप हँस तो नहीं सका; पर इसके

मुखपर जो डाँटनेका भाव था, वह चला गया है। इस दाऊसे वह झगड़ नहीं सकता। क्या हुआ जो यह तीन वर्षका बालक है। गोप जानता है कि यह रुष्ट हो जाय तो उसके घरमें एक भी मटका बचेगा नहीं। उसके ऊखल-तकको यह पटककर फोड़ फेंकेगा। साथ ही ये सब बालक खड़े हो गये हैं। अब इन्हें डराया नहीं जा सकता। मधुमक्खियोंके इस छत्तेको छेड़नेमें अब कुशल नहीं है।

'बछड़े अपनी माँका दूध पियेंगे, तुम अपनी माँका दूध पियो।' उसकी पत्नी द्वारकी ओटमें हँसते-हँसते लोटपोट हो रही है। व्रजके ये दोनों युवराज उसके दढ़ियल पतिको उसकी बुढ़िया माँका दूध पीनेका आदेश दे रहे हैं, जैसे अभी स्वयं वे अपनी माताओंका दूध पीते हैं। बेचारा गोप खड़ा-खड़ा देख रहा है और उसे अँगूठा दिखाते, ताली बजाते, दौड़े जा रहे हैं ये बालक।

४६-पावस-नृत्य

'कनूँ, तू मयूरसे अच्छा नाचता है।' नन्हा तोक ताली बजाकर कूद रहा है। झुंड-के-झुंड मयूर इधर-उधर ठुमुक-ठुमुककर नृत्य कर रहे हैं। किंतु श्यामसुन्दरके नृत्यकी शोभा तो भिन्न ही है।

'दादा, तू भी नाच!' कन्हाईने बड़े भाईका हाथ पकड़ा और दोनों गोल चक्कर काटने लगे।

'अरे!' हाथ छोड़कर अलग-अलग राम-श्याम सैकड़ों बालकोंके साथ दोनों हाथ फैलाये गोल-गोल फिरते रहे और घूमकर भूमिमें बैठ गये। वे बैठते हैं और फिर उठते हैं। उठते हैं और फिर बैठते हैं।

नीचे कोमल बालुका और ऊपर मेघाच्छन्न आकाश। नन्हीं फुहियाँ बरस रही हैं। अलकोंमें हीरक-कनियाँ उलझती जा रही हैं। बालक चक्कर काट रहे हैं, घूमकर गिर रहे हैं और हँस रहे हैं।

मयूरपिच्छ लहरा रहा है, अलकें हिल रही हैं, पटुका फहरा रहा है, वनमाला वक्षपर चंचल हो रही है, पीली कछनी उड़ रही है, मोहन दोनों हाथ फैलाये शीघ्रतासे गोल घूम रहा है और घूम रहा है उसके समीप ही उसीकी भाँति हाथ फैलाये उसका नीलाम्बरधारी अग्रज।

'पृथ्वी नाचती है, पेड़ नाचते हैं, गृह नाचते हैं।' बालक हँस रहे हैं चक्कर काटते हुए। वे एक दूसरेको घूमकर पकड़ते हैं और बद्-बद् गिरते हैं भूमिपर।

'दादा!' श्यामने घूमते-घूमते गिरनेसे बचनेके लिए दाऊको पकड़ लिया। दोनो भाई एक दूसरेको पकड़े धप-से हो रहे ।

'दादा!' भूमिपर एक हाथ टेके, एक हाथसे बड़े भाईको पकड़े कन्हाई कभी सिर इधर झुकाता है और कभी उधर। वह खुलकर हँसता है-'दादा, सब नाच रहे हैं।'

'तू नाचेगा तो सब नाचेंगे ही।' दाऊने भी एक हाथसे छोटे भाईको सम्हाल रखा है। वह जानता है कि उसके अनुजको अभी चक्कर-सा लगता होगा।

'मैं कहाँ नाच रहा हूँ?' श्याम अब स्थिर हो रहा है। वह स्थिर हो या चंचल, किंतु स्थिर तो वही है। शेष सब तो नाच ही रहे हैं। उससे कोई कहता क्यों नहीं- 'तू नचा रहा है, इससे सब नाच रहे हैं।'

'कनूँ, उठ! मैं तेरे साथ नाचूँगा।' तोकने हाथ पकड़ लिया। इस कनूँके साथ नाचनेवाले ये कुमार, पावस-नृत्य तो इन्हींका है। यों नाच तो सभी रहे हैं, पर सब नाच रहे हैं ग्रीष्मके झोंकोसे विवश संतप्त धरापर।

४७-मैंने कृपा की

'दादा, देख तो।' श्यामने एक कंकड़ हाथमें उठाया। 'तू घड़ा फोड़ेगा इसका!' दाऊने रोकना चाहा।

'इसके घड़ेसे इतना मोटा पानी निकलेगा।' अपनी पतली कनिष्ठिका दिखायी मोहनने। वह यह सोचकर प्रसन्न हो गया है कि घड़ेसे पानीकी धारा गिरेगी।

कालिन्दीके कोमल पुलिनपर प्रात:काल छोटे-छोटे बालक खेल रहे हैं। किसी-किसीकी कटिमें कछनी है, नहीं तो सब दिगम्बर ही हैं। रेतमें घरोंदे बनाते हैं, गड्ढे खोदते हैं, लेट लगाते हैं और एक दूसरेपर रेत उछालते हैं। हँसना, कूदना, दौड़ना, ताली पीटना और कोलाहल-आनन्दकी क्रीड़ा चल रही है। अलकोंमें धूल भर गयी है, यह सोचनेका इन्हें अवकाश कहाँ।

घाटसे एक गोपी अपने घड़े भरकर ऊपर आयी। खड़ी होकर एकटक देखने लगी शिशुओंकी क्रीड़ा। कन्हाईने देखा उसके घड़ेको और एक नया खेल सूझ गया उसे।

मोहन प्रसन्न हो रहा है—दाऊ तो बस, इतना देखना जानता है। उसका छोटा भाई प्रसन्न रहे, बस, कनूँके खेलमें वह बाधा नहीं देता। वह तो स्वयं श्यामके साथ खेलमें योग देता है, यदि उसके योगसे श्यामके अधरोंपर हास्यकी रेखा दीख पड़े। कितना प्रसन्न हो रहा है कन्हाई घड़ेमें-से जल गिरनेकी कल्पनासे।

'इसका घड़ा तो मैंने...' गोपिकाने मैयाको उलाहना दिया है। मैया श्यामको डाँटेगी। दाऊ अपने छोटे भाईको बचानेके लिए स्वयं अपने ऊपर आगेसे ही अपराध ले लेना चाहता है।

'हाँ मैया, दादाने देखा है।' श्याम बीचमें ही बोल पड़ा। 'मैंने इसपर कृपा की।'

'अच्छा, मेरा बेटा अब कृपालु हो गया है!' मैयाको हँसी आ गयी।

'मैंने तो एक घड़ेमें थोड़ा-सा छेद किया।' श्यामने अपनी अँगुली दिखाकर बताया-'इतना मोटा पानी निकलने लगा घड़ेसे। इसने तो तीनों घड़े पटक दिये। फट्से फूट गये सब। इसने घड़े क्यों फोड़े?' जैसे अपराधिनी वही है और उसीको डाँट पड़नी चाहिए।

'देख मैया, इतने बड़े-बड़े घड़े थे।' दोनों हाथ फैलाकर बताया मोहनने। 'दो घड़े सिरपर और कटिपर रखकर यह ऐसे तो चलती थी।' अब कन्हाई जो मटककर चल रहा है-गोपिकाको हँसी न आये तो और क्या हो।

'मैं घड़ेको न फोड़ता तो इसकी कटि टूट नहीं जाती?' बड़े भाईकी ओर अब उसने देखा। जैसे पूछता हो-'दादा, ठीक है न?' इस चंचलके नेत्र क्या-क्या कहते हैं, अब कोई कैसे समझे?

४८-वस्त्र धारण

'श्याम, आ। मैं तुझे कछनी पहना दूँ।' ऋषभ गोपकुमारोंमें बड़ा है। वह कन्हाईकी सहायता करना चाहता है।

'मैं पहिन लूँगा।' कृष्णचन्द्र अपने प्रयत्नमें है। वह कछनीको कटिमें लपेट लेना चाहता है। बीच-बीचमें रुककर दूसरे सखाओंकी ओर देखता है-वे कैसे कछनी बाँध रहे हैं।

एक ओरसे लपेटने पर चिकना कौशेय वस्त्र दूसरी ओरसे खिसक जाता है। एक ओर नन्हें हाथोंमें आता है तो दूसरा छूट जाता है। श्यामसुन्दर अच्छी उलझनमें पड़ा है। वह कभी एक छोरसे, कभी दूसरे कोनेसे और कभी बीचोबीचसे कछनीको बाँधनेका प्रयास कर रहा है। कोई पद्धति ठीक नहीं बैठती।

बालकोंने कछनी खोलकर इस छोटे झरनेमें स्नान किया है। सबके अंग धुल गये हैं। मोहनकी अलकोंसे अब भी बिन्दु झर रहे हैं। एक-दो पुष्प अभी भी अलकोंमें उलझे हैं। करोंमें पतले कङ्कण, भुजाओंमें हल्के अङ्गद, वक्षपर मुक्तामालके ऊपर गुंजाओंकी माला और उनमेंसे झाँकता श्रीवत्स-चिह्न, कण्ठमें कौस्तुभ, कटिमें मणिजटित स्वर्णमेखला, चरणोंमें नूपुर। धुले हुए विकच कुवलयकी यह शोभा। बछड़े दूर चर रहे हैं और बालक अपने-अपने वस्त्र पहिननेमें लगे हैं।

'दादा!' श्याम अन्तमें झुँझला गया। उसने कछनी पैरोंके पास भूमिमें डाल दी और दो क्षण उसे देखता रहा। फिर हाथमें उसे उठाकर बड़े भाईके सामने जा खड़ा हुआ।

'ला, मैं पहिना दूँ।' दाऊने स्वयं वस्त्र पहिन लिये हैं। अपने छोटे भाईके हाथसे कछनी लेकर वह घुटनोंके बल बैठ गया है। दिगम्बर श्याम उसके सम्मुख खड़ा है और सिर नीचे करके ध्यानसे देख रहा है-सीख लेना चाहता है कछनी बाँधना।

श्यामसे कुछ अंगुल ही तो बड़ा है यह दाऊ। एक वर्ष बड़ा क्या कोई बहुत बड़ा होता है? परंतु दाऊको कछनी बहुत अच्छी बाँधनी आती है, यदि यह चंचल कन्हाई चुपचाप खड़ा रहे।

'दादा!' मोहन अपनी कछनी बँधते-न-बँधते ताली बजाकर भाग जाना चाहता है। इसने वह एक बहुत सुन्दर पक्षी देख लिया है।

'तनिक रुक।' दाऊने भागने नहीं दिया।

'वह-वह पीला पक्षी।' कन्हाईको भला, अब कोई कितने क्षण रोक सकता है। दाऊ शीघ्रता करनेमें लगा है।

४९-गाय ब्यायी

'दादा! दादा! कपिलाने बछड़ा दिया है। बड़ा सुन्दर बछड़ा है। आ, देख तू।' श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्न है। वह जल्दी-जल्दी मैयाको, माता रोहिणीको और बाबाको यह शुभ समाचार दे आया है। उसकी कपिलाने दूध-सा उजला बछड़ा दिया है। अपने बड़े भाईको ले आकर तुरंत वह बछड़ा देना चाहता है।

'गाय भूखी है। मैं इसके लिए कुछ ले आता हूँ।' दाऊने बछड़ेको देखा और उसका ध्यान कपिलाकी ओर गया। तुरन्तकी ब्याही गाय भूखी तो होगी ही। कितना खाली दीखता है उसका पेट। गोपोंने उसके आगे बहुत कुछ रख दिया है, पर इससे होता क्या है। कपिलाको तो दाऊ या श्यामके हाथसे कुछ चाहिए।

'ले, खा ले!' छोटे-से पात्रमें यह नीलाम्बरधरी छोटा बालक कुछ अन्न लाया है और फिर दौड़ गया है एक मुट्ठी दूर्वा लेने। कपिला अन्नकी ओर देखनेके स्थानपर उसकी ओर देख-देखकर हुंकार कर रही है।

'उठ! उठ तू!' श्यामसुन्दर बछड़ेके पास आ बैठा है। अपने लाल-लाल दोनों नन्हें हाथोंसे उठनेमें यह बछड़ेकी सहायता कर रहा है। बछड़ा अभी ठिकानेसे उठ नहीं पाता और चलनेमें उसके पैर लड़खड़ाते हैं। गिर पड़ता है बार-बार वह। अपनी माँके बदले वह कन्हाईको सूँघ लेना चाहता है उसके चारों ओर घूमकर। श्याम हँसता है, मुख हटाता है, जब बछड़ा उसका मुख और सिर सूँघनेका प्रयत्न करता है। दोनों हाथोंसे बछड़ेका मुख पकड़कर मोहन उसे बार-बार पुचकार रहा है।

कपिला बार-बार हुंकार कर रही है। वह अपने सामने बैठे दाऊको कभी सूँघती है, कभी दाऊके हाथसे तृण लेती है या उसकी छोटी टोकरीसे अन्नके दो-एक ग्रास खा लेती है और फिर हुंकार करके श्यामसुन्दरकी ओर शीघ्रतासे लपकती है। वह अपने नवजात बछड़ेको चाट ले या इस नीलसुकुमारको सूँघे? बछड़ा तो कहीं जाता नहीं, पर वह श्याम और यह गौर कहीं उसके पाससे दूर न चले जायँ-कपिला आज अत्यन्त आतुर हो रही है। बार-बार हुंकार करती है। बार-बार सूँघती है दोनोंको।

'दादा, तू इसे उठना सिखा।' श्यामसुन्दर बहुत उत्सुक है कि वह नन्हा बछड़ा उठता है तो कन्हाई उससे तनिक दूर हट जाता है कि वह उसके पास दौड़कर आवे; पर बछड़ा अनेक बार लड़खड़ा जाता है। वह खड़ा ही हो पाता है पैर फैलाकर।

दाऊ अब अपने छोटे भाईके पास आ गया है। किसीको उठना और श्यामकी ओर चलना उसे छोड़कर भला, कौन सिखा सकता है। किंतु कपिला तो हुंकार करने और इन्हें सूँघनेमें ही व्यस्त है और उसका यह नन्हा बछड़ा भी अभीसे इनके आस-पास मँडरानेका यत्न करने लगा है।

५०-जागरण

'हुम्मा! हुम्मा!' गायें बहुत रात पहले ही पुकारने लगती हैं। बछड़े गोष्ठसे भागकर द्वारपर आ जुटते हैं। मैयाको लगता है कि सब उसके लालको जगाना चाहते हैं।

कन्हाई सो रहा है। दूध-से उजले पलंगपर वह नीलमकी सुकुमार मूर्ति-जैसा- उसके इधर-उधर अलस पड़े लाल-लाल कर-चरण। अलकें मुखपर घिर आयी हैं। झीना पीत पट मैयाने उढ़ा दिया है उसे। बड़ी-बड़ी पलकें बंद हैं।

'श्यामसुन्दर!' मैया कुछ क्षण देखती रही अपलक। अब यदि वह धीरेसे न जगाये तो सखाओं के आ जानेपर यह उसका लाल ठिकानेसे मुख भी नहीं धोने देगा। इसे वनमें जानेकी हड़बड़ी पड़ेगी। खीझेगा न जगानेके लिए।

'ऊँ, ऊँ!' कृष्ण तनिक हिला, दोनों हाथोंको नेत्र मलनेके लिए ले गया और फिर शिथिल हो रहा।

'कनूँ!' मैयाने फिर पुचकारा।

'दादा!' नेत्र-बंद किये-किये ही हाथसे अपनी शय्यापर बड़े भाईको टटोल लेना चाहता है वह। उसके स्वर एवं गतिमें अलसभाव है।

'देख तो, दाऊ कबसे उठ गया है!' मैयाने फिर सचेत किया।

'दादा!' श्यामसुन्दरको अपना दादा मिल नहीं रहा है। अब उसने अँगड़ाई ली, किंतु फिर पेटके बल होकर सो गया। दोनों हाथ मस्तकके इधर-उधर पड़ गये।

'दादा!' दो क्षण रुककर अपने-आप फिर हाथसे ढूँढ़ा उसने। 'दादा उठ गया' यह बात धीरे-धीरे समझ रहा है वह। अब दोनों हाथोंसे नेत्र मल रहा है। काजल फैलकर कपोलोंतक आ गया है। हथेलियोंपर काली रेखाएँ बन गयी हैं।

यह उठ बैठा वह शय्यापर नेत्र मलते-मलते। अभीतक भी पलकें खुली नहीं हैं। कटिकी कछनी ढीली-ढीली हो रही है। दोनों चरण आधे मुड़े हैं।

'दादा!' श्यामने पलकें खोल दीं। कैसा है उसका यह दादा! पता नहीं कब जग गया। कब धीरेसे उठ गया और कबसे पलंग पकड़े अपने छोटे भाईके मुखको चुपचाप देख रहा है। कनूँ पुकारता है, पर यह बोलता ही नहीं। धीरे-धीरे हँसता जाता है। कभी-कभी मैयाकी ओर देख भर लेता है।

'दादा!' कन्हाईके अधरोंपर भी मन्द मुसकान झलक उठी। उसकी भङ्गिमा कहती है-'अच्छा, दादा तो यह रहा। मुझसे पहले जग गया?'

और वहींसे झुककर अपनी दोनों भुजाएँ बड़े भाईके गलेमें डाल दीं उसने।

५१-वनकी ओर

'राम! अपने छोटे भाईको साथ ही रखना बेटा! इसे धूपमें मत घूमने देना। तुमलोग यमुनामें मत उतरना। देखो, पेड़पर कोई न चढ़े भला और परस्पर झगड़ना भी मत। कन्हाईकी सँभाल रखना लाल!' मैयाको पता नहीं कितनी सूचनाएँ देनी हैं। उसका नीलसुन्दर वनकी ओर जा रहा है। इसे किसी प्रकार रोका नहीं जा सकता। धक्-धक् कर रहा है मैयाका हृदय।

श्यामसुन्दरको शीघ्रता है और दाऊ तो प्रस्तुत भी हो गया। सखाओंमें कुछ भीतर आ गये और कुछ द्वारपरसे पुकार रहे हैं। अब मैयाकी सूचनाएँ कहाँ सुनते हैं ये दोनों।

लहराता मयूरपिच्छ, सम्हाली-सजायी अलकावली पुष्पमाल्यसे सजी हुई, कपोलोंपर झलमलाते मणि-कुण्डल, भालपर केसरकी भव्य खौरके मध्य कज्जलका बिन्दु, अंजन-रंजित तनिक रतनारे दीर्घ दृग, कन्धोंपर लहराते नीलपीतपट, कण्ठमें मुक्ताकी माला एवं घुटनोंतक लटकती वैजयन्ती माला, एक कंधेसे नीचे लटकता

छीका और दूसरेपर पड़ा काला कम्बल, बायें हाथमें शृङ्ग, दाहिनेमें बेंत, कटिकी कछनीमें लगी मुरलिका। मत्त गजराजकी गतिसे झूमते ये राम-श्याम निकले द्वारसे।

उछलते-कूदते चिकने चंचल रंग-बिरंगे सहस्त्रों बछड़ोंका समुदाय आगे-आगे चल रहा है। बछड़े बार-बार पीछे मुड़ आते हैं और दोनों भाइयोंको सूँघकर कूदते-फुदकते फिर आगे चले जाते हैं।

सहस्त्रों गोप-शिशु—सब-के-सब सुन्दर, सुपुष्ट और चपल। सबको सजाया है उनकी माताओंने। तैलस्निग्ध अलकें, अंजन-मंजु लोचन, आभरण-भूषित देह, धौतोज्ज्वल वसन—सब लकुट, कम्बल, छीके, वेत्र, शृङ्ग, रस्सियाँ लिये हैं। सब हँसते हैं, कूदते-से हैं और बछड़ोंको हाँकते हुए गाते जा रहे हैं।

आरतीके थाल सजाये खड़ी हैं द्वारोंपर वृद्धाएँ, माताएँ। मार्गमें दोनों और खड़े हैं गोपगण। छज्जोंसे पुष्प झर रहे हैं। दूर्वाङ्कूर एवं लाजाके साथ केसरके सीकर बरस रहे हैं।

'कनूँ कोई धूम नहीं करेगा। मैं उसे कहीं इधर-उधर नहीं जाने दूँगा।' दाऊने मैयाको द्वारपर आश्वासन दिया।

'मैं तेरे लिए बहुत-से जामुन लाऊँगा। मैयाके लिए भी और बाबाके लिए भी।' कृष्णचन्द्रने द्वारसे कुछ आगे जाकर, मुड़कर अपनी ओर अपलक देखती माता रोहिणीको पुकारकर कहा।

'अरे नहीं! जामुनपर चढ़ना मत। नहीं चाहिए किसीको यहाँ जामुन! मैं वनसे मँगाये लेती हूँ।' माताकी पुकार कहाँ सुनता है यह चपल। वह कभी इधर जाता है, कभी उधर देखता है। कभी पीछे मुड़ता है, कभी नाचता है। उसे घेरकर नाच रहे हैं, गा रहे हैं ये गोपकुमार। वनकी ओर बढ़ी जा रही है यह मधुर मण्डली।

५२-उपहार

'दादा! बता तो, मैं क्या लाया हूँ?' पीताम्बरके भीतर कोई गोल वस्तु छिपाये वह श्यामसुन्दर दौड़ा-दौड़ा हँसता-हँसता आया और दाऊके सामने बैठ गया।

किसी गोपकुमारको-कहना यह चाहिये कि व्रजमें किसीको, स्वयं दाऊको भी कोई सुन्दर स्वादिष्ट या आकर्षक वस्तु मिले तो वह उसी समय कृष्णचन्द्रके लिए सुरक्षित हो जायेगी। उसे पानेवाला झटपट श्यामके पास उसे पहुँचाना चाहेगा। और यह श्याम--कोई रत्न, कोई बड़ा-सा पुष्प-गुच्छ, कोई सुन्दर फल, कोई लुभावना फूल, कोई भी वस्तु जो इसे पसंद आ जाय, उसे लेकर दाऊके पास भागेगा। इसे लगता है कि सारी उत्तम वस्तुएँ इसके बड़े भाईको ही मिल जानी चाहिए।

'मयूरका बच्चा।' दाऊने बिना रुके, बिना झिझके उत्तर दे दिया। वैसे कोई भी जानता है कि मयूरका बच्चा इस प्रकार पीतपटमें बंद करके लानेपर हिले-डुले बिना नहीं रहेगा।

'नहीं दादा, तू देखकर बता।' श्यामने पीतटपटकी वह पोटली सामने कर दी; किंतु दाऊने जब हाथ बढ़ाया, उसने पोटली दूर हटा ली-'तू छू मत।'

'उसका गेंद।' दाऊ हँस पड़ा। वैसे उस पोटलीसे जो सुरभि आ रही है, वह पहेली समझनेकी आवश्यकता नहीं रखती।

'अच्छा, तनिक देख ले।' कन्हाईने अँगुली रखने जितना अंश उस वस्तुका दिखलाया।

'पका बिल्व!' कोई फल है, पीला-पीला यही दीख रहा है।

'अच्छा, तू मुख खोल!' मोहनने अग्रजके चिबुकपर अपना दाहिना हाथ रख दिया।

'तू पहले दिखा!' दाऊने फिर हाथ बढ़ाया।

'ना, मुख खोल तू।' श्यामने पोटली हटा ली।

'रह, मुझे देख लेने दे।' दाऊके मुख खोलने पर कृष्णचन्द्रने झटसे पटुकेमेंसे एक सुन्दर सुपक्व आम निकालकर बड़े भाईके मुखसे लगा दिया; किंतु जैसे ही दाऊने उसे काटना चाहा--जैसे कन्हाईको कुछ स्मरण आ गया। उसने झट आम हटा लिया और अपने मुखसे लगाता बोला-'कहीं खट्टा हुआ तो?'

'दादा, देख कितना मीठा है?' थोड़ा-सा काटकर मुखमें लेते ही मोहन उल्लसित हो गया। उसने आम बड़े भाईके मुखमें लगा दिया। कन्हाईके अधरोंपर आमके रसकी पीताभ छटा—अपने हाथमें आम लेकर वह अग्रजको खिला रहा है उसके सामने बैठा घुटनोंके बल कुछ उझका-सा, 'मीठा है न?'

'भला, यह भी पूछनेकी बात है? इतनी मिठास और भी कहीं क्या सम्भव है?'

५३-शृंगार

'तू मेरा पुष्प मत तोड़।' श्याम अपने बड़े भाईका शृंगार करना चाहता है। उसे स्वयं सब प्रसाधन-सामग्री एकत्र करनी है। अब उसके देखे पसंद किये पुष्प, प्रवाल आदि कोई लेने लगे तो वह झगड़ेगा नहीं?

'अच्छा ले। तू ही ले ले इसे।' ऋषभ सीधा है। कन्हाईसे झगड़ना उसे रुचता नहीं। अब उसके तोड़े फूलको वह नटखट अपना बता रहा है तो इसीका सही। दूसरा तोड़ लेगा वह।

'तूने मेरा पुष्प तोड़ा क्यों? इसे वहीं लगा दे।' श्याम तो झगड़नेका बहाना ढूँढ़ता रहता है। भला, टूटा फूल कहीं फिर टहनीमें जुड़ा करता है।

'फूल तेरा सही, ले!' बेचारा ऋषभ अब कैसे इसे मनाये?

'मैं तेरा तोड़ा क्यों लूँ? मैं अपने आप तोड़ूँगा। इसे जहाँ था वहीं लगा।' कन्हाई झगड़ेपर उतर आया है। यह देखता ही नहीं कि ऋषभ इससे कितना बड़ा और कितना तगड़ा है।

'ला, मैं लगा देता हूँ।' भद्र बीचमें पड़ा। अभीतक न तो दाऊका शृंगार हुआ न श्यामका। अब झगड़ा बढ़ा तो और भी देर होगी।

'दादा, अब तू चुपचाप बैठा रह। हिलना मत!' मोहन बहुत प्रसन्न है। झगड़ा करके ऋषभसे जीत गया है वह। भद्रने उसका फूल फिर टहनीसे लगा दिया। क्या हुआ जो काँटेमें उलझा दिया गया था। वह पुष्प--तोड़ा तो श्यामने स्वयं ही। अब नाचता-कूदता वह बड़े भाईके पास आ बैठा है उसका शृंगार करने।

चारों ओर अरुण हरित पल्लवोंसे लहराते फल-भारसे झुके वृक्ष। पुष्पगुच्छोंसे लदी लहराती लताएँ। कूजते पक्षी, नाचते मयूर, उछलते-किलकते कपिदल और सहस्रशः बछड़े चरते, कूदते या बैठे खड़े। हरित मृदुल यत्र-तत्र नन्हें सुमनोंसे सज्जित मंजुल भूमि। बालक मयूरपिच्छ, गुंजा, पुष्प, पल्लव चयन करने तथा एक दूसरेको सजानेमें लगे हैं।

पुष्पित कदम्बके नीचे स्नान-धौत स्वर्णाभ, नीलवसन यह बैठा है दाऊ और अब यह उसका इन्दीवर-सुन्दर, पीतवसन अनुज उसके पास आ बैठा है बड़े भाई शृंगार करने।

अलकोंमें ढेरों पुष्प-गुच्छ, कानोंपर किसलयदल, कक्षमें मयूर-पिच्छ, गलेमें गुञ्जा तथा वनपुष्पोंकी अनेक मालाएँ, करमें गेरू, खड़िया, रामरजकी डलियाँ और कमलके पुष्प। प्रसाधनकी सामग्री अपने अङ्गोंपर ही रख ली है इसने और अब एक-एक उठाकर दाऊको सजाने में जुट पड़ा है।

'दादा, तू हिलना मत!' अच्छा अनुरोध है। स्वयं तो एक-एक वस्तु सजाकर फिर नाचता है और दादा हिले भी नहीं। पर दादा क्या हिल सकता है इस समय।

५४-प्रेम

'दादा!' यह कन्नू अपने दादाको सदा अकारण ही पुकारे, ऐसा कुछ नहीं है। इसका तो यह एक स्वभाव हो गया है। सोतेमें भी यह अनेक बार 'दादा, दादा' कह उठता है। इसकी यह पुकार भी बड़ी अद्‌भुत है। प्रत्येक बार इसके स्वरमें उत्साह, कुतूहल, प्रेम-पता नहीं क्या-क्या होता है। प्रायः यह ऐसे उत्साहसे पुकारता है, जैसे कोई बहुत अद्‌भुत बात अपने दादासे कहने जा रहा हो या फिर इसका दादा इसे कई युगोंके बाद मिला हो।

और यह दाऊ है कि कन्हाई जब भी पुकारेगा, इसके नेत्र उसकी ओर घूम ही जायँगे। बदलेमें यह बहुत कम बार पुकारता है, बहुत कम बार सम्बोधन करता है। बस, नेत्र उठाकर देखेगा छोटे भाईकी ओर। उस समय इसके नेत्रोंकी भावभरी भङ्गी देखने ही योग्य होती है वह छटा तो। दाऊ गाढ़ निद्रामें हो, कन्हाई पुकार ले

उसे, तो उस समय भी वह 'हूँ, हाँ' अवश्य कर उठेगा और उसके नेत्र न सही, पर हाथ निद्रामें ही अपने छोटे भाईको टटोल लेनेके लिए हिल उठेंगे।

बसंतकी यह पुष्पित, किसलयमण्डित वनश्री। हरित दूर्वासे आच्छादित भूमितल। पशु-पक्षियोंका आनन्द-उल्लास और भ्रमरोंका मत्त गुञ्जन सार्थक हो गया है आज। आज राम-श्याम दोनोंने सुमनोंसे अपनेको सजाया है। उज्ज्वल पुष्पोंकी छोटी मालाओंमें नीचे पाटलके पुष्प लगाकर उन्हें इन दोनोंने कानोंमें पहिन लिया है। कानोंको घेरकर, रत्नकुण्डलोंको बंदी करके शोभित वे मालायें और कपोलोंपर लटकते पाटलके मृदुल सुमन। सघन स्निग्ध मृदुल सुमन। घुँघराली अलकराशि भी उज्ज्वल मोटी मालासे घिरी है और फहरा रहे हैं मस्तकपर मयूरपिच्छ। कलाइयोंमें स्वर्ण-मल्लिकाकी माला आज कङ्गन बन गयी है और भुजाओंके स्वर्णाङ्गद यूथिका-सुमनोंके अंङ्गदोंके साहचर्यसे अत्यधिक भूषित हो गये हैं। वक्षपर गुञ्जा, कुन्द, तुलसीदलकी उत्तरोत्तर बड़ी मालाओंको अपने अङ्कमें लिये पचरंगे पुष्पोंकी खूब मोटी वैजयन्ती माला घुटनोंतक लटक रही है।

दाऊ एक सघन नाटे फैले हुए छत्राकार तमालके नीचे बैठा है एक शिलापर। उसके दोनों चरण शिलाके नीचे हरित दूर्वापर दो विकच सरोज-जैसे लगते हैं।

'दादा!' यह आया है फुदकता हुआ कन्हाई। अपने नीलाम्बरधारी अग्रजकी बायीं ओर मुड़ा हुआ बैठ गया है यह, अपने दोनों हाथोंसे बड़े भाईके बाँयें कंधेको पकड़कर।

'दादा!' इसके सम्बोधनमें केवल प्रेम है। सम्बोधनके लिए ही सम्बोधन है यह और दाऊ मुख घुमाकर अपलक देख रहा है अपने इस अनुजकी ओर। उसे कुछ बोलना नहीं और जो मोहनके इस भावमुग्ध मुखको देख लेगा, बोल पायेगा वह?

५५-स्वत्व

'अरी छोरियों! कहाँ जा रही हो सब?' दाऊने पूछ लिया। आज वह एक लाल-लाल किसलयोंसे लदे कदम्बके नीचे जमकर बैठा है। गौएँ आगे-पीछे, इधर-उधर चरनेमें लगी हैं। कन्हाई लगता है कि सखाओंके साथ कहीं पास ही खेलमें लगा होगा।

'दही बेचने।' रंग-बिरंगे वस्त्रों एवं अलंकारोंसे सजी छोटी-छोटी दहेंड़ियाँ सिरपर रखे पाँचसे दस वर्षतककी बालिकाओंका झुंड—वे सब खड़ी हो गयीं। बड़े संकोचसे किसी एक अलक्ष्य कण्ठने उनमें-से उत्तर दिया।

'हमें दही नहीं खिलाओगी?' दाऊ आज मौजमें है।

'लो, खालो!' एक साथ ढेर-सी दहेंड़ियाँ सामने रख दी गयीं बड़ी उमंगके साथ।

'हम तो हँसी कर रहे थे। ले जाओ तुम सब।' सचमुच दाऊ अब तक सहज-भावोंमें ही बोल रहा था।

'थोड़ा-सा भी नहीं खाओगे?' स्वर अत्यन्त अनुरोधपूर्ण तथा कातर हो उठे हृदय कहने लगे-'हाय, हाय! हमारा दही आज क्या व्यर्थ ही जायगा। बड़े भाईने यदि अस्वीकार कर दिया तो छोटा भाई आँख उठाकर भी देखनेवाला नहीं है।'

'अच्छा, लाओ!' सामने शिलाको फूँककर स्वच्छ कर दिया नीलाम्बरधारीने। उसे छीना-झपटी नहीं आती, किंतु कोई आग्रहपूर्वक नैवेद्य अर्पित करना चाहे तो अस्वीकार नहीं कर पाता वह।

'तुम इसीमें-से खा लो!' दहेंड़ियाँ जूठी हो जायँगी, यह बात इन इन्हीं बालिकाओंके मनमें नहीं आती।

एक स्पर्धा-सी—कोई पिछड़ना नहीं चाहती। कहीं दाऊने बस कर दिया तो? जो दहेंड़ियाँ यहाँ अछूती रहेंगी-अभागी ही रह जायँगी आगे भी वे।

'हमारा भाग हमको देकर तब आगे जाओ!' कन्हाई तो बड़े भैया-जैसा सीधा नहीं है। वह माँगना जानता ही नहीं।

'बड़े भागवाले आये हैं!' लड़कियोंने परस्पर देखा और नेत्र कड़े किये-'बड़े भैयाने सारी-की-सारी दहेंड़ियाँ जूठी कर दीं और अब ये चले हैं भाग लेने।'

'तब तो सब दही मेरा है!' मोहन उज्ज्वल तथा श्याम पर्वतोंके बीच साँकरी खोरमें दोनो पैर फैलाये, कटिदेशपर दोनों हाथ रखे, मार्ग रोके केसरी-शावकके समान तना खड़ा है-'मेरे दादाका प्रसाद है, कुछ तुम्हारे दादाका नहीं। धर दो सब दहेंड़ियाँ!'

कौन-सी पोथी कहती है कि बड़े भाईका प्रसाद छोटे भाईका स्वत्व नहीं है? अब यदि कोई किसीका स्वत्व न दे तो वह छीनेगा। दहेंड़ियाँ तो फूटनेवाली ठहरीं।

५६-उलाहना

'दादा!, कनूँ मेरा दावँ नहीं देता। मैं मारूँगा उसे।' श्रीदाम रोषमें है। उसका गौर मुख कुछ लाल हो गया है। उसके बड़े-बड़े नेत्र भरे-से हैं। दाऊ यहाँ न होता तो वह अवश्य श्यामसे झगड़ पड़ता। यह भी कोई बात है कि कन्हाई उसका दावँ नहीं देता और उलटे उसे अँगूठा दिखाकर चिढ़ाता है। वह दौड़नेमें कृष्णसे कुछ दुर्बल तो नहीं। किंतु यह दाऊ दादा फिर छोटे भाईका पक्ष न लेने लगे।

'यह कुछ अच्छी बात नहीं।' दाऊके लिए तो सभी सखा समान हैं। वह भला क्यों छोटे भाईका पक्ष करे। उसने कहा-'कहाँ है कनूँ?'

'दादा!' श्याम बड़े भाईके सामने आकर ऐसा बन जाता है कि देखते ही बनता है।

'तू श्रीदामसे झगड़ता क्यों है?' उसका...किंतु छोटे भाईके मुखकी ओर देखते ही दाऊ बोलते-बोलते रुक गया। उसने श्रीदामसे कहा-'चलो, मैं कन्हाईके बदले दावँ चुका दूँ।'

'ना! दावँ तो मैं इसीसे लूँगा।' श्रीदामका हठ अनुचित कौन कहे। जो खेलता हो, दावँ उसीको देना चाहिए।

'किंतु यह तो थक गया दीखता है।' दाऊने फिर देखा अपने छोटे भाईकी ओर।

'थक गया है?' श्रीदामने भी श्यामकी ओर देखा। उसे लगा कि वह अबतक क्यों नहीं इस बातको जान सका। कितना सुकुमार है उसका यह नीलसुन्दर सखा। इसके भालपर पसीनेकी बूँदे झलमलाने लगी हैं। कपोल अरुण हो गये हैं। केशोंके सुमन अस्त-व्यस्त बन गये हैं। श्वासकी गति भी बढ़ गयी जान पड़ती है।

'श्याम, तू इधर आ।' श्रीदामने हाथ पकड़ लिया और तमाल-मूलकी ओर चलनेको खींचने लगा।

'मैं थका कहाँ हूँ? तू थक गया हो तो वहाँ सो जा।' कन्हाई अपनेको दुर्बल कैसे मान ले? वह किससे अल्पशक्ति है कि पहले थक जायगा?

'दादा, यह कनूँ मानता नहीं है। तू डाँट न इसे।' तोकका उलाहना न सुना जाय, ऐसा सम्भव नहीं। नन्हा तोक एक कमलका पत्ता दौड़कर तोड़ लाया है। अब श्याम थका हो या न थका हो, उसे सुबलकी गोदमें सिर रखकर झटपट सो जाना चाहिए। तोक जो अपने पत्तेसे उसे वायु करना चाहता है।

इतने उलाहना देनेवाले और अकेले श्यामसुन्दर। सब कहते हैं तो थका कैसे नहीं है वह? अब उसे तमालके नीचे विश्राम तो करना ही पड़ेगा।

५७-स्नेहाश्रय

'दादा, तू बुला इन सबको।' कन्हाई हँस रहा है। उसे बनके ये नन्हें जीव सदा घेरे ही रहते हैं। शशक उसके चरणोंको अपनी लाल-लाल कोमल जिह्वासे चाट लिया करते हैं बार-बार। गिलहरियाँ उनसे भी अधिक धृष्ट हैं। वे श्यामके अङ्कको ही अपनी शय्या बनाना चाहती हैं। पक्षियोंका समुदाय पृथक् फुदकता-उड़ता रहता है। उसके चारों ओर मृग बछड़ोंके समान इसे बार-बार सूँघते रहना चाहते हैं।

'तू एक बच्चा लेगा कृष्णमृगका?' दाऊ बड़े स्नेहसे एक मृगीको दूर्वा खिला रहा है। मृगीका नवजात शिशु दाऊके पास उससे सटकर बैठ गया है।

'मैं इसे घर ले चलूँगा।' श्यामसुन्दरने मुड़कर देखा बड़े भाईके पास बैठे मृगशावकको। सचमुच बहुत सुन्दर बच्चा है। दौड़ आया कन्हाई और गोदमें भर लिया उसने उस शावकको।

'इसकी माँ भी चलेगी।' दाऊने मृगीको पुचकारा।

'मैं इसे भी ले चलूँगा।' श्यामके लिए यह कोई नयी बात नहीं है। ढेरों वनपशु उसको घेरे नित्य गोष्ठमें पहुँचते हैं। दो-चार वह स्वयं भी ले जाता है तो सौ पचास अपने-आप भाग चले चलते हैं साथ-साथ।

'कनूँ, यह कोई गाय का बछड़ा नहीं है, तू इसे बाँधेगा तो रोयेगा यह।' माता रोहिणी मना लेती है मोहनको। कोई रोये, यह कृष्णचन्द्र सह नहीं सकता। वनपशु या

तो घड़ी-दो-घड़ी गोष्ठमें खेल-कूद करके वनमें लौट आते हैं या फिर नन्दभवनके प्राङ्गणमें, गोष्ठमें या द्वारपर बैठकर रात्रि-विश्राम करते हैं वे। प्रात: कन्हाईके साथ ही वे वनमें लौटते हैं।

'कनूँ! देख, वह बँदरिया आ रही है अपना बच्चा लेकर। तू उसके बच्चेको नहीं ले चलेगा?' दाऊ परिहास कर रहा है।

'नहीं दादा, तू उसे भगा दे। वह मुझे दाँत दिखाती है और खों-खों करती है।' कृष्ण पहले ही मुँह बनाकर उसे चिढ़ाने लगा है।

दाऊ किसे भगा दे? बँदरिया श्यामके समीप आ गई है। मयूर इस नवजलधर सुन्दरको घेरकर नृत्य कर रहे हैं। पक्षी इसके चारों ओर चहक रहे हैं। शशक इसके चरणोंमें लोट-पोट हो रहे हैं। गिलहरियाँ बार-बार इसका पीतपट खींचती हैं और पीठ फुलाकर पूँछ हिलाकर चीं-चीं करती हैं। मृग इसे अपलक देखते हैं। वह सबका—प्राणिमात्रका स्नेहाश्रय दाऊका छोटा भाई।

'तू सबको ले चल।' दाऊ श्यामके पाससे जीवोंको भगा दे, यह कैसे शक्य है। वह तो अपने छोटे भाईके पास सबको पहुँचाता ही है।

५८-बाल-विनोद

'भद्र है!' किसीने वृक्षमूलमें चुपचाप बैठे दाऊके नेत्र पीछेसे आकर बंद कर लिये हैं। कौन होगा यह? यह युग-युगका परिचित स्पर्श—किंतु नेत्र बंद करनेवाला प्रसन्न हो रहा होगा। उसके नेत्र खिल रहे होंगे। झटपट नाम बता देना कुछ अच्छी बात नहीं है।

'तोक, मेरे नेत्र छोड़ दे।' दाऊने दूसरा नाम लिया। वैसे तोककी नन्हीं हथेलियाँ उसके दीर्घ दृगोंको ढक लेंगी, यह सोचना ही कठिन है।

'सुबल, श्रीदाम, ऋषभ, अर्जुन...' एकके बाद दूसरा नाम लिया जा रहा है। नेत्र बंद करनेवाला बोलता नहीं, हँसता भी नहीं। वह पीठसे चिपका पीछे छिपा है।

'हौआ है!' अब दाऊ हँसते हुए बोला और नेत्रोंपर धरे दोनों कर पकड़ लिए उसने।

'दादा नहीं बता सका।' कन्हाई खिलखिलाता, ताली बजाता, नाचता-कूदता सामने आ गया। 'तू नहीं बता सका न?'

'मैं तो नहीं बता सका।' दाऊके अधरोंपर भी स्मित है। 'अब तू मेरी बड़ी अँगुली बता।'

पुष्पित कदम्बके नीचे पालथी मारे दाऊ बैठा है। उसने दाहिने हाथकी अँगुलियोंको बायें हाथकी मुट्ठीसे छिपा रखा है। नखोंकी तनिक-तनिक नोक और अँगुलियोंके लाल-लाल रक्तकी बूँदों जैसे अग्रभाग—अब इसमें तो सब अँगुलियाँ एक-जैसी हो रही हैं। पता नहीं, कहाँ छिपी है बड़ी अँगुली।

कुछ बालक खड़े-खड़े झुककर देख रहे हैं, कुछ घुटनोंके बल उझककर और कुछ एक दूसरेका सहारा लेकर।

कृष्णचन्द्र अपने बड़े भाईके सामने एकदम सटकर उकड़ूँ बैठा है। उसके शरीरका कुछ बोझा भी दाऊके घुटनोंपर ही है। मयूर-पिच्छ लहरा रहा है, अलकें हिल रही हैं, कानोंके पुष्पगुच्छ कपोलपालीपर स्थिर हो रहे हैं। मस्तक झुकाये, दोनों हाथसे दाऊकी मुट्ठी पकड़े वह ध्यानसे बड़ी अँगुलीकी खोजमें है।

'तू छोड़ दे!' एक अँगुली अपनी तर्जनी और अँगूठेसे मोहनने पकड़ ली है।

'अरे, यह तो तर्जनी है।' मुट्ठी खुलते ही सब-के-सब हँस पड़े हैं और यह कन्हाई भी हँसते-हँसते भाईकी गोदमें ही लोट-पोट हो रहा है। तर्जनी झटकेसे छोड़कर मध्यमा पकड़ ली इसने और अपनी चतुरतापर अब स्वयं मगन हो रहा है।

५९-चंचल

'श्याम, तू बड़ा चंचल है रे!' माता रोहिणीने किसी प्रकार कन्हाईका एक हाथ पकड़ा।

श्रीकृष्णचन्द्र पूरा दिन वनमें बिताकर लौटा है। सखा अपने गोष्ठोंमें गौएँ बाँधने गये हैं। उनके आनेके पहले मोहनको स्नान करा देना है। वस्त्र बदल देने हैं। सखाओंके आनेके पश्चात् यह सब होनेसे रहा। फिर तो यह उनके साथ धूम

करनेमें लग जायगा। वे बालक आते ही होंगे और यह चपल कभी द्वारतक भाग जाता है, कभी किसी वस्तुको उलटता-पुलटता है और कभी कुछ करने लगता है। माता स्नान कराना चाहती है, किंतु यह बार-बार भाग जाता है।

'नहीं माँ, चंचल तो दाऊ दादा है!' श्यामसुन्दरने दूसरे हाथसे अपने बड़े भाईकी ओर संकेत किया। 'मैं तो खेलता हूँ, कूदता हूँ और दौड़ता भी हूँ। मैं चंचल कहाँ हूँ माँ?'

'दाऊ क्या चंचलता करता है?' माता जानती हैं कि उनके इस नन्हें कृष्णके शब्दकोषमें शब्दोंके ऐसे-ऐसे अर्थ हैं, जिन्हें कोई ऋषि-मुनि भी नहीं जानता होगा।

'दाऊ दादा तो बहुत कम खेलता है।' कन्हाईने फिर बड़े भाईकी ओर देखा। 'वह जो बड़ा भारी भाण्डीरवट है न, इतना बड़ा' अपनी दोनों नन्हीं भुजाएँ श्रीकृष्णने फैला दीं, मानो भाण्डीरवटकी पूरी विस्तृति हो गयी इतनेमें। माता अधरोंमें मुस्कराकर रह गयी।

'यह दाऊ दादा उसके नीचे जड़से सटकर गुमसुम देवता-जैसा बैठ जाता है।' श्यामने माताके मुखकी ओर देखकर कहा-'देख माँ, इस प्रकार देवता-सा बैठ जाता है दादा!'

कन्हाई भूमिपर वहीं बैठ गया। उसने अपनी बायीं जाँघपर दाहिना चरणतल रख लिया। पीठ सीधी करके नेत्र अधमुँदे कर लिये।

श्रीब्रजराजका प्राङ्गण, समीपमें रंग-बिरंगी साड़ी पहिने वात्सल्यमूर्ति माता रोहिणी और एक ओर श्रीबलराम। कन्हाई अपने अग्रजका अनुकरण कर रहा है। कटिमें पीताम्बरकी कछनी, कण्ठमें कौस्तुभ, वक्षपर वनमालाकी ओटसे झाँकता-सा श्रीवत्स। पटुका कहीं गिरा दिया है इसने। धूलिधूसर अलकोंसे घिरा सुन्दर मुख, अर्धोन्मीलित विशाल नेत्र, वाम जानुपर लाल-लाल चरणतल, घुटनोंपर पड़े पाणिपद्म, सीधा शरीर और ध्यानकी विचित्र मुद्रा। गोरज-मण्डित मृदुल श्याम अङ्गकी यह शोभा--विभूतिभूषित कोई योगीश्वर भी इस छटाके चिन्तनसे कृतार्थ हो सकता है।

'कनूँ, क्या कर रहा है तू?' मैया यशोदा प्रतीक्षा कर रही थी कि उसका कन्हाई स्नान करके कलेऊ करने आता होगा और यह तो अभी यहाँ योगिराज बना बैठा है।

'मैं कह रहा था, दाऊ दादा चंचल है!' श्याम झटपट उठकर मैयाके पास पहुँच गया। कौन चंचलताकी इस परिभाषाको अस्वीकार कर सकता है?

६०-ऊँघ

'राम, दूध पी ले, बेटा! तू दूध पी तो श्याम भी पीयेगा।' माता रोहिणी अपने आगे बैठाये हैं अपने स्वर्णगौर कुमारको। दाऊ दोनों चरण आधे मोड़े बैठ गया है और उसके दोनों हाथ भी दूधके कटोरेपर हैं, किंतु नेत्र बंद हैं। अलकें बिखरी हैं मुखपर। वह अधर कटोरेपर लगाकर भी ऊँघ रहा है। माता अपने हाथसे कटोरा सम्हाले है और बार-बार स्नेहपूर्वक दूध पी लेनेके लिये कह रही है।

'दूध पी तो श्याम भी पीयेगा।' नींदमें वेगमें भी दाऊ जैसे कुछ-न-कुछ समझ लेता है इस बातको। उसके अधर हिल जाते हैं। बहुत छोटे दो-एक घूँट लेकर वह फिर ऊँघने लगता है।

'लाल, तू नहीं पीयेगा तो तेरा दादा भी भूखा रह जायगा।' मैया यशोदाके पास भी यही एक मन्त्र है। उसकी गोदमें यह आधा लेटा, दोनों चरण फैलाये जो नीलसुन्दर है, वह दाऊकी भाँति शांत तो है नहीं। कटोरा पकड़ना तो दूर, मुखके पास कटोरा ले जानेपर यह अपने हाथसे उसे हटा देने, दूध फैला देनेका प्रयत्न नींदमें भी करता है। मैया एक हाथमें कटोरा लिये है और दूसरेसे इसे सम्हाले हैं। बड़ा भाई इसके दूध न पीनेसे भूखा सो जायगा, इस नामपर इसके भी अधर दो-चार बूँद दूध भीतर ले लेते हैं।

'दोनों दिनभर गायों के पीछे वन-वन भटकते हैं। बालकोंके साथ धूम मचाते रहते हैं। थक जाते हैं बहुत अधिक।' माता रोहिणीके नेत्र भर आये हैं। वे दाहिने हाथमें कटोरा सम्हाले हुए बायें हाथको बढ़ाकर मैयाकी गोदमें लेटे श्यामसुन्दरके फैले हुए चरण बहुत धीरे-धीरे दबाने लगी हैं।

'कितना मना करती हूँ, पर दोमेंसे एक भी नहीं मानता।' मैयाके नेत्रोंमें अपार वात्सल्य है। अब ये दोनोंही सो गये हैं। कटोरेका पूरा दूध तो जगते रहते भी कभी पीया नहीं इन्होंने, पर दो घूँट भी पी लें तो माताओंको संतोष हो जाय। दिनभर थकते हैं, दूध भी नहीं पीयेंगे तो दुबले हो ही जायेंगे।

'पी ले लाल! पी ले, बेटा।' दोनों माताएँ बार-बार आग्रह कर रही हैं। ये दोनों ही पूरी ऊँघमें हैं। यदा-कदा ही हिलते हैं इनके अधर। बहुत थोड़ी बूँदे कण्ठसे नीचे उतर पाती हैं।

पास-पास आमने-सामने बैठी हैं दोनों माताएँ। माता रोहिणीके सामने नेत्र बंद किये बैठा दाऊ और मैया यशोदाकी गोदमें लेटा कन्हाई। बंद हैं दोनोंके विशाल दृग्। बिखरी हैं इनके चन्द्रमुखपर अलकें। दीपकके प्रकाशमें दूधसने इनके अधरों की अपूर्व छटा है। चिबुकतक आ गई है दूधकी रेखा। इन दोनोंकी यह ऊँघ--पर कहीं किसी भी जागरणमें क्या इतना सौन्दर्य सम्भव है?

६१-मल्लयुद्ध

'दादा, मैं तुझसे लड़ूँगा।' श्यामके लिये यह नयी बात नहीं है। श्रीदाम, भद्र, सुबल आदि उसे प्राय: पटकनी दे देते हैं। सखाओंसे द्वन्द्व करके तो हारनेमें और हारकर भी अपनेको विजयी तथा जयीको पराजित बताकर चिढ़ानें में आनन्द है। द्वन्द्वमें जीतता तो कन्हाई दाऊसे ही है। वैसे वह भी समझता है कि तोकको जैसे सब जयी बना देते हैं, वैसी ही जय उसकी भी है।

'अच्छा आ।' दाऊ जानता है कि उसके इस सुकुमार छोटे भाईको दूसरे मल्लक्रीड़ामें बहुत थका देते हैं।

पटुके उतारकर दोनोंने एकत्र रख दिये। उनके ऊपर ही रख दीं मालाएँ, वेत्र, शृंङ्ग और मुरली। अलकें समेटकर बाँध लीं। कछनी कसकर पूरी कछनी कर ली गयी। अब दोनोंने ताल ठोंकी।

श्रीयमुनाजीकी सुकोमल बालुकापर बालकोंकी क्रीड़ा चल रही है। दौड़कर एक दूसरेको छूना, कूदना, वृषभ बनकर सिरसे टक्कर लेना—सब विभिन्न खेलोंमें लगे हैं। उनके मध्य ये राम-श्याम मल्लयुद्ध कर रहे हैं।

कन्हाई चिड़ियाक भाँति फुदकता है और मछली-सा चिकतना तो है ही। वह इधर से उधर कूदता है। दाऊ जान-बूझकर उसे बार-बार सरक जाने देता है।

राम और श्याम—इन्दीवर और स्वर्णकमलकी परस्पर गुंथी यह जोड़ी। दोनोंके मुख किंचित् लाल हो रहे हैं। दाऊ छोटे भाईको प्रोत्साहित कर रहा है और श्याम प्रयत्न कर रहा है—बल लगा रहा है।

'दादा तो गिर गया।' श्यामसुन्दर ताली बजाकर हँसा।

'अभी तूने चित कहाँ किया?' दोनों घुटने मोड़े, दोनों हाथ सिरसे आगे किये दाऊ रेतपर स्थिर पड़ा है-'चित कर।'

कन्हाई अब फिर जुट गया है। बड़े भाईकी पीठपर लेटकर कभी उसका हाथ खींचता है, कभी पैर। कभी एक ओर झुकता है और कभी दूसरी ओर। अब उसके भालपर स्वेद-सीकर चमकने लगे हैं।

'दादा उठ तू।' कृष्णचन्द्रने दाऊको चित कर दिया और बहुत प्रसन्न हुआ। अपने दादाके ऊपर चढ़कर वह बैठ नहीं सकता। दाऊ तो चित होकर चुपचाप पड़ गया है। वह जैसे विश्राम कर रहा है। कन्हाई उसके दाहिनी ओर पेटके पास सटकर बैठा है और मुट्ठी-मुट्ठी रेत उसके पेट तथा छातीपर डालकर कभी-कभी मल देता है।

धूलि-धूसर ये गौर-श्याम अङ्ग, यह मल्लयुद्धके पश्चात् अलस भाव—वायु अपने कोमल करोंसे इनका स्वेद सुखानेमें लग गया है।

६२-भोला श्याम

'कनूँ, तेरा पटुका कहाँ गया?' दाऊने देखा कि उसके छोटे भाईके कंधेपर पीतपट नहीं है। यह कन्हाईकी कोई नयी बात नहीं। एक मुरलिका तो इसे प्राणोंसे प्यारी है। उसे फेंटमें खोंसे रहेगा, हाथमें लिये रहेगा, काँखमें दबाये रहेगा। सोते समय भी उसे पासमें सम्हालकर रखेगा। किंतु दूसरी सब वस्तुएँ-पटुका, वेत्र, शृंग, माला आदि जहाँ चाहे वहाँ डाल देगा और भूल जायगा। दाऊको ही इसकी वस्तुओंका ध्यान रखना पड़ता है।

'हूँ!' श्यामने अपने वक्षकी ओर देखा। इसे अबतक यही पता नहीं कि पटुका कंधेपर नहीं है। फिर दोनों हाथ थोड़े फैलाकर एक बार बड़े भाईकी ओर देखकर वह ऐसे हँस पड़ा-'अरे, वह तो खो गया।'

'सुबल, तूने चुराया है क्या?' कृष्णचन्द्र जानता है कि यही बात श्रीदामसे कहनेपर वह झगड़ने लगेगा।

'मैं क्यों छिपाने लगा।' सुबल ने तटस्थ उत्तर दे दिया।

'कोई मुस्कराता नहीं, कोई हँसता नहीं, कोई नेत्र मटकाकर दूसरेसे संकेत नहीं करता। तब पटुका क्या हुआ?' श्यामने सखाओंके मुखकी ओर घूमकर देखा, किंतु उसे शङ्का करनेका कोई चिह्न नहीं मिला।

'कनूँ, मैं बताऊँ?' तोकने आकर हाथ पकड़ लिया और उत्तरकी अपेक्षा किये बिना बताया उसने-'तेरा पटुका धर्मने लिया है। वह रहा वह!'

'अरे, हाँ।' दोनों हाथोंसे ताली बजाकर प्रसन्नतासे श्यामसुन्दर कूद पड़ा और दौड़ा। अपने सफेद बड़े वृषभकी पीठपर पटुका रखकर खेलमें लग गया था, यह उसे भूल ही गया। धर्म अब उठ खड़ा हुआ है। वह पीठपर पटुका लिये चरनेमें लग गया है। उत्तुङ्ग उज्ज्वल वृषभकी पीठपर श्यामका स्वर्णिम पीतपट। श्यामसुन्दर दौड़ रहा है-दौड़ा जा रहा है!

पटुका उतारकर कंधेपर रखकर मोहन फिर दौड़ा आया और बड़े भाईके आगे आकर खड़ा हो गया।

सघन पुष्पित वनोंमें थोड़ी दूरपर गायें चर रही हैं। तमालके नीचे एक शिलापर नीलाम्बरधारी दाऊ बैठा है। उसके आस पास गोपकुमार खड़े तथा बैठे हैं। उसके सामने आकर यह खड़ा हो गया उसका छोटा भाई।

दौड़नेसे भालपर स्वेद-बिन्दु झलमला आये हैं। कमलमुख अरुणाभ हो उठा है। बहुत प्रसन्न है मोहन-दोनों हाथोंसे पटुकेके दोनों छोर कुछ उठाये। मानो उसके नेत्र कह रहे हैं-'दादा, यह रहा मेरा पटुका। देख, मैं ढूँढ़ लाया।'

६३-मानद

'श्याम, मैं हार गया।' श्रीदाम इस कन्हैयाके समान झंझटी नहीं है। बार-बार खेलमें वह जीतता है, एक बार हार ही गया तो क्या हुआ? उसे अपनी हार छिपानी नहीं है।

'कनूँ, मैं हार गया क्या?' यह तोक भी कूदता हुआ निर्णय लेने आ पहुँचा है।

'तू भी कहीं हारता है? तू तो जीत गया है।' सच्ची बात है, तोक कभी हारता नहीं। वह चाहे जिस पक्षमें रहे, पक्ष हारे या जीते, तोक तो जीतेगा ही। नन्हें तोकको भला पराजित कौन कह सकता है। उसे तो सभी अपनी पीठपर ढो देना चाहते हैं।

'नहीं, मैं हारूँगा!' आज तोकको दूसरी धुन है। वह हारका रस लेना चाहता है।

'तू किसको ढोयेगा?' श्याम हँस पड़ा।

'दाऊको, वृषभको, श्रीदामको, विशालको--सबको।' उमंगमें तोक एक स्वरसे सब बड़े तगड़े बालकोंके नाम गिना गया।

'तब इस श्रीदामको पहले ढो।' कन्हाईने परिहास किया।

'दाम! आ बैठ तू मेरी पीठपर।' तोक हाथ और घुटनोंके बल लेट गया झटपट।

'मैं तो हार गया हूँ।' श्रीदामके नेत्रोंमें पराजयका खेद है। वैसे इस तोकको वह अनेक बार ढो चुका है। तोकको ढोनेमें हार-जीत क्या? वह जिसकी पीठपर बैठना चाहे, वही हँसकर अपने-को हारा मान लेगा और ढोयेगा उसे।

'तुझे गिनना भी नहीं आता। अभी तो खेलका एक दावँ बाकी ही है।' श्याम हार जाय तो श्रीदामसे झगड़ लेगा कि नहीं हारा है, दावँ देनेसे भाग खड़ा होगा, किंतु किसी सखाके नेत्रमें खेदकी रेखा उससे सही नहीं जा सकती।

'क्या एक दावँ बाकी है?' श्रीदाम चौंका। उसने गिनती तो ठीक की है, किंतु कहीं भूल गया होगा। उसके नेत्रोंमें उल्लास आया! अब इस अन्तिम दावँमें कौन हारेगा, यह भी क्या पूछना है।

'दादा, तू बैठ मेरी पीठपर! मैं तुझे गिराऊँगा नहीं।' तोक अब दाऊसे आग्रह कर रहा है।

'चल, तुझे ऐसा पटकता हूँ कि तू भी समझेगा।' श्याम श्रीदामको खिझा रहा है।

श्याम और तोक दोनों नीलसुन्दर, दोनों पीताम्बर-परिधान, दोनों घुटनों और हाथके बल भूमिपर। श्यामकी पीठपर श्रीदाम और तोक की पीठपर दाऊ। दोनों स्वर्णगौर। दोनों नीलाम्बरधारी। दोनों चल अपने पैरों रहे हैं और पीठपर बैठनेका नाटक कर रहे हैं। एक जोड़ी है-'बस, अब रहने दे।'

और उत्तर-'ना, बैठा रह तू।'

दूसरी जोड़ी है-'उतर, नहीं तो पटकता हूँ।'

ऊपरसे-'अभी चुपचाप चला चल।'

६४-छाक आयी

'दादा, दादा, छाक आ गयी!' श्यामसुन्दर प्रसन्नतासे नाच उठा है। पर्वतकी ऊँची चोटीपर यह यही देखने चढ़ा था कि छाक आ रही है या नहीं। भूख इससे दो क्षण भी सही नहीं जाती और अब इसमें छाक लानेवालियोंका क्या दोष है कि उन्हें देर होती है। बेचारियोंको नित्य वन-वन भटकना पड़ता है। ये बालक बिना पता-ठिकाना दिये कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर बछड़े हाँक लाते हैं।

'सुबल! तोक! भद्र! अरे छाक आ गयी। दौड़ आओ! दौड़ आओ सब!' श्रीकृष्ण कूदता-उछलता उतर रहा है। एक प्रपातके पास बैठे अपने बड़े भाईके पास दौड़ा आ रहा है।

'दादा, छाक आ गयी!' मोहन वर्षासे धुली शिलाको आसन बनाकर बैठ गया है दाऊके पास, किंतु यह क्या ऐसे बैठ सकता है? दो-दो क्षणपर खड़ा होता है, उचक-उचककर देखता है-'इतनी देरमें भी सब नहीं आयीं?'

'सब छाक मेरी है। है न?' अब यह भी कोई बात है। छाक तो प्राय: सबके घरोंसे आती है; पर श्यामका हठ है कि उसीकी मैयाने सब छाक भेजी है।

'सब तेरी ही है, लाल!' ये छाक लानेवाली गोपियाँ मोहनकी ओर चुपचाप देखने लगी हैं। 'अब तू अपने मित्रोंके साथ भोग लगा।'

'तुम सब बैठ जाओ!' श्यामसुन्दर पूरी सामग्री अपने सामने रखकर बैठ गया

है। अपने हाथों ही वह सबको परसेगा। यह काम छाक लानेवालियोंको कभी वह करने नहीं देता।

'तू बस नमक खा ले! यह उपहास तो चलना ही है। किसी को केवल अचार, किसीको केवल दो चावल और किसीके सामने मोदकोंका बड़ा भारी स्तूप लगाकर यह अब हँसेगा। बालक कहीं इस प्रकार भोजन करते हैं? किसके सामने क्या रखा गया, इसका प्रश्न कहाँ है। पूरे पदार्थ ही सबके सामने हैं। जिसे जहाँसे जो रुचे, उठा ले और जब कोई आधा मोदक दाँतसे काटकर शेष कन्हाई, दाऊ या किसी दूसरेके मुखमें देने लगेगा-'देख कितना स्वादिष्ट है?' भला, कौन मुख बन्द कर सकता है उस समय।

'तेरा माखन खट्टा है! सब मुझे दे दे!' यह खट्टे माखनकी पहचान आपने न सुनी हो तो इस मण्डलीमें सुन जायँ।

'दादा, देखा न-कितना मीठा दही है?' पूरा दाहिना हाथ दहीमें डुबाकर श्यामसुन्दरने थोड़ा-सा खाया और हाथ बड़े भाईके मुखकी ओर कर दिया। दाऊ अब उसकी अँगुलियाँ मुखमें लिये दहीका स्वाद ले रहा है।

'कनूँ, देखें हम!' सभी उत्सुक हैं हाथ रोककर कन्हाईकी दहीसे उज्ज्वल अँगुलियाँ चाट लेनेके लिये।

आपके मुखमें पानी नहीं आता क्या? न आये तो आप पूरे कर्मकाण्डी!

६५-आँख-मिचौनी

'दादा! मैं बताऊँ, भद्र कहाँ छिपा है?' यह कनूँ इतना भी नहीं समझता कि उसे स्वयं भी छिपना चाहिये। दाऊको नेत्र बन्द करना था। दूसरे बालकोंके साथ श्याम भी भागकर कुञ्जोंमें छिप तो गया, किंतु जब दाऊ नेत्र खोलकर इधर-उधर देखने लगा है, तब यह अपने-आप निकल पड़ा है बताने।

'तू छिप तो सही!' दाऊका यह छोटा भाई कितना भोला है।

'अच्छा, तू आँख बंद कर तो मैं उस माधवी कुञ्जमें छिप जाऊँ।' यह अच्छी रही। छिपनेवाला पहले बताये दे रहा है कि कहाँ छिपेगा। श्याम न भी बताये तो

भी क्या होता है। वह छिप कहाँ सकता है। जहाँ वह छिपेगा, मयूर घूम-फिरकर वहीं नाचेंगे भौंरे वहीं मँडरायेंगे, बंदर वहीं उछल-कूद करेंगे और बछड़े वहीं दौड़-दौड़ जायेंगे। फिर अपनी अंग-कान्तिको कृष्णचन्द्र कहाँ छिपाये? वह छिप नहीं पाता और वही छिप रहे तो उसे ढूँढेगा कौन?

'मैं यहाँ हूँ, दादा!' श्याम पुकारता नहीं, पर कुंजमेंसे बार-बार झाँकता है, फुसफुसाता है और हाथ हिलाकर बुलाता है। उसका यह 'दादा' उसे क्यों नहीं ढूँढता? वह क्यों दूसरे बालकोंको ढूँढ रहा है? कृष्ण अब ऊब गया है! वह निकल आया है कुंजसे-'मैं नहीं छिपूँगा। तू छिप जा,' मैं ढूँढूँगा।'

'मैंने तुझे देख लिया है।' कन्हाई ढूँढेगा तो यही झगड़ा होगा। वह खेलके एक भी नियम समझता नहीं और झगड़नेको सदा उतारू रहता है। अब आज सुबलसे उलझ पड़ा है।

'तूने देख लिया तो क्या हुआ, छुआ तो नहीं।' सुबल क्यों अकारण 'चोर' बने?

'आँखसे तो छू लिया था!' अब इन दार्शनिक-सार्वभौमजीको कौन समझाये कि खेलमें आँखसे देखना स्पर्श नहीं माना जा सकता।

'हाथसे तो हाथ नहीं छुआ था!' सुबल हँस पड़ा।

'ले, अब छू लिया।' कन्हाईने हाथ पकड़ लिया उसका।

'अब छूनेसे क्या होता है?' बात तो ठीक है, पर जब यह नटखट माने। यह तो सदा ऐसे ही झगड़ता है।

'होता क्यों नहीं?' किसमें इतनी बुद्धि है जो इन देवताको समझा सके।

'सुबल! कनूँके बदले मैं दाँव दूँगा।' दाऊ छोटे भाईका झगड़ा निबटाने प्रायः आगे आ जाता है।

'ना, मैंने इसे छू लिया है।' मोहन तो अपना हठ ही करेगा।

'अच्छा, मैं सुबलके बदले दावँ देता हूँ।' दाऊ विवाद को समाप्त करना चाहता है।

'आँख तो मैं बंद करूँगा। मैं ढूँढूगा सबको। तू छिप जा!' कृष्णचन्द्र अब बड़े भाईका हाथ पकड़कर उसे छिपनेको कह रहा है। यह सदाका ढूँढनेवाला-ढूँढनेमें ही आनन्द आता है इसे।

६६-आँधी आयी

'हम्मा।' गायोंने कान खड़े कर लिये हैं। चरना बंद करके वे स्वयं एकत्र हो गयी हैं झुंड-की-झुंड और अब लगता है कि गोष्ठको भागनेवाली ही हैं।

'कनूँ!' देख,आँधी आ रही है। कपि इधर-उधर छिपने लगे हैं। पक्षी उड़ते हैं आकुल-से और चीलें ऊपर—खूब ऊपर मण्डल बनाकर चक्कर काटने लगी हैं। गोपकुमार ठीक ही तो कहते हैं कि आँधी आ रही है। दिशाएँ धूमिल हो रही हैं और पश्चिमी आकाशमें कपिश रंगकी घटा-सी घेरे आ रही है; किंतु कन्हाई तो नाच रहा है। यह दोनों हाथ पूरे फैलाकर गोल-गोल घूम रहा है।

'दादा, अभीसे हम घर चलेंगे?' अभी सायंकाल होनेमें देर है, परन्तु गायें और बालक तो घर जानेको प्रस्तुत होने लगे हैं।

'आँधी आ रही है। चल, हम भाग चलें।' दाऊ चाहता है कि कृष्णचन्द्र अब घर चले।

'गायोंको हाँक दो!' श्यामने सखाओंको सम्मति दे दी। जब सब चलना चाहते हैं, तब ऐसा ही सही; किंतु अभी कुछ देर और नाच लेना चाहता है वह। 'दादा, मैं तेरे साथ अभी चलता हूँ।'

'भाग, कनूँ।' अब दाऊने हाथ पकड़ा छोटे भाईका। आँधी तो आ ही गयी। वृक्ष भरपूर हिलने लगे हैं। धूल उड़ी आ रही है। गायें भागकर भी भाग नहीं पाती। वे बार-बार घूम आती हैं श्यामसुन्दरको देखने।

'दादा!' अब भागा यह कन्हाई बड़े भाईका हाथ पकड़कर। उड़ रही हैं अलकें, उड़ रहा है मयूरपिच्छ, हिल रही है वनमाला और फर्र-फर्र हो रही है कछनी। मुख नीचे किये, एक दूसरेसे सटे भागे जा रहे हैं राम-श्याम।

'अरे! हाथसे पकड़े रहनेपर भी उड़ गया पीतपट। वह गया, वह गया।'

'तू ठहर!' दाऊ झपटा, किंतु मोहन उसका हाथ कहाँ छोड़ रहा है।

'मेरा पटुका स्वर्ण-यूथिकाने ओढ़ लिया है।' अग्रजकी ओर देखकर कृष्णचन्द्र हँस पड़ा।

'यह फिर उड़ जायगा। तू इसे भी बाँध ले।' मोहन लता पर से उतारकर अपना पटुका अब दाऊकी कटिमें ही लपेट रहा है।

'वृक्षोंके नीचे नहीं जाना चाहिए।' दाऊ कह तो ठीक रहा है, पर गुफा दूर है अभी। दोनों भागे जा रहे हैं। भागे ही जा रहे हैं सिर झुकाये।

६७-अपनी धुनमें

'कनूँ! कहाँ जा रहा है तू?' यह श्याम बहुत चपल है। इसे यदि दाऊ सम्हालता न रहे तो पता नहीं क्या कब करे यह। अब स्नान करके भीगे वस्त्रों ही वनमें भागा जा रहा है। ऐसी क्या शीघ्रता है ? गायें तो सब यहीं हैं और सखा भी यही हैं। कोई विचित्र घटना भी नहीं हुई। किंतु श्यामके लिए विचित्र घटना या अद्‌भुत वस्तुओंकी क्या कमी है। इसने कोई पक्षी, कोई पशु, कोई पुष्प देख लिया और दौड़ पड़ा।

'लौट आ। पहले वस्त्र पहिन ले।' दाऊ पुकार रहा है। वह न पुकारे तो उसका छोटा भाई कितनी देरमें लौटेगा, इसका कुछ ठीक ठिकाना नहीं।

'दादा! मैं आया अभी!' भीगी अलकोंसे बूँदेंझर रही हैं। शरीर अभी पोंछा नहीं गया है। दौड़ते-दौड़ते ही पीछे मुख घुमाकर मोहनने हाथ उठाकर हँसते हुए कहा और फिर आगे दौड़ गया।

'इसे पुष्प लेनेकी इतनी शीघ्रता है।' दाऊ अपनी गीली कछनी बदल रहा है। वस्त्र बदलकर छोटे भाईके वस्त्र लेकर उसके पास ही दौड़ जाना चाहता है। कृष्णको देरतक भीगे वस्त्रोंमें नहीं रहने दिया जा सकता। दाऊको अपने वस्त्र बदलनेमें शीघ्रता करनी है।

गायें जल पीकर तटके निकट ही हरी-हरी घास चरनेमें लगी हैं। वे दूरतक फैलकर चर रही हैं। गोपकुमारोंने स्नान किया है कालिन्दी में। अब वे वस्त्र बदलने, गीले वस्त्र धोने या सुखाने तथा अपने लकुट, शृङ्ग, छीके आदि सम्हालनेमें लगे हैं।

'तू वस्त्र बदल पहले!' श्यामसुन्दर दौड़ा-दौड़ा आया है वनसे लौटकर। वह कदम्बके कई बड़े-बड़े सुन्दर पुष्प, यूथिकाके पुष्पगुच्छ और कनेरके लाल लाल फूल ले आया है। दाऊ चाहता है कि वह अपना आगे का कार्यक्रम थोड़ी देर स्थगित रखे और वस्त्र बदल ले।

'मैं अभी वस्त्र बदलता हूँ, तू तनिक खड़ा रह।' कन्हाई अपनी धुनमें है। वह सदा अपने ही धुनमें रहता है। इस समय उसे बड़े भाईका शृंगार करनेकी धुन है और बिना उसे पूरा किये उसे कछनी बदलनेको प्रस्तुत कर लेना सरल नहीं है।

गीला पीतपट कटिसे चरणोंतक चिपका हुआ है। इन्दीवर सुन्दर श्रीअङ्गकी छटा उससे झाँक रही है। भीगा हुआ है पूरा अङ्ग। अलकोंसे बिन्दु गिर रहे हैं और भाल, कपोल, कंधे, वक्षपरसे अभी जल फिसल रहा है। घनश्याम हाथोंमें पुष्प लिये अपने बड़े भाईके सम्मुख खड़ा है और उसकी किंचित् आर्द्र अलकोंमें उन्हें बड़े यत्नसे सजा रहा है।

'हो गया। ले, पहिन तू इसे।' दाऊके हाथोंमें कन्हाईका पीतपट है और उसे शीघ्रता है।

'तू तनिक रुक जा। हिल मत।' कन्हाई अपनी धुनमें है। उसे जल्दी करनेका कोई कारण ही नहीं दीखता।

६८-मनुहार

'दादा, तू आज उदास क्यों है?' श्यामसुन्दर आया और बड़े भाईका हाथ अपने हाथमें लेकर पास बैठ गया है। 'तू खेलता तो है नहीं।'

'कनूँ, तू खेल। मेरा जी खेलनेको नहीं होता।' आज दाऊ गुमसुम बैठा है। पता नहीं, किसकी व्यथाने इसे क्षुब्ध किया है आज।

'मैं नाचूँ? देखेगा तू?' मोहन देखता है कि आज हठ करनेसे कोई लाभ नहीं। कहनेसे दाऊ खेलने भी लगे तो ऐसे बेमनके खेलमें भला, क्या आनन्द आना है।

'हाँ, तू नाच।' दाऊने छोटे भाईको प्रसन्न करनेके लिए कह दिया। वैसे आज उसमें जाने क्यों उत्साह नहीं है।

'नहीं, दादा! तू आ और यहाँ बैठ।' कन्हाई थोड़ी देर ठुमुक-ठुमुक नाचता रहा। हाथ मटकाकर थिरकता रहा। किंतु दादा आज ताल नहीं देता, साथ देनेको आता नहीं और प्रशंसा भी करता है तो वह पूरे उल्लाससे पूर्ण कहाँ है? ऐसे नृत्यसे क्या लाभ? नाचना बन्द करके कृष्णचन्द्र आ गया बड़े भाईके पास और

हाथ पकड़कर उठाने लगा। एक कदम्बकी नीचे झुकी डालपर वह दाऊको बैठनेको कह रहा है।

कदम्बकी मोटी शाखा झुक आयी है भूमिसे दो हाथ ऊपरतक और उसका अगला भाग फैलकर ऊपर उठ गया है। कुछ पाटल आभा लिये अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंसे लदा है यह राज कदम्ब। अपने अनुज के आग्रहसे दाऊ दोनों हाथोंसे शाखा को पकड़कर उचककर बैठ गया उसपर।

दोनों चरण नीचे लटकाये नीलाम्बरधारी दाऊ कदम्बकी शाखापर बैठा है और उसकी दाहिनी ओर शाखासे पीठ टिकाकर, बड़े भाईकी जानुका सहारा लिये भूमिपर यह मयूरमुकुटी, पीतवसन, वनमाली श्यामसुन्दर ललित त्रिभङ्गीसे खड़ा हो गया है। फेंटमेंसे मुरली निकालकर अधरोंपर धर ली है इसने और देख रहा है बंकिम दृगोंसे बड़े भाईकी ओर।

मुरली तो प्रतिदिन बजती है, अनेक बार बजती है, किंतु मुरलीका स्वर...। आज वंशीमें आलाप नहीं है और न तान है। आज तो स्वरोंकी थिरकन है, मूर्छनाओंकी परस्पर ठेलमठेल है। आज बाँसुरीके संगीतमें नृत्य है।

झूम रहे हैं तरु, झुकी पड़ती है ललिकाएँ, पत्ता-पत्ता फड़क रहा है। गौएँ हुंकार कर रही हैं। बछड़े कूद रहे हैं, वनपशु उछल रहे हैं। मोहनके मस्तकका मयूरपिच्छ झुक-झुक पड़ता है दाऊकी ओर, और नेत्र बार-बार तिरछे हो उठते हैं। बड़े भाईकी आज मोहन मनुहार कर रहा है और दाऊ?

दाऊके भावमुग्ध दृग अपने अनुजके मुखपर स्थिर हो गये हैं। भूल गया है वह अपने आपको भी।

६९-लहालोट

धुम्! यह श्यामसुन्दर बहुत नटखट है। दबे पैर इस प्रकार आया है, जैसे बिल्ली कभी-कभी आखेट देखकर सावधनीसे चलती है। और आते ही सहसा विचित्र स्वरमें चिल्ला पड़ता है।

दाऊ आज नीमकी शीतल छायामें बैठकर वनश्री देखनेमें लगा था। गायें चर रही हैं, बालक उछल-कूद करके थक गये हैं और अब शृङ्गारके लिये कुसुम,

किसलय, गुंजादि चयन करनेमें लगकर वनमें बिखर गये हैं। मोहन दीखता नहीं, तो वह भी मयूरपिच्छ पुष्पस्तबक लेने गया होगा। दाऊ शिलापर शान्त बैठा है, बायें पैरकी पालथी मारे और खड़े दाहिने घुटनोंको दोनों भुजाओंमें पकड़े। मौलिश्री केसुमन झर रहे हैं उस पर। उसकी अलकोंमें वे नन्हें पुष्प उलझ गये हैं।

'हैं!' वृन्दावनमें तो ऐसे शब्द करनेवाला कोई पशु-पक्षी अबतक देखा नहीं गया। शब्द न सिंह-जैसा है न उलूक-जैसा। उलूककी 'घू-घूकी गूँज और सिंहकी दहाड़' दोनोंका जैसे मेल हो गया हो। इतना विचित्र शब्द और पीठके पीछे इतने निकट? दाऊ एकदमं चौंककर मुख घुमाकर देखने लगा।

दोनों हाथ पंजेके समान आगे किये, शरीर झुकाये, अपना सुन्दर मुख खोले श्यामकी यह अद्भुत छटा—दाऊ खुलकर हँस पड़ा। यह तो कनूँ है उसका। यह तो कनूँ है उसका। 'अरे!' इतना ही कहा उसने और हाथ बढ़ाया पकड़नेको।

'दादा डर गया!' कृष्णका हास्य अब रोके नहीं रुकता! वह खिलखिलाकर हँस रहा है, हिल रहा है, सिर झकझोर रहा है और साथ आये बालकोंमेंसे कभी एकको और कभी दूसरेको दोनों भुजाओंसे पकड़कर झुका पड़ता है।

'दादा डर गया!' मोहन हँसीसे लहालोट हो रहा है। उसका मुख अरुण हो रहा है! उसके विशाल नेत्रोंमें अश्रु भर आये हैं और अलकें मुखके चारों ओर अस्त-व्यस्त हो रही हैं।'

'दादा, तू डर गया न?' अपने बड़े भाईके गलेमें दोनों भुजाएँ डालकर अब यह उसकी गोदमें ही हँसीसे लोटपोट हो रहा है।

कन्हाई इतना प्रसन्न हो रहा है तो दाऊको क्या पड़ी कि प्रतिवाद करे-'मैं डरा नहीं।'

७०-सेवा

'दादा, तू सुबलकी गोदमें सिर रखकर सो जा!' कन्हाईको जब जो धुन चढ़ गयी, सो चढ़ गयी, अपनी धुन तो वह पूरी ही करेगा। अपने बड़े भाईका हाथ पकड़कर वह खींचने लगा है। स्वयं अपने हाथों इस तमालके नीचे किसलय तथा कुसुमदल बिछाकर शय्या बनायी है बड़े श्रमसे इसने। अब उस श्रमको सफल भी तो होना चाहिए।

'क्यों?' दाऊने पूछ लिया।

'तू थक गया है। देख, मैंने तेरे लिए कितनी सुन्दर शय्या बनायी है।' कितना बढ़िया तर्क है! श्यामने शय्या बनायी है! इसलिए दाऊ थक गया है।

'मैं थक गया हूँ?' दाऊ मुसकराया।

'हाँ, हाँ, तू थक गया है। भद्रसे पूछ देख।' जो थका है, उसे स्वयं पता नहीं है। उसे अब भद्रसे, सुबलसे, तोकसे या और किसीसे पूछ लेना चाहिये कि वह थका है या नहीं। किंतु इतनी खटपट क्यों की जाय? कन्हाई कहता है, यही क्या कम प्रमाण है?

'किंतु, कनूँ! मैं थका नहीं हूँ।' दाऊ अब छोटे भाईको खिझा रहा है-'मुझे थकान जान नहीं पड़ती।'

'तू थक गया है, खूब थक गया है। तुझे नहीं जान पड़ता है तो क्या हुआ!' श्याम पूरे बलसे कह रहा है। 'मैंने तेरे लिए ही तो शय्या बनायी है। चल, सो जा।'

कृष्णचन्द्रने शय्या बनायी है, वह हाथ पकड़कर आग्रहपूर्वक खींच रहा है तो दाऊको थक ही जाना चाहिए। दो घड़ीसे सखाओंके साथ मोहन शय्या बनानेमें जुटा जो रहा है।

इधर-उधर बिखरी सहस्रशः रंग-बिरंगी गायें। ये प्रायः सब चर चुकी हैं। मध्याह्नमें अब जल पीकर खड़ी या बैठी पागुर कर रही हैं। कभी-कभी पूँछ या कान हिला देती हैं।

गोपकुमार भी यत्र-तत्र मण्डली बनाकर बैठे हैं और कोई-कोई शिलापर या दूर्वापर लेट गये हैं।

तमालकी सघन छायामें हरित दूर्वापर आम्रकिसलय एवं दूसरे कोमल दलोंकी अच्छी मोटी शय्या है और उसपर नन्हें उज्ज्वल, पीत, नील, लाल सुमनों तथा पाटल-दलोंके अद्भुत चित्र बने हैं। सुबलकी गोदमें सिर रखकर नीलाम्बरधारी स्वर्णगौर दाऊ लेटा है उसपर। कमलपत्रोंसे कुछ गोपकुमार उसे व्यजन कर रहे है।

कछनी कसे कन्हाई अग्रजके चरणोंके पास बैठा है और एक चरण गोदमें रखकर धीरे-धीरे दबा रहा है। झुका है कमल मुख, झुके हैं विशाल नेत्र, झुककर चरण दबा रहा है श्याम। इस समय अग्रजकी चरण-सेवामें तन्मय है वह।

'कनूँ!' दाऊ बड़े स्नेहसे पचकार रहा है। वह चाहता है कि कन्हाई अब विश्राम करे।

'दादा, तू सोया नहीं? पहले तू सो जा!' श्यामके आग्रहकी रक्षाके लिए दाऊको नेत्र बंद कर ही लेने पड़ेंगे।

७१-भूख

'दादा! मुझे भूख लगी है।' कन्हाईकी भूख उसके उदरमें नहीं रहती, पदार्थमें रहती है। जब कोई पदार्थ और उसे प्रस्तुत करनेवाला श्यामको भोजन कराना चहाता है, मोहन भूखा हो उठता है।

'मेरे छीकेमें अभी तेरे लिए भोजन बचा है।' दाऊ अपने छोटे भाईके लिए प्रायः अपने छीकेमें कुछ-न-कुछ बचा रखता है। सखाओंके साथ भोजन करते समय श्याम स्वयं तो कुछ खाता ही नहीं। यह तो दूसरोंको खिलानेमें ही रह जाता है। अब वन-भोजन के घंटेभर पीछे ही इसे भूख लग गयी तो आश्चर्यकी क्या बात है।

'मैं बासी नहीं खाऊँगा।' कन्हाईको कब क्या रुचेगा और कब क्या नहीं रुचेगा, इसका कुछ ठिकाना नहीं। इससे कोई पूछे कि घण्टेभर पीछे वही भोजन बासी कैसे हो गया, जो घण्टेभर पूर्व ताजा लगता था?

'फल खायगा? देख, मैं मीठे-मीठे फल तोड़ लाता हूँ।' एक कंधेपर हाथ रखकर यह कनूँ कितने आग्रहसे देख रहा है। सचमुच कितना भूखा है। इसका मुख-सूख-सा रहा है। दाऊको सूझता ही नहीं कि क्या पाये और अपने अनुजको तुष्ट करे।

'फल तो भरे पेटपर खाये जाते हैं।' मोहनने मुख बिचका लिया।

'दूध पियेगा? नन्दाको पुकारूँ?' पुकारते ही नन्दा दौड़ी आयेगी और श्याम कमलपात्रका दोना लेकर उसके थनोंके नीचे बैठ जाय तो फिर नन्दाके थनोंकी धार रोकनेसे भी रुकनेवाली नहीं है।

'माँ कहती थी कच्चा दूध नहीं पीना चाहिये।' कृष्णचन्द्रने यह प्रस्ताव भी स्वीकार नहीं किया।

'तब क्या खायगा?' दाऊ व्याकुल हो उठा है।

'दही खाऊँगा! तू खायगा न?' दूरसे नूपुरों, कङ्कणोंकी झंकार आ रही है और यही है श्यामसुन्दरके भूखका रहस्य। बड़े भाईकी अनुमति चाहिये उसे और भोजनमें साथ भी।

'मुझे तो भूख नहीं है।' दाऊ हँस पड़ा।

'तब मैं भी नहीं खाऊँगा।' मुँह बनाकर श्याम बैठ गया।

'अच्छा, अच्छा! मैं खाऊँगा। तू दही माँग ला।' कन्हाईका मुख सूख रहा है। यह भूखा है। इस समय क्या उसे रूठने दिया जा सकता है।

'माँग क्यों लाऊँगा। मेरे वनमें-से दही बेचने जायँगी और मेरा भाग नहीं देंगी?' पूरे उत्साहसे श्याम खड़ा हुआ और दौड़ गया।

× × × ×

इधर-उधर गोपकुमार दही खानेमें लगे हैं। पत्थरपर, पत्तेपर, हाथपर सब शीघ्रतासे चाट रहे हैं। बंदरोंको तो जैसे निमन्त्रण मिल गया है और एक मुखसे फूटी दही भरी दहेंड़ी लिये यह दौड़ता आया कन्हाई। हाथ, पैर, शरीर-सब दहीसे उज्ज्वल हो रहे हैं। बड़े भाईके आगे वह फूटा दहीभरा पात्र रखकर बैठ गया है।

वे दूर खड़ी गोपकुमारियाँ-उनके वस्त्र फट गये हैं, आभूषण टूट गये हैं, शरीर और वस्त्रोंपर दही फैला पड़ा है; किंतु वे इतने मुग्ध भावसे क्या देख रही हैं? वे देख रही हैं भूख। पर वह कहाँ है, दाऊमें या श्याममें? श्यामतो बड़े भाईको इतने आग्रहसे अपने हाथोंसे दही खिलानेमें लगा है, जैसे भूख उसे नहीं, दाऊको ही लगी है।

७२-अभियोग

'मैया! दाऊको मार तो तू!' संध्याके समय गोचरणसे लौटा धूलिधूसर श्याम मैयाके पास दौड़ा आया और मैयाका एक हाथ पकड़कर दाऊकी ओर देखने

लगा। दाऊ चकित-से रह गये। आज अपने छोटे भाईसे उनका कोई झगड़ा तो हुआ नहीं, फिर पहुँचते ही कनूँ यह कौन-से अभियोगकी भूमिका बना रहा है?

'तुमने अपने छोटे भाईको खिझाया है?' मैया हँसती-सी दाऊसे पूछने लगी।

'नहीं मैया!' कृष्णचन्द्र बीचमें ही बोला। 'दाऊ दादा खेलते-खेलते थक गया था। मैं कहता था कि सुबलकी गोदमें सिर रखकर तमालके नीचे सो जा, मैं तेरे पाँव दबा दूँ। यह मेरी बात कभी झटपट नहीं मानता। देख, इसके चरण कितने लाल-लाल हो गये हैं। तू इसे मार, मैया!'

'हाँ, तेरे पाँव लाल तो हो गये हैं!' मैयाको और अधिक हँसी आयी। 'तू कन्हाईकी बात क्यों नहीं मान लिया करता? अच्छा ठहर!' इधर-उधर देखा मैयाने, किंतु कहीं कोई छड़ी तो पासमें दीखती नहीं। उसने बड़ी भारी मथानी उठायी, जैसे सचमुच उसे दाऊको आज पीटना ही है और सो भी इतनी भारी मोटी मथानीसे।

श्यामने मैयाका हाथ छोड़ दिया। झपटकर दोनों भुजाएँ बड़े भाईके कण्ठमें डालकर लिपट गया। मैया यदि मथनी चलाये ही तो वह स्वयं झेल लेना चाहता है।

नीलाम्बरधारी कमललोचन श्रीबलरामके कण्ठसे लिपटा यह पीतवसन नीलसुन्दर। दोनों भाइयोंके श्रीअङ्ग गोरजमण्डित। दाऊके भावभरे दीर्घ दृग्। मथानी उठाये अधरोंमें हँसती, क्रोधका नाट्य करती मैया यशोदा। श्यामके रतनारे नेत्र भर आये हैं। मुख घुमाकर मैयाकी ओर देख रहा है वह। उसके नेत्रोंमें उलहना, भय और पता नहीं क्या-क्या है।

'दादा! उठ। हम दोनों माँके पास चलेंगे।' बड़े भाईका कण्ठ छोड़कर हाथ पकड़ा उसने। 'हम दोनों माँके बेटे रहेंगे। मैयाके बेटे नहीं रहेंगे। यह तुझे मारती है।'

मैयाकी ओर रोषपूर्वक देखते, बड़े भाईका हाथ पकड़कर खींचनेका प्रयत्न करते, कृष्णचन्द्रकी यह अपूर्व छटा।

मैया ठगी-सी रह गयी अपने पुत्रकी शोभा देखकर।